।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यमदंड

साधुनिष्कुळानंदस्वामिकृत

ते

महाराजश्रीभगवतप्रसादजी

महाराजनिआज्ञाथि

गोंडळस्वदेशहितप्रकाशछापखानुं

संवत १९३० संने १८७४

१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य.
१

॥ श्रीस्वामिनारायणायनमोनमः ॥
अथयमदंडनिकथालिख्यते ॥ सोरठा ॥ मंगलरूपअनुंप ॥ समरतां सद्य
सुखमले ॥ सोसहजानंदस्वरुप ॥
जेनेंभजतांभवदुःखटले ॥ १ ॥ करवामंगलिककाज ॥ जंनमनमांजेइछाकरे ॥ तेसमरेश्रीमहाराज ॥ तोवि
घनतेनांतर्तहरे ॥ २ ॥ रावाश्रीघनशां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म॥नांमेजेनेंनिरविघनथैयें॥वजि
सरेसगलांकांम॥तेनेंतजिविजुशि
द्वैयें॥३॥ सर्वेस्करवंनासदंन॥दु
खहरणहरीदिनबंधु॥तेप्रनुथइप
संन॥सायकरजोसदास्करवसिंधु॥४
दोहा॥प्रथमप्रभुनेंप्रणमि॥करुं
कथाउचार॥यमदंडनिजेचारता॥
कहूंमतिअनुंसार॥५॥रागसामे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. री।।मंगलमूरतिमहाप्रभु।।वड्डनां
२ मिवड्डिकारज्ञा।।भक्तिधर्मस्ततभाव
सुं।।रत्नाकरदेमायेहमेत्रा।।८।।सुख
सागरसोनापति।।अतिदयासिंधु
दयाल।।सुरगाकांमसुखधांमसदा
निजभक्तवछलप्रतिपाल।।७।।ने
हप्रभुपूर्वेप्रगटया।।द्विजकुलधर्म
नेघेरुय।।नांमघनश्यांमसुंदर हरि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करीजंनपरमेस्व॥ ६॥त्यांथिप्रभु
जीपधारिया॥पूर्वेथिपश्चमदेश॥
अनेकजीवउधारिया॥आपिश्रम
लउपदेश॥७॥तेहप्रभुमल्यामुज
नें॥स्वामितेसहजानंद॥जन्ममर
णजमजातना॥जेथिछुटोछुंसर्वेफं
द॥१०॥जेहदुखनकेवायेजीनथि
॥अतिविकरछेवीपरीत॥जेजंन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंगे अवगी ॥ ते थाये अति मयमि
त ॥ ११ ॥ राद्दुःखजे नेंउपस्युं ॥ ते
सुखि नहि निरधार ॥ अल्प सुखनें-
आशरी ॥ नवि करता कोये विचार
१२ ॥ विजिका तुं बक्रसांभलि ॥ जिव
थाये राजि रलियात ॥ जन्म मरण
जमपुरी नि ॥ कोये कांनें नपुंसे वा
त ॥ १३ ॥ माटें आज्ञा मुनें करी ॥ राद्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वातविस्तारवाकाज॥कृपाकरीकयुं
हरी॥श्रीप्रुरेवंश्रीमहाराज॥१४॥कयुं
पूर्वेप्रुनेंप्रुछ्युहतुं॥पनगारियें
करीचित॥जथारथजमदंउनि॥में
कहिछेतेहनेंरित॥१५॥तेहरितकृ
दयेधरी॥तुंकेजेकरीविस्तार॥जेप्र
णिसकृपापथि॥डरीचालेनरनेंन्ना
स्य॥१६॥रामश्रीप्रुरवेंथिमेंसांभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पू. ल्नि ॥ वलिठरकस्योविचार ॥ जेंमक
४ युंतेमकरवुं ॥ फेरपाउवोनहिलगा
र्य ॥ १७ ॥ राह्दरीआज्ञाउरधरी ॥ क
उंकष्टजीवनांजेह ॥ नरनारिनिज
पापथि ॥ सहेछेदुखजेदेह ॥ १८ ॥
जन्ममरणजमजालनुं ॥ कष्ट अ-
तिघणुंछेअपार ॥ श्रवणदइसउ
सांभलो ॥ कहुंनिरयदुखनि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रधार॥१९॥ जेह्पापेंआजीवनें॥
नाखेछेनरकनेकुंड॥पापतपाशी
प्रांणीनां॥ जेदियेछेदुष्करदंड॥
२०॥ जेविविकरवारछे॥जेवाछे
जमदुतघोर॥ कर्कसंजमनिश्री
रनां॥दुखपांमेप्रभुनाचोर॥२१
॥ जेवांनर्कनाकुंडमां ॥ छेजु
जविजात्यनांह्रख ॥ तेमांप-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च॰ डिनें प्रांणियो ॥ पांमेन हिं लेज्ञास्फरव
५ ॥२२॥ सउ मल्निहवे सांभलो ॥ कर्छु
स्कंदरकथासार ॥ जे प्राणिचाजीव
नो ॥ निश्चे होये निस्सार ॥२३॥ तेतो
प्रत्यक्ष प्र भुनें पामियें ॥ कांतो तेनाम
लेल जंन मले ॥ जन्म मरण नुं दुरव
जीवनें ॥ तेहवारें तत्तरले ॥२४॥ ते
हप्र नु जुग जुग मांहि ॥ चरवंडरहेप्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनाश॥निजज्ञांनदइजीवनां॥कर
वाकल्मशनाश॥२५॥दशाचोविशाश्र्
दिश्रनंत॥नित्यनिमितजेश्रवतार
॥नरतनधरिरहेनाथजि॥करेश्रनंत
जीवउधार॥२६॥मनुंष्याकारश्रपा
रमोरा॥वलिकजीनसकेकोये॥मत्
संमथथइमनुष्यजेवा॥श्रीहरिव
रनेसोये॥२७॥श्रनंतब्रह्मांजेना

For Private And Personal Use Only

रोममां ॥ उंडेछे अणुनेगांम ॥ कोण
लियेतेनापारनें ॥ मनवांणिपां मे
छेविरांम ॥ २८ ॥ सां मृष्यजोतांसङ्कु
नेंसरे ॥ पारजोतांसङ्कनेपार ॥ मो
टपणोमोराअति ॥ तेह्हरीधरेअव
तार ॥ २९ ॥ दुर्लभतेसुलभथई ॥
थई अगमस्कगमस्वरूप ॥ अगो
चरतेगोचरथई ॥ करेजीवने-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

रूपाअनुप॥ २०॥ वलिविशेषेदयाक
री॥ वचननिबांधेप्राज॥ मंदवैरागेस्य छे
गेमांनवि॥ तारवातेहनेंकाज॥ २१॥ व
चनमानेजेमहाराजनुं॥ निश्चेकरीन
रनार॥ तेजायेहरीधांममां॥ पांमेते- ना
स्करवअयार॥ २२॥ सुखसुखस्करवअ
ति॥ नहिदुखनोलवलेश॥ जेधांममां
जांणजो॥ नेकालमायानो कलेश
२

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥२३॥ अखंडआनंदअतिघणुं॥
जेकेतांपणकेवाएनई॥तेभोगवेछे
भक्तहरीना॥वाळानेवचनेंरह॥२४
वचनवडेसुखिसह॥तेहनांतेक
ह्रंणधांण॥भवब्रह्माविष्णुवळि॥
जेवडेआअष्टिमंडांण॥२५॥अज
उपावेविष्णुपाळेवळि॥अनेशिवक
रेसंहार॥तांनवचनपरतेह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नुं॥नहिविजोउरविचार॥३६॥स्क
रसन्निसिंधुसेषजे॥श्रणिवचन
नेंएकवार॥सदायरहेमनउरता॥
नव्यपाडेफेरजगार॥३७॥काल
कंपेजेनिबिकथी॥इंद्रआदिसर्वे
अमर॥लोपतांजेशवचंननें॥स
उकंपेछेथर॥३८॥मोटाराममनमां थर
उरि॥सदावर्तेंछे वचनमांइ॥

For Private And Personal Use Only

प. संमृथजांणिश्रीहरी ॥ फेरपडुवान
६ दियेकांइ ॥ ३९॥ मंदनजांणेधर्मने
॥ जोपेछेवचनलवाड ॥ कृतघ्नि
नरकजुधि ॥ पापिजेपापनापाड॥
४०॥ प्रभुविमुखजेपापिया ॥ न
मांनेनाथवचंन ॥ तेहजायेज-
मपुरियें ॥ कहुंरीतश्रंगणोसत्रजं-
न ॥ ४१॥ अजपवुद्धितेपणउंधि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ रुधिवातसमळेनहि ॥सदा
हेतकारिश्रीहरी ॥ ओरितेनेंस-
मज्योनहि॥४२॥ अतिअकोंशो
नज्यावोंणो॥घरवगोंणोगणियें
॥धर्महेतुधनुधरहरी॥ वरत्योम
तिआपणियें॥४३॥जोनेंहरीद
यालुरखना॥करताअनेकरानेंगुं
ण॥तेजीवेंकेजांणयोनहि ॥अति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होयहरांमिलुंग ॥ ४४ ॥ जोनेघ
णुंदुखगर्भवासमां॥तियांकरिह
रियेंएनिसाये ॥ पलपलनिपि
डाहरी॥ तेनोपाउनमांन्योकांये ॥
४५॥ उदरमांदुखअतिघणुं ॥के
तांतेनोनआवेपार ॥ वेदनामां
व्याकुलथई ॥ करतोप्रभुनेजे
पोकार ॥४६॥ अतिदिनदुखि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यो हूतो ॥ पिउ पां म्यो त्यां वङ्कुं पेरू ॥
रा हू दुख मां थिक्का दियो ॥ हरी करी मो
टि मे सु ॥ ४७ ॥ ने वेला तुं ने विसरी ॥
ज्यां रह्या त्यो उदर थि बार ॥ सत्य कडुं
मडु सांभलो ॥ उदर दुख अपार ॥ ४८
सर्वे त्रां करसां भल्यां ॥ जीव भोग वेछे
जेह ॥ उदरना दुखथागल्ये वलि न
थिगणातां नेह ॥ ४९ ॥ डुख डुख डः

For Private And Personal Use Only

प. रवजीयां॥नहिंकरवनोलवजेरा॥
१० मासनवरूधीजीवनें॥हेरांगगतिः
मेरा॥५०॥तेकष्टुंकपीलजीयेंमातनें
॥गर्भवासनुंदुखहंद॥तेसंभलावुंम
ठुनें॥एमकहेनिकुलानंद॥कउवुं
२॥पूर्वह्रांयी॥जेरियेंआजीवनें॥वि
तेछेवसमिवात॥गहनगतिगर्भवास
नि॥तेकहुं करीविस्तार॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१॥ मोरे मुनियें मनिकस्यो॥ सर्वे न-
र्कनो निरधार॥ तेथि अधिक दुख उ
द्रे॥ जेनो केतां तेना वे पार॥ २॥ जो
गी जति तप सिद्ध रूषी॥ जे जे मोटा के
वाये॥ एह दुखनें सांभलि॥ सउ कंपे
छे मनमांये॥ ३॥ देवदांनव मुनि मां
नवि करवें वेगा करें छे विलास॥ ज-
न्ममरण दुखज्यां लगी॥ नथि सांभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रतोगर्भवास॥४॥ सुपरूअनुपमरा
जनें॥ वलिभोगवेछेभलिभात्य॥ते
पणकंपेछेतंनमां॥ छुणिगर्भवासनि
वात॥५॥ गौरांकोरडीमागश्री॥ते
मांरंधिरसवेदिनरेण॥ पराउदरसं
मरकेनहि॥ सत्रसमफोपरवेण॥
६॥ चोपाई॥ उदरमांजेअतिघणुंदु
ख॥ नवमाससुधिनइंकस्ख॥ उधंशि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षेलनरकावेंलनई ॥ तियांदुरवतणो
तैयारनई ॥ ७ ॥ तपेजगरातापञ्च- ना
पार ॥ वलेदेहनेंकरेपोकार दाऊ
देहअतिअकुलाये ॥ कोंमलतनें
तेकेमसोवाये ॥ ८ ॥ तेहतापेतरफ
डे पाणि ॥ जाणुंपारांआदेहनि
हांणी ॥ नर्कसाडयीनरसुंरेकां
णुं ॥ णथिविजुरूंडुभुंडुंवखांणुं

For Private And Personal Use Only

प॰ ॥९॥ अनअअनआहारनीरस

१२ ॥ एहमुखमांआवेअवस ॥ प

रुपाचनेंरुधीरपिवुं ॥ मलमुतर

मध्येतेरेवुं ॥ १०॥ उंनुंटावुंकोये

लुंकसायुं ॥ जेजेअन्नजनुंनी

पखायुं ॥ तेनेंपरसेपिरायेछे

तंन ॥ एहदुखेंदुखीरातदंन

॥ ११ ॥ खाकुंखाटुंकडवुंवलेल

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सउनुवगउनुंअन्नउतरेल्न॥एवुंजमे
जनुनिजेवार॥जागेगर्भनेअंगें
अंगार॥१२॥मर्चुमरीअजमोनेराई
॥स्कवसंचजक्रियातुंकेवाय॥एवुंए
वुंमाताजारेजंमे॥तेनुंदुखबाजक
नेंदंमे॥१३॥कातुंकोरुंन्तुखुदुखका
रि॥खायेपेटभरिनेंमेंतारि॥उनुंटा
ढुंपियेपांणीजारे॥अतिपिडायछे

५

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कालकतारे॥१४॥कोपकखायछेल
सणुंगलि॥नखाधानुंखायछेचलि
॥तेनोरसपडेतनपर॥तेणेंसुख
नथिपलभर॥१५॥रमेभमेमाता
लडथडे॥घणुंदुखतेगर्भनेंनडे॥अ
तिअस्कचितुंजेअगार॥जीवपडी-
योतेह्मोझार॥१६॥महादुर्गंधमधें
घररेवा॥घडिएकनहिस्कखलेवा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धातुसप्तनोभस्रोभंडार ॥ रात्यदि
वसकरेराहव्यार ॥ १७ ॥ जीवजंतु
तियांवसेजोइ ॥ डसेदेहनेंपियेछे
जोइ ॥ मोटांजंतुफाडिरियांमुख ॥
रायदिवसदियेबहुदुख ॥ १८ ॥ तेनेंदु
खेंनाखावानेंजाये ॥ नाशिभागिते
कियांजवाये ॥ जेमजटकेवडेंवा
गोल्सुं ॥ एथिदुखसहेच्चणतोल्सुं ॥ १९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰
१७

वायुवडनेंबकुडोलेडात्य॥पामेदु
खवागोत्यतेमबाल॥उछेवेसेनें
चालेछेमाता॥तारेंकेमरहेस्करव
साता॥२०॥चडेजेमकोयेनरन्व
गडोल॥रात्यदिवसरहेएमरोल॥
पेस्वेपेस्वेपिडेएमदुख॥तेतोकेतां
आवेनहिमुख॥२१॥नदिशेदिशा
अतिअंधकार॥वास्येनिस

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खान सुके बार ॥ रात्य दिवस निन
पडे गम ॥ सयुं नजाय छे दुःख विषं
म ॥ २२ ॥ कठणा कष्ट नैं कायाकों म
ल ॥ जुगजेवडि विते छे पल ॥ त्राये
त्राये त्यां करे पोकार ॥ स्वामि करजो
मारि सार ॥ २३ ॥ आ दुःख थि जो अल
गो थाउं ॥ तो हे ते गुण तमारा गाउं ॥

For Private And Personal Use Only

प. सर्वेरित्येतमारिशरणं॥रङ्कहरीदुः
१६ खनाहरणं॥२४॥श्रवणेसुंणुंतमा
रिकथा॥विजुंनबोलुंमुखथिव्रथा
॥नयणेनिरखुंतमारुंरूप॥त्वचा
येंतमनेंभेटुंभुप॥२५॥करेंकरुं
तमारिसेव॥हृदेसमरुंश्रीहरीदेव
॥रसनायेंराखुंतमारुंनाम॥स्वास

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उस्वासेसंभारुंत्यांम ॥ २६॥ चरोंश
तिमारेङ्केअवुंरे॥नखशिखाअंग
एमवर्ताचुं॥कोलबोलकरुंङ्केकरा
र॥वङ्कनांमिकालोमुनेवार॥२७॥ए
मथयुंउदरमांज्ञांनतेज्ञांननादेनाराभ
गवांन॥तेथेजीवेंकरीअरदाश॥
कयुंछीजावोत्रभुगर्भवास॥२८॥द
याकरोनेंदिनदयाल॥वड़िपतित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मारुंडुवाल॥रामच्यरज्यत्रद्रमोक
रि॥तारेह्कमकिधोह्वेद्री॥२९॥
अतिद्यालुदिनवतिपाल॥आरस
वांननिलिधिसंनाल्य॥अवणोजेनें
दयानोवास॥अंगपांवचनजेनेंक
यांदास॥३०॥जेनिडुष्टिअम्रतेंभरी
॥नजोयादोषनेंदयाकरी॥वसुति
नावायुंनेंवेरी॥दालिसोडणगर्भवास

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केरी ॥२१॥ कस्यो क्रकमनें खोल्यो
द्वार ॥ आपिआहात घडीयुंबार ॥
जन्म समे करी हरीयें जतंन ॥ सधु
समुं राख्युं एनुं तंन ॥ २२॥ अतिकष्ट
मां करी रानि साय ॥ जे कष्ट सुख थिक
येन जाय ॥ जन्म तणुं छे दुख विकट
॥ जोरकठोर छे जो निसंकट ॥ २३॥
कनक तणो जेम तां एतार ॥ ते थि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प.
२५

वसमोजेवोअवतार॥जेमविजेवि
च्चुमांहेरडि॥तेथिकठणघणीएहघ
डी॥२४॥जेमनिडेसकंचेकपास॥
एथितजवोकठणगर्भवास॥अंग
भिसांणुंचंपाणुंआरे॥जारेकाढ्योउ
दरथिबारे॥२५॥तांणिपरांणपेका
ढियोबाल्य॥एवेदुःखेंथियोअवतार
॥स्वासउस्वासेंनरांणिछांति॥पांम्यो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिउ।कउनथिजाति॥२६॥श्रतिश्र
सोयोथियोश्रचेत॥श्रामोनिश्चोम
जमुवेसमेत॥खरडश्रोनरकेंसर्वे-
खारखो॥तेमांनाख्योजराकजेटलो
॥२७॥पांम्योशांतिनेंथयुंछेसुख
॥विसरीगयुंगर्भनुंदुख॥श्रामोबा
लेंनेंथयुंश्रज्ञान॥उदरमांईजेह
तुंज्ञान॥२८॥उदरमांइजेहतिश्रसा

For Private And Personal Use Only

च० ध्य॥ आव्यो वारे नें विसरिया ध्य॥ जे
१५ म भुल्यो एगो विंदना गुंण॥ ते मसारी
खामण्य आपे कोंण॥ ३९॥ जियां
णो लिधो अवतार॥ ते तो सारथि से
नरनें नास्य॥ पुत्र आव्यो जांणी पांम्यां
आनंद॥ हर्ष वधाइ करे कुलहंद॥ ४०
वाजे वधाई आनंदे भरी॥ मोटिमे सक्रस
देवे करी॥ माता कहे मुनें पाजइो॥ पिता कहे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिंस्याटालशे ॥४१॥ भाइकहेथइवि
जिबांधे ॥ कहेकुंरंबिकरशेसहाये॥
बेनकहेकरशेकंचवो ॥ फुइकरेम·
नोरथनिसेनवो ४२॥ आपस्वारथेंबांधि
रामश्रास ॥ जेमरच्चोपाराधियेंपा
श ॥ सउसउनेंआशाजुजवि ॥ तंनज
तनकरेनित्यनवि ॥४३॥ खांनपांनें
करीपोषेदेह ॥ थायेमोटोत्र्पापेस्क

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खणह ॥ एमकर्त्तो थियां वर्षपंच ॥
रमवाकारण आप्यो संच ॥ ४४ ॥
अनेक विधिशिख विश्वंन्य ॥ नशि
खमुं हरीनुं भजंन ॥ जेणे करी भुले
भगवांन ॥ एवुं समकाव्युं सर्वेज्ञान
४५ ॥ कुडकपंटनें घणी घातुं ॥ ते
निकइसमजाविवातुं ॥ छल्छे त
रदगाहयाहिण ॥ रामांकल्योडु रो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परविण ॥४६॥ पेन्वपारवंडपरध
न्यल्लेवुं ॥ अनेकरीस्येशीखव्युं रावुं॥
चोरीहिंसाकरविद्वमेश ॥ आप्योसो
वैंणवोउपदेश ॥४७॥ तिरथव्रतसा
त्वासाधुनोसंग ॥ तेसौमांधिकस्यो
मनभंग ॥ दांनपुंन्यकरियेंनहिकें
हि ॥ मलेधन्यतोलेयेंमाधुछेहि ॥
४८॥ राविशिखामरण्यसोवैंदिधि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुंटमतियेंमांनितेलिधि॥थियो
मोटोदियेबउडोटुं॥ह्रणुंह्रणुंमां
ह्सेरुवेरवोटुं॥४९॥कुदेफांदेमरे
मोटिफाल॥बियेबिवरावेबिजां
बाल॥खाधा पिधानुंनिम
नमले॥वणअरथेचिचरेसगले॥
५०॥लाभविन्यानिकरेछेलवानि
॥थियोकुलमांमोटोकवांनि॥वि

For Private And Personal Use Only

न्यासवार रथें वसावे वेर ॥ मारे जि
ण जिवन हिमेस्य ॥ ५१॥ आव्यें
आव्यें करेछे अनर्थ ॥ एमजाये
छे अनमव्यर्थ ॥ एमकरतां आ
वे जोबंन ॥ तारें त्रिपजागे थें मदा
नें धन्य ॥ ५२॥ एविन्या विजुं वासुं
नहिं कांइ ॥ एस्य दिवस एआ एह
मांइ ॥ एने आ रथें अनरथ करे ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ठंधुंअवळुंकरतांनडरे ॥ ५३
॥ मनरहेदांमवांमैंमोई ॥ एम
रहेआवरदानैंखोइ ॥ जमपुरीयें
जावानैंकाज ॥ सजेरावोसर्वेसमा
ज ॥ ५४ ॥ जेमजेमअधिकुंथायेपा
प ॥ तेमतेमराजिरहेआप ॥ जोव
नमांजोरजुलमें ॥ करेतेमजेम
मननैंगमे ॥ ५५ ॥ नरतनैंनकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाजेवुं ॥ पापिपापकरेनिस्त्रणवुं
॥ पां मिज्ञोवनकरेछेजेह ॥ क
हेनिष्कुत्नानंदकउतेह ॥ ५६ ॥ क
डवां ॥ २ ॥ पूर्वछांयो ॥ जोवनमां
जेजेकस्फं ॥ तेनिकह्नुंहवेवात ॥
दांमवांमनेकारणे ॥ घणिघणिन्नी
रव्योघात ॥ १ ॥ पितबांधिपत्निसं
गें ॥ अनेंअंगेंकरेअधर्म ॥ साचा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य॰ संतनिशिखनमांने॥अनेंकरेते
२२ खोरांकर्म॥२॥ चोपाइ॥करेक
र्मअतिघणांखोरां॥जेणेंथाये ते
बंधनमोरां॥चोरेधन्यनेंहरेछे
नारि॥थियोमहूमांसनोअहारि
२॥मारेजीवआवेनहिंमेरु॥बां
धिअधर्मधजातेघेरु॥बोलेखो
टुंनेनाखेछेआल॥निर्बलकंगाल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नोकाल ॥ ४ ॥ वारेवंननेमुकेछेआ
ग्य ॥ किधोधर्मस्कधर्मनोत्याग ॥ शी
रव्योछलबलकलनुंडि ॥ अतिअं
तरेममताछेवंडी ॥ सउथिसरसथ
वानुंछेसई ॥ तनेंअरघेंकरेपापक
ई ॥ रात्यदिवसघडेवउघाट ॥ मन
सुबोमोटुंयावामाट ॥ ६ ॥ रछेवस्त्रं
आभुषणअंगें ॥ राचिरयोतनस्क

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खरंगे॥ मरडे मुछने पा घसं माळे॥
ल इंद्र रपण मुख निहाळे॥ ७॥ चा
ले जोबन मां मदमातो॥ देखि धन्य
करंब कुलातो॥ जो इछ विछो गलां
निछांये॥ ते णे मगन रहे मनमांये॥
८॥ बरो बरुबेसतां बनावि॥ पेरेजुं
गडां ल जितलावि॥ पायें पेचपो ति
ये पारलि॥ पाउें भावें करी अतिभ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लि ॥ ९ ॥ वणिडणि वे सेचोरे चोकें ॥
जांणेलोकमुंनें विलोके ॥ चाले
छकमांदेखाडेछाति ॥ बिजिमुंडा
इकइनथिजाति ॥ १० ॥ जुवे पनघ
टजे परनारि ॥ अतिहिंणोहलका
इभारि ॥ नाखेनजैरपरनारिपर
॥ पापिनेंनहिप्रभुनोडर ॥ ११ ॥ स्कं
धेकारवनिरख्यो संनकारा ॥ पायेवि

For Private And Personal Use Only

प. कलदेखिपरदारा॥कांमिहरांमिशंहे
२४ तराखे॥मुख्येंनामहरीनुंनमांखे॥१२
मरडवरडमांरेमकजातो॥घणुंजोव
ननेमदमातो॥रात्यदिवसरहेरउव
उतो॥दांमवांमअरथेंआयउतो॥१३॥
जेमहउकुंस्नानदियेउंतुं॥तेमरजेक
रवाकांमखोटुं॥जेमआथडेओरवरियुं
दोर॥तेमआथडेदैवनोचोर१४भांउभवाईप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरूंजोवा ॥ थायेत्यारतियांधन्यरवो
वा ॥ होका भांग्यगांजानें अफिण॥ थि
योबंधाणिबुद्धिनोहिण ॥ २५ ॥ हरी
जंनसाथेंनहिहेत ॥ चोरीअवेरीमां
चोटुंचित॥ फाटिनजरेफरतोफरे
पगपापमारगमांभरे॥२६॥ चाले
गउकोयेविकाविक॥ जेनेंनथिव
गड्यानिविक ॥लोकमांयेकांयेक

८

For Private And Personal Use Only

च. कगणांणो ॥सुरखमनुंष्यमांयेम
२५ नांणो ॥२७॥ जइलोकक्करवनोभा
र ॥ करेपापनकरेविच्चार ॥ अघम
गनोथियोअध्यारु ॥ जांणेपापनि
रितिहजारुं ॥२८॥ दंनपारवंडमां
नरपुरे ॥ सर्वेकर्मविकर्ममांस्करे ॥
करेकर्मनजुवेतपात्रि ॥ त्रिरव्योठ
गठगाइनेंहात्रि ॥२९॥ निस्यपापकरे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरनवां ॥ राख्योआपनेंसुखपोष
वा ॥ एमकरतांतेमल्लिछेनारी ॥
तारेंसर्वेनेंमेल्यांविसारि ॥ २० ॥ के
नांमाबापभगनिभाई ॥ नहिंसुंह
रीसमसुखदाई ॥ केनोकाकोमांमो
म्याशिकुइ ॥ थियांवेरीनारीमुखजो
इ ॥ २१ ॥ केनुंकुलकरंबगोत्रगांम
॥ मल्लिनारिसोथियांनकांम ॥ राय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य. द्विसराच्योरामारंगे ॥ गीसुंजोव
२ ६ नजुवतिसंगे ॥२२॥ धरेनिस्यनारि
नुंतेध्यांन ॥ जेमकरकेसरायेस्वा
न ॥ नखशिखाचितवेछेनारि ॥ पां
च्योभांमाउपासनानारि ॥२३॥ ए
थुंहजीमन्निरयोहेवांन ॥ जाणुंतस
शीसंघातेतांन ॥ अरसपरसरहे
एकमेक ॥ गयोउरथियतरीविवेक ॥

For Private And Personal Use Only

२४॥नरनारिकरेरामलिला ॥ जे
मकर्केकागयांयेमेला ॥ करेमो
जमकलायेवलि ॥जेमविशाकिं
गानेंमलि॥२५॥रात्यदिवसरामा
रंगेंराच्यो ॥जेममांदलेमहिषोमा
च्यो॥ करेअंगनाकाजेंकुकर्म ॥
लोपिवेदविधिनातेधर्म॥२६॥जां
णोकेमराजिरहेंरमणि॥रातेसौ-

प॰ थितेवरदाणवमणि ॥ राजिहाजि
२७ करेजोडिहाथ ॥ वर्जेविनताआ
पेंअनाथ ॥ २७ ॥ राजिदेखेरम
णिनुंमूख ॥ तारेंवरतेशांतिनेंसु
ख ॥ एनेंअर्थेंकरेकइकर्म ॥ तेमां
नजुवेधर्मअधर्म ॥ २८ ॥ आपस्वा
रथमरेलगार ॥ तेमांपरनेपिडे
अपार ॥ करेपापनजुवेविचा

रे॥ एमगयोतेजोबनहारि ॥२९
एमकरतांअर्भकांआव्यांरे॥ मं
दमुररव्यनेंमनभाव्यांरे॥वांधिवा
लसंगेनरेप्रीति॥एहकारणेकरे
अनिति॥३०॥जागेप्राणथकिअति
प्यारां॥नरनमेजेनिमरवन्यारां॥
बोलेतोतजुंतेहनेसाथें॥तेडेम्रिडे
नेंचडावेमाथे॥३१॥एमकरतांसु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खिदुखियायेतारे भुवानेप्रुछवाजाये
॥भुवोकेवलगीछेभुतडी॥आ
पुंआलातुंरात्यआखडी॥३२॥खा
जेखपरमांउभोआन्न॥तोनथिता
रास्कतनेंविघंन॥मांनिमुरखेसाव
सकिधुं॥मेलियालिनेविकरुलि
धुं॥३३॥वराघुंनेघुंनेगारथियो॥
खावारांणेपणउभोरियो॥एवोव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुथायेछेवेहाल॥तोयमनमांमां
नेनिहाल॥२४॥काकिजतनेंजा
लवेवाल॥पलेंपलेंकरेप्रतिपाल
नमेलेनजरथकिन्यारं॥जागेथां
णथकिप्रतिप्यारं॥२५॥अधघ
डिजोअलगोजाये॥करेकल्पनाबो
मनमांये॥नानांबालनेबहुविधंन
तेनिकरविजोथेंजतंन॥२६॥एमन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रनारिकरेवात॥थियोमोटोमांडवो
उतपात॥ फोडेगोलानेंनांगेछेघडा
॥सांमोरेमारेछातिमांदडा॥२७॥
करेनिसनविश्रतिश्राल्युं॥वलिघ
णिघणिहियेगाल्युं॥तेतोसवेंसां
खिनेंरहे॥पणएनोभावनलहे॥
२८॥तांणेमुछनेंपाउेपाघडी॥तोये
मांनेमंनेंधन्यघडी॥करेसनोजेजे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रणोहे रवे ॥ मव्याञ्जमव्यानुंनव्य
पेरवे ॥३९॥ एमसारोदिकरेसंताप
तोयेराखेहेतमाइबाप ॥ एवांथियं
पांचछोछोकरां ॥ वितांजनमनां वे
रितेरवरां ॥४०॥ पालिपोशिनेतेप
रणावे ॥ एमकरतांबुदापणआवे
॥ बुदापणमांवगडेवात ॥ थियांनें
ण वेंणहिणगात ॥४१॥ रवशिउग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिनेंघयोडुल्ल ॥ तोयनमेलेम न
थिफूल्य ॥ जांणेमारुंकयुंमांनेस
उ ॥ रावेदलमांडोडखेवउ ॥ ४२ ॥
नमानेंघरपरनांरति ॥ तोथेहरिन
भजेकुमति ॥ जांणेम्मापुंशिरवाम
ल्यसार ॥ चालेरानाघरनोवेवार ॥
४३ ॥ सवैन्न्रंगतोशिथलथियां ॥ क
रवानेवांतोकोयेनरियां ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सारे वाधिलवरीलोलता ॥ स्वबलवक
रेछे बोलतां ॥ ४४ ॥ आज्ञो अनोधसर
खुंतोपुं ॥ तेतोमाकुंमांनेंनहिकेपुं ॥
देयेंनहिभिस्कुकनेदांणो ॥ ततोसर्वे
धुतारांछेजांणो ॥ ४५ ॥ कोनेंथर्मकि
धेतेस्रुंहोई ॥ सुखदुखआमुंकारण
जोइ ॥ जांणोजुदुछे पुन्यनेंपाप ॥
सर्वेजांणोवांणीनोविज्ञाप ॥ ४६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. २१

आजोगायेनोगोधो समारे ॥ तोथा
ये वलधियोसारे ॥ दुखदीयेउं दरडा
डि ॥ कैयकेटलुं पालोवल्याडि ॥
४७ ॥ खाटगोदडेचांचडखाये ॥ मा
रेमांकडतोस्करखथाये ॥ जुवाबगां
नेंजुजेकेवाये ॥ तेनेंमारतांपापन
थाये ॥ ४८ ॥ अन्मरिकस्कपोतेंजेह ध
॥ पापिच्छायेज्ञीखानरपरह ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नित्यशिखवेपापनिवात ॥ आवें
करेकरावेहुपात ॥ ४९॥ परान
जोयुंमनेंविच्यारि ॥ अंतेंशीगति
थाशेजोमारी ॥ एमखोइखुनिअ
वतार ॥ जावात्यारथोजमद्वार ॥
५०॥ जेजेभेखुंलिधुएणेमातुं ॥
तेतेमुखेकयुंनथिजानुं ॥ एवापापि
स्फखक्यांथिलहे ॥ सत्यनिक्षुला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नंदएमकहे॥५१॥ कडवां॥३॥
दूर्वछांयो॥ प्रभुविमुखजेपापि
यो॥ पांमेइलोकमांदुख॥ कृत
घ्निजेकुबुद्धि॥ तेनेंक्यांयेनहोय
सुख॥१॥ परलोकेंपीडापांमशे
॥ आलोकेंदुखअपार॥सुखशां
तिक्यांथिलहे॥ एवापापनाकर
नार॥२॥ बालजोबनवृद्धमांये॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कस्यांकर्मअपार ॥ मांनघरनुं म
मताबधिपछेसोवेकरयोतिरस्कार
॥ २ ॥ हेतुजेनेंजांणतो ॥ राखतोअ
तिघणुंहेत ॥ तेजरागतिरस्कार
करवा ॥ कहेपरोरहेपापिप्रेत ॥ ४
रागथोरा ॥ वालनियाविजांवउ
मणि ॥ वचनकहेकरीरोसजी ॥ अ
मेंअमारुंउकेलरह्यं ॥ वेशीरेनेंदुर

For Private And Personal Use Only

प. मतिडोसाजी॥५॥लवलवकरतांजाजनआवे
३३ कडकडनेधूंकैयेजी॥बोलतांबंधनबेसेतारे॥
जीकजाजिनेरैयेजी॥६॥उनुंयदुंहाजरहुंरोणबु
ग्रन्नघांणिदेशुंजी॥रंकटाणानिरेवनेरहेजा
रेंनवरांथासजी॥७॥तुंजेवांनकामानथिम्रमा
रेछेकांमजी॥नथावानांनेरवरामुक्ति॥बनि
रेणकवांमजी॥८॥नबोल्यानुंबोल्येछेबु
ट॥जीह्वामुक्तिछुटिजि॥बाल्यनिवुदाली

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ञ्चांरव्युं ॥ द्वेयानिपणकुरिजी ॥ ९
॥ समज्याविन्यासानेमारे ॥ जव
रीकरेछेसांविजि ॥ मेजमनसुबो
मह्वास्फरवजेवा ॥ करीकमाणिञ्चां
विजि ॥ १० ॥ तारांकर्त्तव्यनडियांतुंने
॥ देमांकेनेदोषजी ॥ भावेंकरीनेंभो
गव्यह्वे ॥ मेतिमनञ्चपसोषजी ॥
रवाधारांणेरवोटुकाहि ॥ खारुंमोजुं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थ० केतोजी ॥ एतोरी नविंतिगरबाऽत्रा
३५ गें ॥ पलमारिसाइ रेतोजी ॥ १२ ॥ ए
वांवचनश्चवणेसुंणतां ॥ चितमां
लागोचटकोजी ॥ लइ करलाठिवे
रेचाल्यो ॥ वांधिफारोपटकोजी ॥
१३ ॥ पोरवेपोरतियांबेश्रीरियो ॥ प
णकोणेंनपुछिपेसजी ॥ लागीनु
खनेंब्यासेंपिडतो ॥ अणनेउनोआ

For Private And Personal Use Only

ल्यो घे स्वजी ॥१४॥ ओळिया तो ओं
गणिये उभो ॥ दांपाटैयाकरवाजी
कात्नावात्नाक्रोडनकरेपण ॥ घरमां
नदिये गरवाजी ॥ १५ ॥ ओशरिये
उभोअन्नविन्या ॥ कंपेथरथरका
याजि ॥ छोरुसउछुणकवाजा
गां ॥ नजुवेस मुंजायाजी ॥१६॥
पछेकहेघडीबेपछि ॥ आपोरानें

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. अन्नजी॥ आजपछिएआवुंकी
३५ ॥नकरेकोयेदंनजी॥२७॥ आद
रविन्याआप्युखावा॥ अन्नअति
उतरेलजी॥मांदिमछुरमांयेपडआं
तां॥दुतुंवणदांकेलजी॥२८॥खां
नत्रिपेगेंखादजमुकि॥खाधुदिधु
जेवुंअन्नजी॥ऊवाद्दालद्दवाजज
रावा॥तोयनविआलंमंनजी॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१९ ॥ कांयेनचालेसकरवडांसाले ॥
मोरुकंनांमनमांयेजी ॥ खररसमे
जनखावाभावे ॥ कपुंनजायेकाये
जी ॥ २०॥ नयणेमरूजेथरथरके
जे ॥ अंगनिद्रोभासकिजी ॥ दंत
गियाततनत्वचालटकि ॥ केशेकाल
व्यमुकिजी ॥ २१॥ चलणाचुक्युंमां
ननमुक्युं ॥ घटजरजरीकायाजी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च॰ हरीनभज्योमोहनतज्यो॥ मनमां
३९ इच्छोमायाजी ॥२१॥ चंतरच
लेभोगनमले॥ मनेकलपनाथा
येजी ॥ इच्छूनआवेमूरखेनभा
वेखाटेफतोखायेजी॥२२॥ म
नमुखमांयेतेजोटे॥ चूडीगंध
उठेजीयांभारीजी॥तेनेच्चभावे
खलगांरड ॥ चालनआवेनर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नैंनारिजी॥२४॥पासुंनकरेप्यासेंम
रे॥कोयेनलिथेसारजी॥लोकमग
मांजनुआरवोवा॥पापिकरेपोकारजी
२५॥जोजोरेमारीव्यासमामां॥को
येनकरेशेवाजी॥तरबपोमुखोकृत
लकुछौ॥नावेरववरुलेवाजी॥२६
सउमलिसमजाविकोनें॥करेचा
करीमारिजि॥नैतोमरिशकुवेप
१२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ रिनेंजाणेजाजतमारीजी ॥ २७ ॥ एम
३७ कहिनें उंचे सादें ॥ बोल्यो बरकिव
डुजी ॥ नरनारिजेनानां मोटां ॥ आ
व्यां श्रुणी सडुजी ॥ २८ ॥ घरनां केश्म
कारां करवा ॥ पोकारे छे पापिजी ॥ सं
मंधि सो सामरां मति ॥ केछे ठबको
आपिजी ॥ २९ ॥ मत्यां पाय अ
मारां मोटां ॥ जेताशेअं तनआ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेजी॥ चुंमांग्युछे मुंझातारुं॥ कांरे
कुलजा वेजी॥ २०॥ शुं केने म
मकाविधेतुंनें॥ बोलछु कालोकेर
जी॥ दासोरेनें दुरमतिडोसा॥ ला
गलुकरवोकेरजी॥ २१॥ लाज्युंघर
नारवेगुंमारुं॥ करयां हांसनेंहेरां
णजी॥ खपवानारख्यांछे सर्वे॥ ता
रांनगीयांधांणजी॥ २२॥ जेनो खप

For Private And Personal Use Only

प्र.
३९

इयांपगानथि॥तेनोयांपगानथिजी
॥माग्यांमोतमहापापिनें॥कोनेंप्र
वेक्यांथिजी॥ ३३॥ पतजांणेजेशेव
तारि॥नैकरतांछोथेकोयेजी॥ रा
मभमनेंनाकारांकिधां॥वणाठेल
तेंवगोइजी॥ ३४॥ मरजेमरजेमर
जेमुररव्य॥राविभ्राशिषदिधिजि
॥स्थास्करवसाकंजीवेह्रेपापि॥लाज

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आमारीविधिजी॥२५॥रामकहेने
उभांआगें॥प्यासनुरवनुंनकुडेजी
राखुंकयुंनजायेसयुं॥कयुंकरव
दुरवनुंतारेअंतजी॥२६॥रामकह
नेंसमंधिसर्वे॥उगीचाव्यांअलगां
जी॥सर्वेदुःखसजीनेआव्यां॥वल
तांतनेंवलगांजी॥२७॥रामकहाधि
व्याधिहेअंगकेडेनें॥कइनजायेके

For Private And Personal Use Only

प॰ ३९

गोज॥ बालजोबनहूंपणामां॥स
कुवाये पिडाये तेणोजी॥ ३९॥नव
वेदेनेंनेयुं पाकुं॥ जांमरोजांम
जी॥सातपडोनेंसोजाचडी॥
तेनिपिडाखरीजि॥४९॥ एफोरिग
णिरलवा॥ पत्थेंपगखवाणाजी॥
किडीयारांपडीयांयारां॥जांकरुवेंअ
जाणजी॥ ४० ॥काजोकोटकजम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्लतर।।तेरोंतंनतवायेजी।।जां
नवेवेगोठणकाल्या।।छात्यनशेवापे
जी।।४१।।सायजमुलेवेल्यवसमि।।
फोडानिफजेतिजि।।साररयनेसघ
रणिवायुं।।सरांडूमुडोन्नतिजि।।४२
तरणत्वियोप्रमेयपांणवि।।मुत्रकछ
बंधांणिजि।।हर्षरोगनेहायधोरो
पांमेपिडापांणिजि।।४३।।वेदवरो

For Private And Personal Use Only

य॰ ल्यबांवल्लाइ ॥ पिडनपेटे पासास्क
४० ल्लज्जी ॥ मुकारोनेमुर्ह्हिमांनो ॥ मीटां
दुःखनांमूलज्जी ॥ ४४ ॥ नलमलपडि
पेचुटि ॥ चालिपैटैंचुकज्जी ॥ आंत
रगांठ्नेंचडियोगोलो ॥ गले न उ
तरे थुंकज्जी ॥ ४५ ॥ गडगुंबडलें ग
लेगांगुं ॥ भरनिंगलभारिज्ञि ॥ दे
डकिनेहिवकहैयामां ॥ मुकोञ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रधोमारिजी॥४६॥उधसनेउवकोआ
वे॥खालिआवेखासिजि॥ मुखपा
कुनेजिमऊलाणि॥ नथियोतो ये
उदासिजि॥ ४७॥ अंतरगजनैं
अंडनिग्रहि॥ ओकारिबोआवे
जी॥ हैरोगनेंखिलिखटके॥ को
ग्रारसोलिकावेजी॥४८॥ हलदरवो
नेंहैयाहोडि॥मसखिलमुंढांणीजी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कंठमालनैंकरणकंकानें ॥जोर
कफजड़ाणोजी॥४९॥धातुजाये
धनुर्धाये॥थायेसनेपातजी॥उद्
रक्कडुरोगअतिसे॥नथिकेवाति
वातजी॥५०॥नाकेंनाकस्फरअदि
॥आंख्येरोगअपारजी॥मस्तकरो
गकडकपालि॥केतांमावेपारजी॥
५१॥कुंभककमजोकमलिकीये॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कालज्य मांथी छिकापेजी॥ ओड्रिने
उरधवायुं॥आफरोदुःखआपेजी॥
५२॥घेनघरांुनेथां दैझाल्यो॥चाल्यो
स्वासएकदंडजी॥ [illegible]तिबंधछपेनै
छानुं॥पिडाने[illegible]पंडजी॥५३॥द्रम ब्र
स्तवाविसफोटक॥उदरसउपदंसजी
॥मेदनैंपरमेदपेखो॥करेकायानो
भंशजी॥५४॥रक्तपितनेंरजोआदि

For Private And Personal Use Only

प॰ ॥तावतावलिख्यावेजी॥तावतरियोए
४२ कांतरियो॥टाढोउनोकावेजी॥५५॥
पडिपडिनेंपासांसडियां॥पडियांभा
गंभारेजी॥वृक्षामदनोरोगनमस्यो
॥पियोथियोतारेंजी॥५६॥गंडुस
नेंगाल्लपचोळ्ळां॥कानेंपडिवाक
जी॥मंदाग्निव्यजीरणमांनो॥
ज्ञाष्टिलक्ष्यपाक॥ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जी॥५७॥वालादुखनामालाकेये॥
नडोकरीमनोगोरोजी॥ आमवायु
गल्यानिगणिये॥मरडोरोगमोटो
जी॥५८॥एवांएवांदुखअनंत॥प
डियांकायाकेइंजी॥ बालजोबनवृ
द्धपणामां॥पुरणपापेपीडेजी॥५९
॥कायाकंपेअतिअजंपे॥ आंखु
पडीयुंतंरीजी॥ नाकनस्युंकरि

For Private And Personal Use Only

प॰ कोरनमि ॥ थइछेगतिमुंडीजी ॥ ६
४२ ॥ फांसरवायेफांकांमुफां ॥ आं
ख्युख्याविउगीजी॥ फूलडयानेंकुवा
पडीया ॥ वेउख्यांख्युंफूटीजी॥ ६१
॥उपरससेसासनबेसे॥ है येहाल
कल्लोलजी॥ एख्यादिदेख्यनंतव्या
धि॥ ख्याविछुअतोलजी॥६२॥ रा
मख्याभिल्याभिख्याख्यां॥ पेखेंपेखेंपी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डेजी॥ कइ नसकेरइ नसके ॥ क
रकुंखाधुंकिडेजी ॥६३॥ खासनमा
थेस्करवनथाये॥ कंठेचडीपुंजाल्युंजं
॥ अन्ननेंपांणितन्युंतारे॥ मुखेंउ
ठेकाल्युंजी ॥ ६४ ॥ रत्नादित्रनंतत्या
यिमा॥ पापिद्योधिडायेजी॥ कहेंनि
क्षुल्लानंदनिश्चेजमविन्याजीवन-
जायेजी॥६५॥ स्करवसर्वेंरूपनस

For Private And Personal Use Only

मयियां ॥ दुखदरीयाउलखाजी ॥ पापिपेखूहवेम्हुंयाचो ॥ जेश्री हरीनरखाजी ॥ ६६ ॥ कडुवां ॥ ४ ॥ पूर्वछांयो ॥ शंकियारोहवेसां भलो ॥ जेभ्राभ्यांदुखअनेक ॥ अ तिवेदनाविंछितणीं ॥ रोमरोममां येविशोक ॥ १ ॥ तारेंजांणाग्निखुंजम राजनें ॥ किंकरमेल्याकोटय ॥ ए

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हपापिनेंपीडतां॥ लइआवजोव
डीचोट॥२॥ चोपाइ॥ आपिआ
गन्याथिमुंनगारुं॥क्रवोक्रकमउ
ग्राहजारुं॥ संगलइ नेजाने निग्नां
ण॥ जमरूपें दिशेछेजोरांण॥उ
॥ अतिकाजानें बोलेकरुर॥नय
णांदिशेउगमतोसूर॥ क्रोधेभसा
अतिविकराल॥ ततोसजथियात

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य. तकाल॥४॥धस्यांरुपमयांनकडुं
४५ डुं॥ अतिज्ञोचनद्रिरोछेवडुं॥दि
होनात्रिकागुफा॥ किधाकपाटजे
वडाकांन॥५॥फाङ्मांमुखफासे
जांगधुंभ्यान॥ तेमांराखिपुंब्रवे
वांम॥ अतिदांतदेखाडेछेवार
॥ जोतांजिह्वानपांमियेंपार
॥ ६ ॥ लिखांचाकसरिखां–

For Private And Personal Use Only

छु रोम ॥ पंड पोतां तणा विनेत्रोम ॥
पंडरावां नें ग्रवत्तां मुख ॥ जे ने जो
तां मां जाये छे स्करव ॥७॥ रव र मुरवा
नें नां वा छे कां न ॥ अति दि वो छे व
रवेवा न ॥ के नां स्था न ना जे वां छे मुल
धस्यां तन दें वा अ ति दुःख ॥८॥ के
ना पग करणा वे छे पुं गे ॥ गजें मेघ स
म घो र त्ठे ॥ के ना सिं हना स रि रवां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुख ॥ माघ सुखा दिये अति दुःख ॥ गज सुखा घोडा सुखा घणा ॥ नौजनार सुखा वियां मरणा ॥ जरख उमघर सुखा कैये ॥ सुरल्यो लोइनें मांसना लैये ॥ १० ॥ पाडा सुखा विरु सुखा वलि ॥ अजगर सुखा लिये छे गलि ॥ गर्ज्यं गीध सुखा कै गणाये ॥ कवाघुउ सुखा छे घणा ये ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११॥न्त्र्यालनख्यालमुरवानुरमा॥ते
तोपापिझांगिदेखिदमे॥मञ्राञ्रा
यथकिपगकाला॥सुलसररवाछे
अंगेमवाला॥१२॥रातादांतरुधि
रनानस्या॥वउजांवातेवास्यनिसस्य
॥केत्राश्रवलानेंहीरोछेकाला॥फे
रेलोचननिसरेज्वाला॥१३॥केंक
न्निषविन्याधउधोउे॥कैकनिजदं

For Private And Personal Use Only

प्र॰ तेतनन्नोडे॥ केनांमुखसुवरनाजेवा
४१ ॥ करुणारूपनयानकरावां॥ २४ ॥
कोऐगुदामांमुखदेखाडं ॥ धस्यांत
नराकविशाताडे॥ करम्यांगलिलांवा
छेनोर॥ दिशोवज्रथकितेकवोर॥२५
तेरोटालेछेपापिनुंगाम ॥ नथिपउ
तुंम्हायुधनुंकाम॥ दिकाथोलनेंग
उन्हाघणा॥ मेलेमाथामांनरहेमणा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१६॥ हाथें लिधां छे बो हथियार ॥
थियाकिंकरसउ तियार॥ लइगदा
गर्ज्य खेजसाथ॥ मुदगरमोघ रि
सुं छे हाथ॥ १७॥ फरसुं नि सकलनें
तरवारु ॥धस्याधोकाखरानेंकरा
र॥ चक्रचिपियाचापनेंबांण॥का
लपासानेकुंतडांपांण॥१८॥सकया
सांटसिसुंसुडि सकली॥ एथि पिडा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थायेऋरातुली॥ मोरांमालांहाथ
मांमुद्राल॥ पेखिपापिनमांनेक्र
श्राल॥ १९॥ आरापनाराहाथ्येंहथो
डा॥ मारेमाथामांलोदांनाजोडा॥
एवांआयुधअतिअपार॥ तेनोके
तांतेनआवेपार॥ २०॥ चउयाउ
टखरेंतेअपार॥ घियाजरखपा
डेअसवार॥ रिंछभिंहभुंडणांनेंरोज

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थइत्यारवालिजमफोज॥ २१॥ कैक
चउगानेकइकपाला॥कैकवोडियाके
कशिंगाला॥कैकपोटथरत्तजेवा॥
ग्रावेपापिनेंतेउवारवा॥२२॥कैकरु
दरीशालाछेअंगे॥कंटाकांणिद्याचा
ल्याछेसंगे॥कालियोनेंकैयेदकालि
यो॥अकालियोअविरकालियो॥२३
लटपटियोनेंऊटपटियो॥अटपटि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योनें कुरचीरियो॥ वलवलतोनें कल
कलतो॥ वलवलतोनें गलेगलतो॥
२४॥ हडहडतोनें फडफडतो॥ कडक
डतोनें भडभडतो॥ एवांजाणजोजम
नांनाम॥ जेनें मले तेनुं रालेषांम॥२१
मरडियोनें कैयेंठरडीयो॥ घसरडि
योनें करडीयो॥ कांणियोनें कथेंजो
बांणीयो॥ तांणियोनें वलिहे रांणियो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२६॥ जदोजमनेंकढोजोकैयें॥ऊदो
नेंवलि ऊपरोलैयें॥त्राड्रियो फाड्रियो
तिरवाघणा॥राड्रियोह्राड्रियोवियाम
णा॥२७॥दंतियोऋंतियोवेऋाकरा
॥ह्रंतियोदुर्मतियोखरा॥त्रांशियो
फांशियोतिरवाऋागय॥मांत्रियोका
त्रियोकालानाग॥२८॥केयेक्रमियो
नेंऋधर्मियो॥विकर्मियोवलिकुक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र्मियो॥ फेरीयो वेरीयो नमेरीयो ॥
महाकोपनोभस्यो केरीयो॥ २९॥ रा
कच्छडबंगो कुडधंगो॥ केयें कुरंगो
नें ढ्रिरभंगो॥ रोलियो नें डोलियोरी
साल॥ वफलीयो बोलियो बेकाल
॥ ३०॥ रावां नांमजाणो जंमतणां॥
तस्तुं केटलां हेम्रतियणां॥ जेवां
नांमरूपपणरावां॥ तेनां प्राक्रमप

णजाणीतेवां॥३१॥ होठस्नांबादां
तमुखबारा॥ पेटज्ञांणियेंपाटप
सारा॥ मोटागोस्नाजेवडावेगाज॥
खरज्ञारुधिरेंदिसेवेहाल॥३२॥
फाटांमुखनेंफरज्ञीयुंहाथें॥घणो
घुंचाणामबाञामाथे॥ वांकांकांध
नेंबडामायणा॥ भुंडाभयंकारवि
ख्यामणा॥३३॥ राचाचोदकोडनज

य. मजेह् ॥ यइ भेल्ला निरद्दतेह्॥
५२ चाल्या किंकर सवैं सजी॥ जेम मे
घम्मा वे घोर गजि॥ २४ ॥ धाया
किंकर कुरंबल्लड् ॥ जेम उल्लटे
समुद्र सइ ॥ करे ह्रो ह्रो कतो ह्
लनारि ॥ जेम गर्जे वारा धियेवा
रि ॥ २५ ॥ मारुमारु करंता ते
म्मा म्मा ॥ संगे सें न सगत्तु —

नेखाव्या ॥ एमन्नाविधेरयोपापि
याणि ॥ मारेमारेकहेमुखवांणि
॥ २६ ॥ दइदंडलेंकारजोवासु॥
खेकरतावेव्यजगास्य ॥ रुंधि
हारहियोबउदुस्त ॥ पामेपिडाप्र-
भुनीविमुख ॥ २७ ॥ तारेंवेगाष्म
विकांनहूरें ॥ किंधुंबंधनगावा
नुंतारे ॥ केहेकानमांसहूपोका

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व. रि ॥ सगां समं धिनें सुतनारि ॥ ॥
५२ ३६ ॥ नारिनो धारां आमनें आज
सुवो करतां लोक स्फ्य काज ॥ एम
केहुं स्त नारीआवि ॥ सांसु संघ
स्फ जाजेव तावि ॥ ३७ ॥ पराक्यां
थि सुणो राहसमे ॥ जमदुतदुख
दइदंमे ॥ वनिआंस्वे बेगाहेअ
पार ॥ दाखिओल खांएप नेहवार ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ४० ॥ कालिजि ह्नानवोजायेवं
णि ॥ रोक्यो कंठनउतरे पांणि ॥
किधाबंधदशेणमहार ॥ पछे दि
येछेदंडअपार ॥ ४१ ॥ केनेंकदो
येनेकेनेंकचार ॥ केनेंकआह
लेनेंकहजार ॥ अतिपापिहोय
पापवंत ॥ तेनेंआवेतेडबाअनंत
॥ ४२ ॥ दियेदंडनावेदजदया ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य॰ पांमे दुखनजाये मुखकया॥ नोये
५३ नकस्योरामविन्यार॥जेमें खोयो
रल्येअवतार॥ ४३॥ मुकिन्यायेमें
क्रिधोअन्याये॥ पिडयोरांकनेंवांक
विन्याये॥ साचासदगुरुसंतनसे
व्या॥ तोव्या तेनिग्रस्थसुजजेवा॥
४४॥जेनांपंचविषयेंहस्यांप्रांण
॥धन्यत्रियेतरणाजेवें चांण॥ फां

For Private And Personal Use Only

त्रियानें फोगटियाफेली ॥ चाले
धर्मम्रयादानें मेलि ॥ ४५ ॥ तेनें
जांएयामें सद्गुरुसंत ॥ तेकुंला
गुंआपापअतंत ॥ नुलोभोलाधें
रानेभरांसे ॥ द्वेस्करतयावासहि
आसे ॥ ४६ ॥ आजकेणोंकिधिन
हिंसाये ॥ तेनिसोटननसमझ्योकां
॥ द्वेत्रियोकरीयेंउपाये ॥ जु

प॰ रूआ्मेनपाल्यबंधाये ॥४७॥खो
५४ रागुरूनांखासडांखाइ॥चाल्योजी
वजमथुरीमांइ॥सांचिवातछेग्राल्
पुरांणे॥खोटिनैथायेत्रंस्यनेटांणे॥
४८॥कयुंबालजुवाब्रधन्माही॥पण
रेन्नोमांरावेवायदे॥नथिमर्णतणो
निरधार॥बालजोबनमरेअपार॥
४९॥सउपजांछेकालनेपास तारेछेनो

विसवास॥आजकाल्य मांजावुंछेउ
ठि॥इयांरियानिवातछेजुगी॥५०॥
एकजन्ममेनेए कमरेछे॥ एमअनेनी
काकालकरेछे॥ नथिरेतुंकोयेनिर
धार॥ चाल्योजायछेसउसंसार॥
५१॥कोयेनेतिमकोतोचेतनुं॥
कुंणिअवगोरांकरणवुं॥ चेतवुंचि
तेचांनकलावि॥दांहांकरतांवातने

१५

प. रेखावि॥५१॥ जमरूपाविनेंजाणशो
५५ गले॥ तारेकोंणकेनुंतेहपले॥जे
नेंमाथेछेजमलिफोज॥ तेनेंवि
यांसरवसइमोज॥५३॥मोटानुंवे
रमाथेछेमोटुं॥ हरिननजेनथाये
खोटुं॥ मरेवेर लोपांमियेसरव॥फ
रिश्रावेनहिंएहदुःख॥५४॥जेणें
करीजायेंजमसाथें॥एवुंनकरीयें

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निजहाथें ।। जेणेकरीमरेंजमफंद
करीयेंराहुंकेनिकुलानंद ।। ५५ ।। ।।
कडुवां ।। ५ ।। पूर्वलांनो ।। पहुंपापी
जीवनें ।। घेरीरियालाघरमांये ।।
कायामांथिकारवा ।। कह्योजमकिं
करेउपाये ।। १ ।। सोकिंकरथेसाव
दा ।। विविध्यातेवार ।। क्रोधकरी
करवाच्चलि ।। दिवेमुंदमतिनेंमार

For Private And Personal Use Only

प.
५६

जोइ मुंडाई जीवनी॥नथिआवतिज
मनें मेरू॥रुंध्यो मुंडी रीत रुं॥पी
उवावत पेरू॥३॥जन्मधरीजे जे
कस्यां॥पापिजि वंजे पाप॥तेतेसं
भारिसवें॥कस्यो जमकिंकरे संता
प॥४॥ रागधंन्याश्री॥बालजो
वनमां जे जे कस्यां तां॥ हदु परणामां
वलिजि॥कस्यां कराव्यां पाप जे पी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तें ते आम्हां छेम लिजि ॥ ५ ॥ सारी
उमरमां स्करवने अर्थी ॥ कर्मविकर्म
जे किधुंजी ॥ सर्वेमलिनें अघ ते आ
त्युं ॥ अंत्ये दुखजरि धुजी ॥ ६ ॥ क
स्यां कर्म कालां कई ॥ कुल कुटंब नें
काजेंजी ॥ भव आरवानि मुंडाइ लि
धि ॥ लोकडीयां निलाजेंजी ॥ ७ ॥ क
ठणवेलायें कां मन आवि ॥ पडि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प.
५७

पोताने मायेजी॥ पापमां पांतिके
णांन लिधि॥ जेकस्यां तांनिजरा थं
जी॥ ८॥ वेरववस्यानें खवरूतेनि
पडिनेलगारूजी॥ मुंडेहालें मों
थें स्कवास्यो॥ नोयेनाव्यो विचारजी
॥९॥ नारपल्लिजेपाग्लरूतां॥ज
मनां अधअपारजी॥ सर्वेआ
विनेंअंगेंवलगां॥ केतांनआवेप

For Private And Personal Use Only

रजी॥१०॥ घेरी लिधो घांघो किधो॥
ढिधो वउमा रजी॥ अवांन कआ
विविंदी॥ गा फल नरग मा रजी॥
११॥ मारो मारो थुं विचारे॥ खु नि
आयो हाथ्यजी॥ दयाररवें आणीद
लमां॥ एम बोलेज मसाथजी॥ १२॥
करुणावाणी बोलेताणि॥ आंणि व
चनवां कांजी॥ कांन पडिया पयाउ

For Private And Personal Use Only

प. ५९

जउया॥ कुरीपडीयांफांकांजी॥१३
कोयेककरूरबोलेमुखथि॥जा
णयुगज्योमेघजी॥ पडीअंगजाये
नेंथयुंअंधारुं॥ताणेकरमांतेग
जि॥१४॥ केकआंख्यदेखाडेएवि
॥जेविपडतिविजजी॥ करडेदांतनें
थायेकडाका॥ निरखालागेतेजजी
१५॥ कादिजिभदेखाडेडरावे॥सा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुंझोयुं नजायेजी॥ रोक्यां द्वारद्वारे
जमझारे॥ भागी के मजवायेजी॥
१६॥ आकुल व्याकुल थइ आकळो
॥ दीयेअंगमोडो हुंजी॥ जिण्यां जु देती
यां जमनें देखे॥ पांमेमहादुःखमोटुं
जी॥१७॥ घणो वायें वांनर येस्यो॥ क
रे जे मकिलकारजी॥ हाकावाकाव
डोहिलोले॥ करे बहुपोकारजी॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१९॥दुखनोदरीयोसभरभरीयो॥
पडियोतेमांप्रांणीजी॥पेटभरीजे
पापकस्यांतां॥जमदुःखजुगंजां
णीजी॥१९॥तेतोसर्वेसाह्युंथियुं
॥गियुंकखसमुज्जुंजी॥हांहांकर
तांजन्महास्यो॥आमुदुखअण
तोत्युंजी॥२०॥जमनेदुतेंझाल्यो
गले॥तेणीउचकांभरेजी॥मेस्य-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नआवे मारे घणुं ॥ कालोकालो क
रेजी ॥ २१ ॥ रगरगमां रोकिते वारें
॥ बंध पवन लइ किधोजी ॥ सूल
मरुपधरि सोधिनें ॥ पलमांपक
डि लिधोजी ॥ २२ ॥ मारि मुदगरगा
ढागरजी ॥ बांध्यो वेउ हाथेंजी ॥ पा
येऊं किरासां कलसारि ॥ मारिली
धो साथेंजी ॥ २३ ॥ मुसो जेम मंजा

For Private And Personal Use Only

प. रैंकाल्यो॥ मह्लिकालिबकेंजी॥
६० तेतरनेंजेमबाजेंकाल्यो॥ एमऊ
ल्योग्रवानकेजी॥२४॥मनोरथ
रियामनमां॥ ग्रधुराग्रादरीयाजी
॥जमनेदुतें।लिधोजोरें॥ स्यामन
नसबाधरीयाजी॥ २५॥ वउवफो
योग्रतिग्रसोयो॥ किधोमुंउेहालें
जी॥ कायामांपिकाटनासारुरावांदु

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रवआनेजी॥२६॥ पुंगुह्नारे थिकाढो
पछें॥ आगथिअजगोकिधोजी॥जी
वकायानेंथियोजुवारोमारीमोखेली
धोजी॥२७॥ जेंमदडेपडेरांगुं॥ चो
केंचारेकोरजी॥ रमभारतांमहापा
पिनें॥ चाख्याजमरायोरजी॥२८॥
जमपुरीमांजेपोचाड्यो॥ मांनोमूर
तमांयजी॥ पापपुंन्यपुछिप्राणीनों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्लताजाव्याञ्चांइजी॥ २९॥ कर्मवि
कर्मकस्यांजेसाकं॥तेनुंजोवाहेत
जी॥ह्रदशदंनस्कधीदेखवा॥पापी
थियोप्रेतजी॥ ३०॥ प्रेतनादेहनेपां
मिहरांमि॥देखेहेदुरमतिजी॥कर्मा
णीलोकांम्यनञ्जावि॥ येह्लेनुंडीगति
जि॥ ३१॥ नारपङिजेतनपडनुतुं
॥ दितुंखाजिजोतांजी॥ करमभजी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कतोहलकिधो॥रहेनहिंछांनांरो
तांजी॥२१॥मालतालनाइनेंभणि
॥रूवेस्मनत्नेंनारीजी॥उवेराऊरानें
अंतरमां॥स्वारथअापनंमारिजी
॥२२॥कुलकुरंबकुइं कुइं॥रुचे
मांनेन्यालजी॥घरवेतरवोदाशि
में॥मोडुंमदुंशालजी॥२४॥घर
विनारिघरसंमारि॥रूवेस्रावुंजा

For Private And Personal Use Only

य. मजी॥ गोत्रांनिपगेग्रायरनुं ॥
६२ कोंणाकरत्रोकांमजी॥ २५॥ संसा
रनुंस्फरवडुं सर्वे॥ जीतांकरीग्योअे
रजी॥ औरदापेस्यानुंउतरीणुं॥ क
रियेंकरूपेस्यजी॥ २६॥ त्ररवरत्रो
डिकंकराणफोडी॥ जीडीआजवरवं
डिजी॥ राबातणाउतरीयुंमारुं॥ ढुं
स्फवागणयरंडीजी॥ २७॥ भुपस्यजे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रेहेयुंकुरे ॥ छुरेकेत्रोनारिजी॥
रहिनुखच्यंतरमांमोरि॥ मोग
तणीतेनारिजी॥ २९ ॥ कागारो
लकानेंश्रुंणी॥ श्राविविजिवायुं
जी ॥ विवाध्यिवालेरूंलागे ॥ पा
रकुंत्रयायुंजी ॥ घेरुघेरुध्यिघे
रवलिनें ॥ मलिमंडलिबांधि
जी ॥ गांगासरखुंरोरगुंकरे॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वेरागजसांधिजी ॥ ४० ॥ व

लनिचाल्यवोकारोजइनें ॥ वोडे

सरखुंतांनजी ॥ लगाविलट

कांरुंकरे ॥ रोयामां गानजी

॥ ४१ ॥ कुरीपिरिकादवोवारां

॥ गीकिगलेहायेंजी ॥ पा-

पपुन्यजे किधांघाणी ॥ तेतो

वाल्यांसाथेंजी ॥ ४२ ॥ लईका

For Private And Personal Use Only

हृजगाडिरिधो ॥ फांतीभौमां दासो
जी ॥ जोत्तो रेंजे पाग्राज्यहोते ॥ सा
रवाले ग्रंरवारनोजी ॥ ४३ ॥ गामगरा
सघरहवेजी ॥ पञ्चांस्यां पछवाडे
जी ॥ माजरवजीनारवाबाजाएपुं ॥
नीतुंकोयेदाउजी ॥ ४४ ॥ वाटिजानि
राजिकाजा ॥ मौकोयेज्ञामांधेरू
जी ॥ उतारिनेंमेल्योमनथिकोयेन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य.
६४

पुछे पेख्यजी ॥ ४५ ॥ वालोञ्चाव्योनैं
नुजोगीयो ॥ वायोनेंवगुतोजी ॥ जो
जोरेकमा ि कि धि ॥ जमनेगाडे-
जुतोजी ॥ ४६ ॥ वारदिवसरावेडांजो
युं ॥ जेजेकिधुंकेडेंजी ॥ लालमवाले
धुंकेंबलखे ॥ मुखनराणुंशेडेजी ॥
४७ ॥ घरचौटामसाणमांइ ॥ दनडा
दशारियोजी ॥ तर्तीयांथिदनतेर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेजमनेसाथेंगीयोजी॥ ४६॥ च
डीचोटेंलिधोडोरें॥ जमनेदुतेंजोरें
जी॥ तारेंपाडेराङनुंकालि॥ बहुदुः
खेबकोरेजी॥ ४९॥ कावरशेद न
करेकुबुद्धि॥ कोयनखुणीकानेजी
॥ सगांसमंधिसौनोरलियो॥ पडी
योजमनेपानेजी॥ ५०॥ किंकरकरें
पडीयोपापि॥ करेकोरासाथेजी॥

For Private And Personal Use Only

य॰ निक्षुज्ञानंदनाथमज्याविना॥नेर
६५ वरउपायेजी॥५१॥पूर्वेछांयो॥उ
पायेनथिज्ञाजीवने॥घनुभज्यावि
न्याकोयेपेरु॥जन्ममरणनुंजोरव
ममायेथि॥मरेनहिंजमवेर॥५२
घडियेंघडीयेंघटेआवरदा॥आयु
नाभ्रोछिथाय॥एहदुःखनेमटाउवा
करवोमवनेंउपाय॥५३॥एहुंदुःख

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जेनें आववा ॥ वलिनथिकां येवार
॥ नथिउधारे रहनो॥ तनमुकतां
ह्वेत्यार॥५४॥ मस्तुंकरवजाशेमटि
आवशेउनरिहुख॥ मोटेंगाफॅताम
लिनें॥ श्रीहरीसमरवामुख॥५५
जातुंजोशेजमपुरीयें॥ जीवजाणि
लेजोजरूर॥ निमिषनिमिषेनिक
ळ्यावे॥देखिनेनथि रहदुर॥ क

For Private And Personal Use Only

य॰ रखां ॥ ६॥ पूर्वह्णांयो ॥ ञ्जावुंसांभ
६६ लिञ्चवणे ॥ रखेंउरविञ्चारनागम
॥जीववस्त्रवेंजउनहि॥तोदुःखभोगव
शेकेम॥१॥वलिकोयेककेशोजीव
छिणे॥तोमथिञ्चतिविशेष॥ञ्जहे
घूञ्चभेद्य ञ्जखंडगह॥वलेसउसके
नहिलेद्या॥२॥वलिकोयेकागमर्वे
कयोजीवतेलस्वरूप॥ कर्मना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्पितछे॥कयोआतमाएकअनुं
प॥३॥एमजणजणप्रत्येंजुजवुं॥
जोपरवीकरज्ञोपरमांण॥तेहउप
रकडुंसांभलो॥तमेंसर्वेजनसुजा
ण॥४॥विधमात्येवर्णवि॥कडुंजी
वनिसर्वेवात॥शास्त्रसीवेंसत्यक
यो॥जिवजुगोनहिंकोयेमात॥५
जिवजोतांजोनआजउे॥तोसाधनस

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैमर्थछे॥ विंआसक्तनैंवखांणे
वगोल्ये ॥ एमांत्रियोअर्थछे॥ ६॥
स्तुन्यसुमननिसंज्यसा॥अतिआ
यरकोणकरे॥ संसारसंगनित्रिवि
कार्यें॥ वेरेनवेरेसुंसरे॥ ७॥ ज
पतपतिरथजोगजग्न॥ दानपुन्य
व्रतविधिमलि। केनेअरथेकर
वुं॥ पामनारोनमलेवलि॥ ८॥ पु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्यपापपरपोतानां॥ समज्ञा
मां छुं सारछे॥ न्याये अन्याये नकु
वुं॥ एपणजुवोनिरधारछे॥ ९
एम आगम असत्यथियां॥ वलि
वज्ञानसमज्यावात॥ एतोमतछे
मुरखनो॥ जीवसाचोछेसाक्षात॥
१०॥ वेदांतिवणसमज्येकहे ॥ ब्र
ह्मतोतेजीवथयो॥ एपणमोटोबा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धम्मास्मो ॥ तेपण मर्मनस्मत्त्यो ॥
११ ॥ अछे दस्प्रभेदस्मरवंड एह ॥
अह्नरवह्नकेवायछे ॥ तेमांथि
आजीवरवस्यो ॥ एकेवानोकाइम्मा
यछे ॥ १२ ॥ वलिभत्तशोजीवज
रेंबह्नमां ॥ तारेकोयकदनरवर
शेरवरो ॥ रवरभ्रभाववह्नमांरव
चित ॥ तारेंहररवशोकस्मानेंकरो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥१३॥ वलिउंचनिचमांञ्रवत
ह्यो॥ज्यांस्करवनहि्दुःखञ्रति॥
रवरुकरस्वांनस्नजवा॥एविके
मञ्रविमति॥१४॥स्करवतजीनें
दुःखलेडुं॥एबुंञ्रज्ञानिपणाछे
नहि॥एपणवातञ्रसत्यछे॥
जीवसत्यछेमानोसहि॥१५॥व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्तिपरसरपंचभूतनें॥नथिवचर
बुद्धिवपुथारिनें॥आत्माआत्माएक
छे॥तारेंनारवेछेकेमकेनेंमारीने॥
१६॥अरीमित्रतोअसत्यछे॥जारेंआ
त्मातोछेएक॥एतोवाणिनोविला
सछे॥कहुंहवेतेनोविवेक॥१७॥जेम
नरआकाशमां॥अतिउंचोकरेपरवेश
तेनेंआकारअवनितणा नजरेनआ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेलेस ॥ १८॥ पणा अवनिपरणछे-
खरा॥ नथिअसत्य आकारणक॥ नो
खानो खानजरें ॥ आवेछेएदृअने
क॥ १९॥ तेमनिरविकल्पसमाधि
मां ॥ नथिआवतांनजरेंजोय॥ प
णजीवईश्वरमायावलि॥ एसाचां
छे सोकोंये ॥ २०॥ मायाईश्वरसत्य
छे ॥ जाणोसत्यछेजीवजेह॥ अ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छेदअभेदअजनमा ॥ नित्यनि
रंजणकेवायतेह ॥२१॥ तेनेंव्रणपञ
रिरनेंव्रणपअवस्था ॥ अनेंव्रणप
धरेअभिमांन ॥ व्रणपग्रंथियेगुंथि
यो ॥ तेहजांणोजीवनेंदांन ॥२२॥
हरषसोकनेंतेभोगवे ॥ वासना
येंजकडाजीव ॥ जन्ममरणस्करव
दुःखमां ॥र हेसंसृतिमायसदैव

For Private And Personal Use Only

२३॥ शब्दस्पर्श रूपरसगंध॥ मन
बुद्धिचितअहंकार॥ एहशरिरनव
तत्वनुं ॥जाणोजीवनुंनिरधार ॥
२४॥ स्वपनमांजेजायेआवे॥ मूर्त्ति
पांनसरिर॥ सुखदुःखनेंतेभोगवे॥
मनेंमांनजोमहाधिर॥ २५॥ जेमव
दनिआपेजोहमां ॥ गुहापणजणा
येनहि॥ तेमजीवअवस्थाशरिरमां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तदात्मकरियोथहि॥२६॥घणा
रणयविचेंआवि॥जोह्जेमथडा
यछे॥तेमजीवसरिरमधें॥मानो
मारवडंवायडे॥२७॥अनेकतन
आव्यांगियां॥ वलिजाइोआवशेअ
नेक॥देहिनहिंदेहविन्या॥एमसमझि
लेजोविवेक॥ २८॥जेम मोयंगआं
गथितरे॥कांवलिथुंकउंकोस

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तोयेअहितनेंआवेनहि ॥ जोनें
खोल्यउतरतांखोरन ॥ २९ ॥ एमजी
वनेंजाणजो ॥ जोतजेतनअनंत
॥ त्रोटोतोयआवेनहिं ॥ मनेमान
जोबुद्धिवंत ॥ ३० ॥ एविरित्येंआग
ममां ॥ जोइकयोजीवअखंड ॥ ते
नेंऊलिजायछे ॥ दियेछेदुष्करदंड
॥ ३१ ॥ आतननतजतेअंगोपामात्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ ध्यायेत्रणपतत्वतुंतन॥ आकाश
७२ वायुनेंअगनि॥ तेनुंरुपवंधा
यछेजन॥ ३२॥ पछेंतेनेंपिंड
देतां॥ वलिविलेछेदशदिन॥
तेणेंकरिथायछे॥ एकमुंदा
हाथतुंतन॥ ३३॥ पछेंदिन
अगियारमे॥ षटउर्मिआपेशा
रिर॥ द्वादशादनउष्ठिरहिनें॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चालेते रमे दिन ऋविर ॥ २४ ॥ स
गां सम मंधि सवे मेलि ॥ चाल्यो एकि
लो ऋाय ॥ संग न चालि संपति ॥
चाल्यां ने जां पुन्य नें पाप ॥ २५ ॥ ऋ
र स्फं ते ऋध वञ्चरी युं थियुं वऋमां
विवानुं वार मुं ॥ मन स्फवो मन मां
रियो ॥ थियुं चाजवानुं कारमुं ॥ २
६ ॥ हाथगले मुंडे हाले ॥ जीवचा

For Private And Personal Use Only

य.
७३

ज्यौजमपुरमारगें ॥ ध्यणतोच्यां
दुःखच्याविर्यां ॥ कइकइकेंये च्यां
लेगें ॥ ३७॥ मनुष्यजोकथिच्या
त्रिसहस्र ॥ जोंम नग्य मोनग्य
॥ रहणदें नामां संजम निपुण ॥
वारीवस्तुपराचिंचधर्गो॥३८ ॥
तिर्यांज्ञावानुंधिणुंजीवनें ॥ नेत्रुं
मत्रुं तुडुं भानुं लइ ॥ स्वावालिधि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संगेंखुरवि ॥ जैमांस्फरखनोज्नव
लेन्यानर्द ॥ ३९ ॥ वाद्दवसमिवि
कस्वदि ॥ जीयांश्रोत्नखांएयन
हिंश्रापणे ॥ प्यासभुरवनुंकोण
पुछे ॥ दियेमारसोबोयणा ॥ ४०
एहमारगमांजेगामछे ॥ तेनांतेक
हूंहवेनाम ॥ सोजद्वरहेरुंडनां ॥ श्र
नेंविजांतेश्रनेकगांम ॥ ४१ ॥ प्रथ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰
७४

मयाम्यपुरनामहे ॥ पुरसौरी वि
जुंजाण ॥ वरिद्रपुरत्रिजुंकेयं ॥
गांधवचोथुंवरवाण ॥ ४२ ॥ द्रोस्न
गमपुरपांचमुं ॥ क्रुरपुरजांणोए
षष्ट ॥ क्रौचपुररासमसुं ॥ वि
विचपुरराष्ट्र ॥ ४३ ॥ नवमुपु
रवह्लापद ॥ दशमुंदुःखदजेना
म ॥ नानाकंदद्त्राणकहे ॥ स्कतम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ह्रादज्ञागम ॥४५॥ रीहुंपुरणतेर
मुं ॥ पयो वर्षणादज्ञानें चार ॥ सि
तारनपुरणपन्नरमुं ॥ बौभितिज्ञो
इज्ञांनिचार ॥ ५५॥ एसोलनपुरहे
दंडनां ॥ एकएकथकिकठोर ॥
मंदभागी एमारगें चाल्यो ॥ जेणें-
किधां कर्मअतिघोर ॥ ४६ ॥ हवे जे
जे दुःखभोगवशे ॥ सेज्ञोज्ञारिरेमां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र॥अवगाहइ सो सांभलो॥कहुं करी वि
स्तार॥४७॥पाछो नकयो पापकर
तां॥कयां अघअतिअगणित॥
ते जीव वाल्यो जमपुरीयें॥मुखण्या
सें मुंडी रित॥४८॥जमदुतें जोरें
झालिनें॥नाखि कंठमां काळपा
स॥आयुरुठ गामे मारवा॥वउव
उदे खाउं त्रास॥४९॥उंधे माथे ता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णीयो ॥ नैरोआणिकरेहेयोकार॥
अथवंतनिरासमे॥कहोकरेको
णवार॥ ५०॥ करतांवउकुकर्मने
पाछुंवालिपेरखुंनहि॥ नछुंनुंउं
पडहोभोगववुं॥एतुंभ्रांत्मेंदेखुं
नहि॥ ५१॥ अंधधंधेआवुषखो
इकरीकमाणीपापनि॥ अभागि
नेंएमारगें॥सर्वेघहसंतापनि॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५२॥जेहअरथेआमनुष्यदेह॥
तेहकारजकिधुंनहि॥ अवजांआ
वर्णआवसोतेफललेतांफजेती
थइ॥ ५३ ॥अजपस्कलनेंआश्र
रि॥करीघणीघणीवात ॥ एवोपा
पिष्टांणियो ॥ तेचालियोजमसंग
त ॥५४भुरणदुःखमांजेपड्यो॥
जेनोकेतांनआवेपार॥निकुला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नंद निश्चेकहे ॥ मस्यमानजोनर
नारुय ॥ ५५ ॥ कडवां ॥ ७ ॥ पूर्व
छांयो ॥ ऊंफिरबंधेबांधियो ॥ मा
रिनेलिधोमोरुय ॥ उगलेउगलेदुः
खघणुं ॥ नहिलेवास्करवकोयगोर
॥ १ ॥ बझोंनेसउतालिब्राजोज
न ॥ जमचलावेनित ॥ जेवांजेनां
कर्मछे ॥ तेवितेदंउनिरित ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

मर्मेस्थलेंमारेघणुं॥तेणेपापिक
रेपोकार॥पुन्यहिणाप्राणितणी
॥एसमेकरेकोणसार॥३॥सोधी
संध्यसरिरनि॥तियांमारद्दियेम
नगमति॥दंउदेवानिरितनें॥जां
लेहेजमदुतभ्रति॥४॥ताल्वेक
पालेंकांणाये॥गोव्रलोंमारद्दियेघ
णा॥छातिनरखहे देतेजि॥धायप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डाञ्चतितेतणी ॥ ५॥ नाशिमागि
नम्मसके ॥ पडीयोजमनेहाथ॥
कष्टशोवायेकेरज्जुं ॥ ञ्चतिपामेपा
डाञ्चनाथ ॥ ६॥ जेमनरवानरने
वलेंगलेबांधेछेबंध॥ तेमजायेकि
यांजीवपावि॥ पडीयोजमनेफंद॥
७॥ जेनेंदिठेदुःखउपजे॥ वलिपर
सेंजायेप्राण॥ वज्रजेविवालिवदे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णवाकुंडाजमराणा ॥ ९॥ चोपाई ॥
तेनें सायें चालियो अनायरे ॥ घ
णुं घणु पसंतोह्यरे ॥ करे ओरतो
मन मांकउरे ॥ मारोमारोकरे जम
सउरे ॥ ७॥ पडे माथे मुद्‌गरमाररे ॥ क
रेहायेहायेस्यां पोकाररे ॥ दइदइ पाप
नां एधांणरे ॥ दियेदुःखघणुं जमरा
णारे ॥ १०॥ जेहसमे कस्यां पापजेवां रे कहेएधां

णमह्तिन

सांभरे

वांरे ॥ तारैं सर्वे वातरे ॥ एमजा
येजमनेसंघातरे ॥ ११ ॥ चालतां
चालतां घोरचाररे ॥ प्रांणियां मे
हेपिडाअपाररे ॥ हारियाकिय
योछेदेरांणारे ॥ अतिपिडानें पां
म्योछेप्रांणरे ॥ १२ ॥ पडीरात्यआ
थुंतिथांणामरे ॥ जांणेजीवकरी
ज्ञाआराघरे ॥ त्यांतोआवेछेगामनां

For Private And Personal Use Only

प्र. ७५

वाणि रे ॥ खाधमांसरुधीरनांप्या
णीरे ॥ २३ ॥ हाथेंकातारुरानेंकोग
ररे ॥ कापिणपिनोकरेछेआररे ॥
खाइखाइधाधेजमजारेंरे ॥ बउवखा
णाकरेछेनारेरे ॥ २४ ॥ अमेंखाधु
मांसबउतगुरे ॥ पणसोंथिस्वादुना
रूथगुंर ॥ ग्वारुंखादुंतिखुंतमत
मुंरे ॥ जमतोतुंबउमनगम्युरे ॥

२५॥ गल्युंचिकणुंतलेलताव्युरे
॥ वधारकुंधुगारकुंमनभाव्युंरे॥स
धासधरवाधारवटरसरे ॥तेणेंकरी
तारमांसससरसरे॥२६॥गमकडका
पिकापिसायेरे ॥तेनेदुःखंकरेहा
यहायेरे॥करीपोकारपडेअवेत
रे॥नथिरवमातिमारमेंनिसरे॥२७
तारेंकिंकरकहेछगयप्राणिरे॥तें

प.
६०

आवारनेंकेमनजांणीरे॥ यांतोको
येकोयेनुंजनघिरे॥ अमेंकैयेतुनें
अंकघिरे॥१८॥गमकइनेंआपेछे
माररे॥ तेनेदुःखंकरेछेपोकाररे॥
पछेथांनरेपापपोतानांरे॥ जेकाय
कर्यांछेपूरवलानांरे॥ १९॥केछे
मनुंष्यदेहनेंपामिरे॥ मारीअमम
तिसर्वेवामिरे॥ पाम्योनहिमेंपवित्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मरे॥करयां विकलथइ विकर्मरे॥
२०॥ मुरखायें मुकिसदाचाररे॥
मैंतोकांयेनकरयोविच्चाररे॥बाल्
भिंनअपविनखोरे॥ सत्यपुरुष
नोगुणनग्रयोरे॥२१॥ अन्नधन
जेव्रायुषमारुंरे॥खोयुंसत्यमार-
गथिमेंबाहरे॥नज्यानहिंनावेंनग
वंतरे॥ गोव्यानहिंसाचा स—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्रुरुसंतरे ॥ २२ ॥ आविएविमुजनैं
क्रबुद्धिरे ॥ मुल्योजन्मथिमरणस्क
धिरे ॥ आजकोणकरेमारीसाथेरे ॥
एमकइकरेहायेहायेरे ॥ २३ ॥ ना
रेंकिंकरकहेछेप्राणिरे ॥ तेंआ
वाटनेनोनिमुंजांणिरे ॥ जावुं-
जोतेजेजमपुरीमांइरे ॥ जी
यांनथिमगांकोइमांइरे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२५॥ नइमरनेस्यांउछिउधारुं रे ॥
नैकरेकोयेदंडमांवारुरे ॥ यांतोक
र्मकरूंजेगोंजेहुंरे ॥ भोगववुंप
डेछेजोतेवुंरे ॥ जेजेनेरहुंखाव्यो
तुंभातुंरे ॥ तेनुंबांचिदेखाडियें-
खातुंरे ॥ पोष्युंअन्यायेंअसत्यदे
हरे ॥ कर्योअसत्यसगांसुंनेहरे॥
२६॥ तेतोरीयांछेनीयांनेंतीयांरे ॥

२८

For Private And Personal Use Only

ध्य० कोणासगुंथायेतारुंइयांरे॥सत्य
८२ पुरुजनसेव्याकदापिरे॥मारनेंध्या
वारेंध्यायोहोपापिरे॥२७॥कर
तोपापजरुंरलोकगाररे॥ चायो
मनगरुतेगमाररे॥ नोतिवि
कर्रांकामनमांयेरे॥ करतो-
पापध्यापइहायेंरे॥२८॥तेंतो
जमपुरीमेंनजांणिरे॥ तेम—

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रुणिनेविकनश्राणिरे ॥ जोतुंश्र
मथिवितश्रमागीरे ॥ तोतुंपापवु
द्धिदेतन्यागीरे ॥ २९ ॥ मारनेंश्र
मनेंनगम्यागमाररे ॥ रामकडू
द्दियेवडमाररे ॥ द्दियेमारश्रपा
रतेसहेरे ॥ वलिमुखेंकिंकरराम
कहेरे ॥ ३० ॥ थियामुख्यानेंतर
श्वानारेंरे ॥ श्राप्यखावानेंपि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प.
टी.

वाआवारेंरे ॥ तेतोज्ञोत्रोत्रमारे
जरूररे ॥ जागीनुखनेंजावुंछेदु
ररे ॥२१॥ आप्युखावानेंतोतुनेंखा
त्रंरे ॥ तारेंमुकत्रंसोजारेधात्रं
रे ॥ पछेंकेउनेंदिधुद्दोयेकांयेरे ॥
भागवण्यदेंचेछेत्यांयेरे ॥२२॥
एकभागजमदुतलियेरे ॥ बिजो
प्रेतनागणनेंदियेरे ॥ त्रिजोभा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गतेपोत्येंजमेरे॥एमदनश्रदार
निगमेरे॥३३॥ द्वादशमोस्यनाए
दृश्रदाररे॥ मजिमासथायेनिर
धाररे॥रात्यदिवसचाजेदडिदोरें रे
चउयोजमनादृतनीचोटेंरे॥३४॥मु
रवप्यासेंपिउगोछेमनिरे॥मह्यादुःखं
मुंजाणिछेमतिरे॥थियोवफोयोफो
मनरहिरे॥नित्यमारसकेकेमसदि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे॥३५॥ वादिलो मांकरी बीजा दुनरे
॥अतिकष्टे करी ओधंधु नरे॥ ते
यें आयुं पाम्य सुर मेहरे॥ तियां पो
ओहे प्रांणियो गहरे॥३६॥ तेमां प्रे
तवसे जो घणा रे॥ बडभयंकार वि
यामणा रे॥ तियां पुष्प अडान दिख
दरे॥ एक अति विस्तारें ह्रे वर रे॥३७
॥ तियां बेठां देवतनां बाल रे॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देखिजिवञ्चावेतकालरे ॥ कापि
वापिकलेवरखायेरे ॥ वलगांअंगे
अलगांनथायेरे ॥२८॥ कहिले
येरानुंकलेजुंरे ॥ पहेमारेतिरक
रीपेजुरे ॥ दियेदुःखदयानहिंद
लरे ॥ पामेदुःखकखलहिंपलरे ॥
२९॥ तनेंतपेछेतापविषमरे ॥ घ
लेकालनासूरजसमरे ॥ जीव—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोइ गावटनुंवन्हरे ॥ छांयेवेसवा
करोवोहर्षरे ॥ ४० ॥ त्यांतोप्रेतवा
लविजांमलिरे ॥ ग्वावालागांछेपा
पिनेवलिरे ॥ त्यांथिआव्योपुरहारें
प्राणिरे ॥ उग्रालागलेवादरवाणिरे
॥ ४१ ॥ लिपुंमांसपिधुंछेरुधीररे ॥
तेनेदुःखेरुवेछेअधिररे ॥ पहेंजा
येछेजमपुरमांयेरे ॥ —

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लियेजाग भागमागीत्यांयेरे ॥ ४२॥
लिधुं मांसरुधीर पिवानेंरे ॥ राजा
प्रधांनवजिरदिवानेंरे ॥ कहेल
इजाओजमयांथिरे ॥उतावलो-
आपुरमायेथिरे ॥ ४३॥ आपिला
गनेंनिसर्योबारुयरे॥ उत्तरद्वारे
थिदक्षणद्वारुयरे॥ मेल्युंशेररएक
सोलमांयेरे ॥ रामरास्यदिजाये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प· रोलमांरे ॥४४॥ कंपेकायनजदेखि
८६ दुतनेंरे ॥ अतिथरथरफजेछे त-
नेंरे ॥ केमआवल्लोआ दुःखअंतरे
॥ गमकरेओरतोअतंतरे ॥ ४५ ॥
नेनेजोइनेजमनादुतरे ॥ दुःखदि
येछेएनेंअद्भुतरे ॥ मोस्येकरेछेकिं
करमारिरे ॥ जीवभोगवेछेदुःखना
रिरे ॥ ४६ ॥ नित्यआवेछे —

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जमनांगामरे॥ तियांनथिस-
रवजेवागांमरे॥ सांऊपरे नैं थाय
सवाररे॥ दिथेनानामोटांसउमा
ररे॥४७॥नरनारिनेनमलेमेल
रे॥जाणोगोजनुं गाडुं आव्युं थेल
रे॥खाये प्राये थाये रलियातरे॥ व
लिकरेयरस्परवातरे॥४८॥आनु
मांसलागेछेमिठुंरे॥आवुंबिजाको

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

येनुंनदिठुंरे॥यणेदनेमल्युंआज
गल्युंरे आजदनमोरुआवुंनम
ल्युंरे॥४९॥शमपांमेछेदुःखअपा
ररे॥ कष्टपांमेपापकरनाररे॥पा
मेदुःखजायेनहिसघुंरे॥सत्यनिश्च
लानेंदैराकखुंरे॥ ५०॥ कउवां॥ ८
॥ पूर्वछांयो॥ मारेंकरीआवेमो
रला॥ पउपांतिअपविमोकार॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रांकैदमांसमंधिसंभारी॥पापिक
रेपोकार॥१॥कियांगीयांमारांक
रंवि॥कियांगइम्बगानेरानीनारु॥
कियांगियांमाइभगनि॥कियांगि
योत्रुत्रपरीवार॥२॥कियागीयुंधा
मधरति॥कियांगियांग्रनधन्नमा
ल॥आसमेकांकोयेनआवे॥
माराजोइआवाहाल॥३॥एमक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इकरकरयसे॥ रुवेपुख्योतरत्न्यो
तेह॥मायेनयेजमरागनो॥ तेमो
परथरधर्मजेदेह ॥४॥जेनैं ख्यर्थे म्र
तिपरणो॥ करतोकृधर्मस्याघुंकाम
॥तेतोत्यांनात्यांरयां॥ मारेकोवन
न्याव्यांकांम ॥ ५ ॥ मातताल्वारभ
गनि॥ स्कलकलवनेकाज॥ करो
कर्मविकर्मकेई ॥ तेतोभोगव-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वांपआंप्राज॥८॥ एनेअर्थेश्रा
युषखोइ॥जोइनइंविच्यारीवात
सबंधिनासकरवकारतो॥ कस्यांकप
ददगाथाल॥७॥ सानांमांणसनि-
संगत्यें॥ कस्यांश्रधश्रमोधश्रपा
र॥ कुशलरेवानुंक्यांयकि॥खरी
खबराविमार॥९॥ चोपाइ॥तेनें
किंकरकहे छेभाई॥ तनेंसं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारेसुंथायेआंई ॥ कस्यांकर्म
तेधर्मनेंत्यागी॥ मेलिस्करवदुःख
लिधुमागी॥ ९॥ आजुंसर्वेंम
लितारेसाथें॥जेजेकर्मछेतेंता
रेहाथें॥तेतोवेठुंपडशेआवारें॥
कोयेभोगवेनेकेनेसाटें॥ १०॥
तुंजांणतोनोतोमनतारे॥ जा-
णुंथाशेआमारगेंमारे॥ तिया-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खर चिखावानें काज ॥ सन्योग वी
तें केम समाज ॥ ११ ॥ दृष्टी द्दष्टि किं
धां जेपाप ॥ रोद्र रोद्र भोगवोते आ
प ॥ रामकाइ नेंआपे छे मार ॥ ते सां
भलिकरे छे पोकार ॥ १२ ॥ दुःखद
रीया समउलटां ॥ स्त्रख गां तिनो
सरवे मटकां ॥ करे किंकरव उ कंका
स ॥ नारिकी टमांइ काल पाइ ॥

For Private And Personal Use Only

च॰ १३॥ दियेफावािफडफडेप्राणि
९० ॥ बोलिनसकेमुखथिवांणि ॥
थंभिआंखभरहेतिथांथिजी॥ए म
मारहियेजमरिविजि॥१४॥एमक
रतांडोरमासयाय॥तारेसोरीवु
रेप्रांणीजाय॥तेनोराजाछेनामे
सोरी॥गमेतेवुंरूपजियेधरी॥१५
महावक्रनेश्रतिश्रदारो॥देखिवाणी

नेश्रावेकंपारी॥ मुडुंमूरवन्नतिभ
यंकार॥ रवायेमांसलोइनोपिनार
॥१६॥ गलिवागिश्रवतोसांभलतां
॥ वंधछुरिजायेजोवलतां॥ थायेपे
साद्वनेपेटछुरे॥ तिखिनजरेमार
ताछुरे॥१७॥ कहेजागश्रमारोतुंश्रा
पि॥ पुरवाल्पतुंनिसल्पापि॥ ला
गलेझदेझतारेजावा॥ खुवलेझतुं

३१

पासें थिरथावा॥ १८॥ पछें आहुव
राथपद्मतणुं॥ आप्युं होये केडेंथो
डुं घणुं॥ करेनें तापछें वगथभाग
॥ आपेते मांथिले हेनें जाग॥१९॥
विज्ञावें आविनरे वचकां॥ ते गंक
री हियेछे उचकां॥ मुवो मुवोगीयो-
जाणुं स्वास॥ नरह्रिउगरवा निश्वा
स॥ २०॥ एवो अचेतथयो अपार॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नित्यनविनशेवायेमार॥ वेमुहूर्मां
येवोलिनसकै॥ एमकादेह्लग्र
यके॥ २१॥ पर्हेयांघिवालेनिरधा
र॥ स्त्रूलगारेघीलिनरत्नाग॥ संगी
किंकरकरसंताप॥ तपेरुपलम्प्र
त्यंततापा॥ २२॥ वारेंभ्यावेंछेविक
करवन॥ तेनेकांरेकरीफाटेलन
॥ आसिपन्नवनरानुंनाम॥ तेरांवि

For Private And Personal Use Only

प०
९२

स्युं छेवरीइ गांम ॥ २३ ॥ तियां ज
मनादुतपराणये ॥ एह कांटापर ना
खिनें तांणो ॥ आंकडीयालानें अति
आणि ॥ ते गांत चाकारें तन न ताणि ॥
२४ ॥ तेमां निसरे रुधीर धारु ॥ दे खि
आवेस्यां पंखि हजारु ॥ लोह चांच
वाळां पंखि चाखु ॥ ते तो त्रोडी खा
येन न आखुं ॥ २५ ॥ सगे किंकरते

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खा थे कापि ॥ ते निपिडामां पिडाये
पापि ॥ भेला चालना रत्नुं रामाड्रं ॥
पामे कस्य कयुं न थिजातुं ॥ २६ ॥ ए
नें कापि खाये जमसाथ ॥ पाछो सा
जो करे फेरी हाथ ॥ रामन करे जो ज
मरारा ॥ तीन पांचे पंडन निरवारा
॥ २७ ॥ राम भोगवेछे दुःख नारी ॥ प
डिजायछे ब्रथ दिये हारी ॥ रामहमे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णाथाछेहैराणा॥ पेख्येंपेख्येंपिंजर
मराण॥ ८६॥ विजेमासेंसूझावेछेरा
ोर॥ जेनाराजाइनानेनेमेरूपु॥
मोभाभ्यानमामराहेमंगे॥ वल-
गाडेछेचाणीनेसूंगे॥ ८७॥ फाडि
खायछेपापिनुंनन॥ नेनेदुःखें
करेछेरोदंन॥ तेनेकेछेजम
नाकिंकर॥ पापिनांतोतुने-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केनोडर॥३०॥करूपापपेरनरीघु
रुं॥कोयेरीत्यें शरव्युनैव्रधुरुं॥
एनकर्द्दिये फरकार॥वलिश्रापे
छेवोवउमार॥३१॥जइजागनेंका
देछेबाख॥दुलजइवालेछेतेंवार
॥तेतोदुत्तसदा देसाथें॥जेरोंवां
धिलिधोछेवेहाथें॥३२॥कहेदुलमु
रवाधियाचउ॥ आप्यरवावातोसाइ

For Private And Personal Use Only

य. येसउ॥तारेंजीवकेक्यांयकिदियुं॥
९४ आव्युह्वेयतोआवाटेंलीयुं॥२३॥
नथिजमाउनाविपरजन॥नथिआ
व्युमेसंतनेंअन्न॥सारुंखाधुंमेंखु
णोसंताइ॥ह्वेक्यांथिमलेअन्नआं
इ॥२४॥पछेंजमदुततेनेंजोइ॥ख
येमांसनेंपियेछेलोइ॥खाइधाइ
चकचुरथइ॥बउचलोछेमारदई॥ वे

॥ २५ ॥ चालतां चालतां दिने रात्य
॥ पांमे दुःखन के वाये वात ॥ संगें
किंकरते कालाकेर ॥ जेनेनहि द
यामनमेल्य ॥ २६ ॥ आत्मेंआत्में
उगांमेआयुद्ध ॥ बहुफजीयायेछे
वेस्फद्ध ॥ तारेजीवकहेजमदुत ॥
सानेंगालुंकरोतमेंतुत ॥ २७ ॥ केटी
पापकरूतुंमेंआवुं ॥ जेरोकरीनि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य. स्यमारखावुं ॥ तारे न मदुतकेजी
८५ वजालो ॥ कैये पा करूांजेजेटां
लो॥ १६ ॥ हतापाम्यं पंचदेवता
॥ तेतो सरवेआवि ने केता ॥ तेनिज
रविरविह्ले राधांणि ॥ ऋीदकेवरा
वहुतुंपाणि ॥ १७ ॥ तारापावनेप
रमांणोपाधि ॥ नथिसकतादंरच
मेंव्याधि ॥ बउरीशचडेह्लेतुंपर

For Private And Personal Use Only

पणमारी मारी थाकाकर ॥ ४० ॥ रा
मकइ तेंझाल्यो छेगळे ॥ मारीकुरी
नेंकर्यो आगल्ये ॥ रामचलावे छे-
चोंपेंकरी ॥ पडेछडपडेबोमारेंक
री ॥ ४१ ॥ रामकरताजहिमारया
ये ॥ तारेंगांडुवछुरमांजाये ॥ तेना
दरवाणिनेंलागदइ ॥ पछेंजायेब
जापासेंलइ ॥ ४२ ॥ मनगमतोद

प॰ ९६

इराजादंड ॥ पछेंकापेछेपापिनुंपं
उ॥ राजानेंराजानास्करचिर॥ खाये
मांसनेंपियेरुधिर॥ ४३॥ तेमांना
वेकेनेंमनेंमेस्य॥ रावुंस्त्रतिनिर
दयएहोर॥ तेनोलागमागसर्वेंस्रु
पि॥ वलिपंथसरथायेपापि॥ ४४
॥ संगेंकिंकरवउसंतापे ॥
नित्यप्रत्येंनवांदुःखस्त्रापे ॥ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्र निचलावेछेउतावलो॥ग्रापि
मारनेंकरेग्राकलो॥४५॥चालिचा
लिवगयमासजावे॥तारेंगेंजागम
उरग्रावे॥तियांथायछेपांणानिक
द्रि॥पडेपापिउपरूतडातडी॥४६
॥तेणेंमागेछेहाउमुंडदेखुं॥पामे
दुःखतेनजायेकेयुं॥ग्रंगोग्रंगना
गं।नुकोथाये॥करेकोणराकरुमां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साये॥४७॥आप्युंहोयेछनगरछां
ये॥तोयायेरादुःखमांसाये॥वलि
केउत्र्याहूकिधुहोये॥खाइचालेछे
मारगेसोये॥४८॥थायेचोयोमास
पुरोज्ञारे॥कुरपुरेंपोचेप्रांणिज्यारे
॥कुरपुरनांकहुकरण॥लियेलोइ
मांसराकमरण॥४९॥तेमांस्प्रोछुंन
लियेलगारु॥आप्याविन्यानजवा

For Private And Personal Use Only

येवारु॥ आहृकरीआप्पुहोयेअ
न्न॥भावेंजमाडयाहांपवृत्ताहांन॥५०
तेहपुन्यतणाव्रणयनाग॥करीआ
पेछेजुजवाजाग॥केडेरहेतेहथी
तेंरवाइ॥पछेचालेछेत्यांथकिभाई
॥५१॥चालिचालिनियाअेचकतुर॥
तेयेशालिपोचेकुचपुर॥तियांदं
डदियेछेअपार॥जियांजायेतियां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मारेमार ॥ ५२ ॥ मागे खावा पिवा
जोइ मांस ॥ तलेत नने करीनपाम
॥ मारीमोरे खाओसिमनि ॥ जावो
अजगर जायेगनेंगलि ॥ ५३ ॥ एम
कहे मांहो मांहीसहु ॥ तेणेंकरी घां
णीकंपेवहु ॥ अतिअतिशेवसमुं
जागे ॥ जेजेआवे तेखावानें मागे ॥
५४ ॥ तेनोआयुहोयेकांइनांसे ॥ खा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वादेवा नुं राटलुं मासें॥ एविवि प
सछे एहवा टें॥ कदे निकुलानंदते
माटें॥ ५५॥ कडवां॥ ७॥ पुर्वेत्यांथी
॥ प्युणोकथा सद्भ्यनमिति॥ जीव
नहिनरनारु॥ जेजेवा कर्त्तव्य करे
॥ ते भोगव्ये छ्वावेपार॥ १॥ एमदुः
खभोगवतां॥ साडापांचमास थाये
॥ दिनदिननां मेपुरह्ने॥ नेमांतेप्राणि

For Private And Personal Use Only

प.
१००

त्राये ॥ २ ॥ विचित्ररूपे सेवलिवलि ॥
पुछे गुरुनां रे नार ॥ मनुष्य देह पा
मिहरामि ॥ तुनें नरफ़रकार ॥ ३ ॥
देवइ छे जे देह ने ॥ लेपां म्यां तांतुं पा
पिया ॥ तह देहें धर्म थावि ॥
अधर्मं अति होया दिया ॥ ४ ॥
न्याये तु कि अन्याये किधो ॥ वा-
ल्यो महा अघ मारगे ॥

दुर्मतिअतिअंधयह॥ दिठुनहिं
कांयेहुगें॥५॥ इह्यमेंजीनेहालि
यो॥ मुकिमजादमहाराजनि॥प
रलोकनांसरवपरहरी॥ करीरव
विदुःखसमाजनि॥६॥ खोटोटि
खाधिखरी॥ कयेंतेनेंकांलगें॥
मोटोदुःखमांहिपड्यो॥ आमोज
इयेंआमारगें॥७॥ लागआपिन

For Private And Personal Use Only

न्यावोणा॥ निसरुपुरषिकारु॥
॥ आज पछिआनागीया॥ आवुंक
रीज्ञामांकोयेवार॥ ८॥ चोपाई॥ल
इलागलोइ मांसतणो॥ करेछेअ
तिहेरांणघणो॥ जियांतियांथि उ
ठेछेखावा॥ खाइथाइ पछेंदियो
जावा॥ ९॥ काव्योवारेपडेन्निरमा
र॥ जेमलोहनेघडेलोहार॥ आवि

मोरछापडियोभोम्य॥ थियोवेक
ष्यनहिफोम्य॥१०॥ पछेघसरडी
घांघोकरी॥ उगडिनेंश्रापेमारफ
री॥ जउघडेनेंपडतोजाये॥ नित्य
मारकेटजोरवमाये॥११॥ मारीकु
टीनेंमोरेजकिधो॥ जेमचोरमार
वानेलिधो॥ घडिएकमांहिंडाडेघ
णुं॥ नहिंपरीमांणचालवातणुं॥

प॰ ॥१२॥ एमदुःखेंवितेरवटमास॥
२०१ आवेबह्मापदपुरपास॥तेतेपाद
रह्छेवैतरणि॥दुःखदायितेनजा
येवरणि॥१३॥सतजोजनमांपर
वाह॥परुपावेंपुरणनहिथाह॥
तेमांसर्पविंछिजंतुघणा॥सर्वेञ्च
हारीजोइमांसतणा॥१४॥वजिउ
पस्येउडेमांसारी॥जोहवांचवाजां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंखिनारी॥ भयंकारस्यांभमराव
ले॥तपेवेलुंतेमांपगवले॥१५॥
तपेस्करज्यउपस्यतिखो॥ जाणुं
पुलयनाकालसरीखो॥ एवोद्
खिसर्वेसमान॥ जीवकरेत्राह्रि
त्राह्रिमान॥१६॥ नारेकदेहुंउता
रनार॥ गायेत्र्यापिहोयेतोसंभा
र॥ त्र्यावेगायेतोउतारेस्करवे॥ने

For Private And Personal Use Only

य०
२०२

तोउ तरी न्हाघणे दुःखे॥१७॥ तेतो
क्यां थिआपि होये आणें॥ पछें ते
मांतांरो छे परांणे॥ बुडे मुउर नेनि
सरे बाल्य॥ वस्त्र गेथ्यं गमांजं नु आ
पार॥१८॥ मा थेजो ह्रवां वे मन थान
क॥ आवि पडे पंखि ग्र वां नक॥
भंगी भत्त्वो माथा नो लिये छे॥ तां विचार
रापं खि दिये छे॥१९॥ कडकलि ये कान

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाकत्रोडी॥ कइ कनारवेहुंआंखुं
नेफोडि॥ एमतनखायेकापिकापी
॥ तियांदुःखपांमेबहुवापि॥२०॥
ऊजसमऊरादुछेअति॥ तेषांक
रावेहुएनेंगति॥ हादनेधक्रजीथाये
तनसून्य॥ मारतेतेसाफंकरवुंपुन्य
॥२१॥ सहीदुःखबालेसातमास॥
तारेआवेदुःखदपुरपास॥ तेतुदुः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प.
१०२

खजायेनइकपुं॥तेतो सर्वेराखाति
येंसयुं॥२२॥ मोरामोटावाघवरुमा
ल॥ तेतोजाश्यातियांनतकाल॥ला
विवलगाउंआंएनेशरीर॥खायेमां
सनेंपियेरुधीर॥ २३॥ मोटादांतनें
फाडेलमुख॥ खायेतनजोडीदियें
दुः॥ तीयांघांतिथापाडेपोकार॥
भायोकोयेकरोमारीवार॥२४॥न

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थिखमातुं नित्यनुदुःख॥ कहोके
मपांमुहवेसुख॥ तारेकिंकरकहे
छेतेवार॥ सकलसुखनानञ्जज
गस्तु॥ २५॥ पापकरतांपाछुंनव्य
नोयुं॥ खोटासुखमांजीवलखोयुं
॥ हवेसुखनीलालचत्यागी॥ सुसा
कर्मनोगव्यञ्भागी॥ २६॥ एमदुः
खदइजोञ्पार॥ पछेकादेछेपुर

For Private And Personal Use Only

पृ० थिवार॥ त्याथिनानाकंद प्रुरुत्र्यावे
२०४ ॥तेतोत्र्यागमासवितेत्र्यावे॥ २७॥
तेनादंडछेगुजविज्ञात्ये॥जीवनो
गवेछेवउभात्ये॥ कापेतननति
तनिखाये॥वनिमुखेंकेछेवायेवा
ये॥२८॥त्र्यावुंमांसकोयेनुनदिठुं॥
जमकेछेलागेछेजोमीठुं॥मांसपा
पिनुंक्यांथकिमले॥एमवखाणुं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जमभगले॥२९॥ एमजिवनें
दुःखदियेछे॥ लागलोइमांस
नोलियेछे॥ नानाप्रकारनादंड
दइ॥जमकिंकरवालेछेलइ॥
३०॥तेनीतेजमारगकेवाये॥स्न
कतीनेस्वरूपथाये॥दांनपुन्य
पाल्योसतधर्म॥कस्यांहोयेग्रहि
मादिकर्म॥३१॥तेनेंएवाटमांन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च. हिदुःख ॥ दुःखपामेप्रभुनाविमु
१०५ ख ॥ एमजमपुरोनिवारजांणो
॥ कहुपुरांणोनेपरमाणो ॥ २१ ॥
पछेनवमानेनिरधार ॥ पोवेस
तसोरमोझार ॥ स्कतममांलपा
विमेंसोहुं ॥ बलेहाथपगभागमे
हुं ॥ २२ ॥ एमसर्वेअंगरानांवाले
॥ पुन्यविन्याशांतिकोणवाले ॥

For Private And Personal Use Only

छ्नवस्त्र जोडा पांणि गम ॥ पंखा
चंदन घर विश्राम ॥ २४ ॥ चंद्र वा
आदि आपे जो दान ॥ तेणें सु
ख पामेरा ने दांन ॥ ते तो न आप्युं ने
न अपाव्युं ॥ मारें ए दुःख सौ जोग
वाव्युं ॥ २५ ॥ दइ दुःख कादी पुख
स्य ॥ माथे पडे छे मुदगर मार ॥ त्यां
थि दशा मे मासे जरूर ॥ आवे छे रा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घाणीरे डुङ्गर ॥२६॥ तेनो अतिशे
छे भयंकार ॥ आ विजा वे छे त्यां
ना रेनार ॥ आप्य अमने खावुं कां
इ खावा ॥ तो तु नें अमें आपियें जा
वा ॥२७॥ क्यांथि आपे आप्युं नही
केडे ॥ सुख्या दुत पछें आवि पिडे ॥
खाइ धाइ ने कोटे छे बारा ॥ नथि वा
टमां स्फरव लगारा ॥२८॥ त्रो माहे

For Private And Personal Use Only

यरवोरागुरुजेवा॥ जमरूपधरी
आवेरावा॥ देखेदुरथीआवतारा
ने॥ जीवजोइराजिथायेतेने॥३९॥
जमहुतनेंकहेछेवाणी॥आआ
वारेगुरुगुरुवाणी॥ जोनेंभेलिछे
अरवनीकुंडि॥ करशेतमारीगती
जोभुंडी॥४०॥राममनमांआनंद
आणि॥अतिघ्रफुलितथायेप्रा

प. णि ॥ जांणे हम णांसुकावशेमुनें ॥
१०७ त्यांनोआविरवायेछेवपुनें ॥ ४१ ॥
तेने दुःखे दुःखिजीवथाये ॥ कहेम
रमांणो हुं नेरवमांये ॥ तारेजमगु
रुकहेछेपाणि ॥ असतगुरुनी ए
धांणिनजांणि ॥ ४२ ॥ आरवीवि-
श्वनां राख्यां तां फेल ॥ वलिविभि
चारिनेंवरलेल ॥ करतारवोटोप्रभु

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नोआकार॥ नंदताधर्मनिमसदा

चार॥ ५२॥ हतांएवांघसीइरधां

ए॥ तेजिनपडितुं नेंओजखांएष

॥ खोयोजनमतेंखोगनेसंगे॥ए

मकइवजावेछेसंगे॥ ५४॥ एमवि

तेमासञ्रगीयार॥ आवेश्रयोत्रष

णामोझार॥ तियांजीवनेंआवतो

जोइ॥ थायेराजि॥ जमसउकोइ॥

For Private And Personal Use Only

४५॥ भलें आव्यो तुं भोगवा सुख॥
तुनें जोइ चलव लेहे सुख॥ जाणी
हमणां जाएं तुनें चावि॥ पणरवा
झं तुं नें नवरावि॥ ४६॥ त्रियांरादां
जलहिमसररवां॥ तेनो वरसा वे
लेमायेव र्षा॥ तेणें भीजिभ्रजेजी
ववलिउडेदाहआपि हो यकांम
लि॥ ४७॥ पछें सांथि चलावेहे मगे॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माससाडाअगीयारलगें॥देखेहें
दुरूछिद्रोरसारुं॥पणमांहिछेजम
ह्जारुं॥४८॥जोइरियाछेजीवनिवा
ट॥खावामांसपिवाजोइमाट॥आवे
छेसउउढिनेसांमा॥केछेअमेतारा
काकामामा॥४९॥अवलेमारगेंचलं
आोलुनें॥तेतोखावामारुंआसक्नें
॥आप्यखावाजासांदेयेजांलप॥एम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केह्नेसद्गुजमराण॥५०॥पहेलेअंगे
चोलिमरचुंमरी॥मिठुंतुंश्रीखाये
खायेंकरी॥एनुंनामसिताम्ननग
र॥व्यापेसितफजेथरथर॥५१॥
गोदउंगादलांसज्यासोये॥ओछा
उओदिशांआप्यांहोये॥तेणेंसुख
पांमेएहप्राणी॥माटेदांनदेवुंराखुंजा
णी॥५२॥तेजोनाप्युंहोयनिजहा

For Private And Personal Use Only

य॥ तारे संभारे छे सगां साय॥ तेतो
क्यांथि आवे एह केडें॥ पछें रुवे घां
णि राह्य पीडे॥ ५३॥ त्यांथि जमदुतद
ईमार॥ चलावे छे घाणि नें अपार॥
बउदुःखें वि ते मा सबार॥ आवे बो-
भी निठुर ते वार॥ ५४॥ तियां जमना
दंड नें जोइ॥ भय पामि प्राणि दियेरो
इ॥ के छे आरा तां काढ छे सानां॥ न

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थिकेसुकेसरचंपानां॥५५॥ तंचा
निचांउडेछेपवंनें॥ जाणपुंहमणां
अउत्रोगगनें॥ तेनेंजमकिंकरण
नकेछे॥ नथिकाउएजोइउडेछे॥५६
॥तुजेवानोकरेछेतपास॥मास्येजो
इउडेछेआकाश॥ तेसांभलिजिव
फडकेछे॥ कंपेकालज्यछातियउ
केछे॥५७॥ एवावेतनाप्रहारसांभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लितेवामांनेछेपोतानेंवलि॥क
हेकिमांजाउंकेमकरुं॥आमारथी
कुंकंमरगरुं॥५८॥नकरुंदांनपुं
न्यसंतशेवा॥शेमातेजमकिंकर
जेवा॥आपिपापियेंअवलिमति॥
करावित्रआमारगमांगति॥५९॥क
रूंमोटाकमाइंतुंकांम॥मोकल्यो
मुनेंजमनेधांम॥रामसोवेंडाली

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गणोसउ॥ कहेनि कुलानंदगुंडुं
कडं॥८॥ कउवां॥१०॥ पूर्वछांयो
॥ संकटकयांसोलेसेरनां॥ सांखे
घेकरी में मुख॥ पणजरम्याथि छेला
खघणुं॥ माहुदंउतणुंत्यांदुःख॥ १
सावासदगुरुसंतजो॥ अंगेलागो
नहिउपदेश॥ पायेंपूरणपाचियो॥
लियेस्करवक्षांथिजवलेश॥२॥ एम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जमदुतजोरेकरी॥पंथकरावियो
बहुपेरय॥वर्षवितुंएकवारमां॥तारे
पोच्योसंजमनिशेर॥ऐभासंजम-
निशेरनि॥वलिअतिघणुंछेअनुप॥
तेहजपापिप्राणिनें॥देखतांथायेदु
खरूप॥४॥चोपाइ॥पुन्यवांनहोये
कोयेप्राणि॥देखेसंजमनिशेभाग्रा
णि॥तेहपुरतणुंपरमांण॥कहुंसु

For Private And Personal Use Only

प॰ णजोसङ्कस्कन्नांण॥५॥ सतजोजन
११४ नंबायेछेयें॥ पोलिपणसोजोजन
केये॥ किल्लोकनकनोतियांराजे॥पो
भेवारस्कंदरदरवाजे॥६॥एकसोना
नोबिजोरुपानो॥त्रिजोठारत्रांबानो
थो ...नांनो॥चोंथोहानोदरवाजोछेयें
...ारवाररपुरीनोकेयें॥७॥तियां
...नोजे वांकर्मछोये॥ तेवेद्वारजाये

जीवसोपै॥ उत्तरद्वारस्थनोपमश्च
ति॥ तियांप्रत्यक्षानकरेगति॥ री॥
जीयांराजमारगचौराशौरी॥ वडशो
भायंशोभेघणोहि॥ मेदिमोजरूवेजी
प्णुंशोभे॥ जीश्पुष्पजाउमनलोभे॥ ॥ऐ
मिविचांल्पेकरेपंक्तिरच॥ शोभेमो
भिसांवउवैभव॥ ध्वजापताकास्यांव
उपेख॥ तेतीवांध्यांघणांघेरोछेख

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०॥ राज्यदुर्ग द्वारस्फारकमणी॥
कनककभाउे शोभे छे घणी॥ वलि
ब्रह्मानापुत्र जे चार॥ भ्रवणदेवतावे
गाह्ले द्वार॥ ११॥ पित्तगणजेअग्निष्वा
त्तादि॥ तेनागोत्रपुरुषससवादि॥ ते
लोंआपिआशिष्युंजेइयां॥ तेनेंभावें
नइवद्यपातियां॥ १२॥ तियां पुन्यवाजे
त्रिवजाये॥ देखेविष्णुसमधर्मराये

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हवे कहुं अधर्मि निरित्य ॥ देखे एपुरी
महाभयभीत ॥ १३ ॥ एनें लइ आवे लोह
हार ॥ मारें करे कायर पोकार ॥ भलो
लोह गोखरु वे मारग ॥ ते दुउ पस्य मं
डावे पग ॥ १४ ॥ मोटा स्वान सर्प सिंघ प
ण ॥ मले सां माएवा बियामणा ॥ गिध
गर्ज कवा विलवार ॥ करेउ छुरा हूभ
यंकार ॥ १५ ॥ एवा ड्राहू सांभलतो कानें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व ॥व्याव्यो आयछे पासें राजाने॥ राज
११६ द्वारेलो अनांकमाउ॥ अतितिखातिव
लाअंगफाउ॥१६॥ तेमांत्तांणिजा
येजमजोरें ॥ फाटेतनत्यांवा
णिवकोरे॥ पछें आवेछे राजा
नेंपास ॥ देखि—

For Private And Personal Use Only

रूपपामे आलिवास ॥ १७॥ रोसें मत्सा
तिशेरि राज ॥ देखे धर्मने मह्न विक
राज ॥ सासुं जोपुं पए न मजाये ॥ जो
दूजी वकरे वा पेवाये ॥ १८॥ जिधोलो
हतणो दंउहाथें ॥ जाएगुं कोपिरीपा
पापि माथे ॥ श्रति आंखुं देखे भरीर
नो ॥ जांबादांत मुखबास हिये ॥ १९
॥ मो दिडा दिलो दाजेवुं देह ॥ देखे पा-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिरूपएवुं तेह॥ एवां सुर्पस्कतध
र्मराये॥ तेने पुछ्युं दु तें लागी पाये॥
२०॥ रूपमें आव्या प्राणि एकलह॥
ते निज्या पोल्होच्या गन्या सई॥ तारे
रायें ते करी विचार॥ पुछ्युं चित्र गुप्त
ने तेवार॥ २१॥ कह्यो आप्राणी नां पु
न्यपाप॥ जो इस्नानुं तेरी पोजवाप॥
तारे प्रधान केहे सुणो राय॥ एनां पा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पकयांनव्रजाय॥२२॥ कोतोसंदे
पेंस्कवतुंस्वामी॥एणेंकस्फंजेनरत्त
नपामि॥अतपुंअवणेविषेइगान
हरीकयामांनदिधाकांन॥२३॥रमि
कद्यापारसमंजरी॥एवांबोसांभल्या
भावनरी॥नयणेनिरखिनारीनुंस
रूप॥कस्यांनेत्रनेमांतदरूप॥२४॥
कस्योत्वचायेंनारीनोस्परश॥गाय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य० जिह्वायें नारि नाजस॥ नाकें निरु
११८ क्तवासनाजे तो॥ मुखें श्रीकृष्णमु
खें नकेतो॥२५॥ करें पुरणविकर्म
करूं॥ पगें पगजां पापमां नरयां॥
जेजे वडें थायें शुभकर्म॥ तेते वडे
कर्स्कं छे अधर्म॥२६॥ तवुं सुणिबो
ल्या धर्मराय॥ सुणपुपापि तें करुो
य अन्यौ॥ कस्या गुण नजांण्या तें केम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥कांरेकन घनिथियोराम॥२७॥जे
रोंउदरमांकरीसार॥आव्योमनु
ष्यनोअवतार॥मागेदेवमनुष्यनुं
देह॥पांम्योअभागीयातननतेह॥२८
॥भर्त्तखंडजंबुद्विपमांये॥रहेवग
टथीहरीज्यांये॥राविमोमिमांनरत
नपामि॥जारेंथियोतुंजुगदरानि॥
२९॥करीआव्योतुंअतिअनेष॥

For Private And Personal Use Only

प. गसुंघुंनाश्रमेनैसमूथ॥वोन्यार
११८ यकरीअतिकोप॥पापिकरीतेआग
न्यालोप॥२०॥जोमृगलोशशाशिसूर
ज॥इशाअमरेशावलिअज॥तेतोन
लोपेआगन्यालेशू॥तेथीपणतुंथीथे
सरेश॥२१॥जेनेंनगणयाहकमीहरीनें
आमीणतुंतुंकामकरीने॥नथिजोया
जेतुंताहंमुख॥जाजापरोक्ष -

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुना विमुख ॥ ३२ ॥ लइ जाओ किं
करयां पिचार ॥ दियो दंड प्रचंड अ
पार ॥ रावुं छ एवुं किंकर लगले ॥
वालाजीवनें बालिने गले ॥ ३३ ॥
कलो मारव्यखाडा मांहे भों ॥ जालि
माति श्रेपा विश्वसभो ॥ पले अने
कळा दुहूलाव्यां ॥ तत्त्व गनि मां
यतपाव्यां ॥ ३४ ॥ तेणें बाले छे पा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ पिजुंतन॥ जेणेंजोप्यां हरीनां व
१२० चन॥ दउदइपापनांणथांण॥ किं
करकरेछेबउहेराण॥२५॥ पछें
तनतजेतेजमांथे॥ तेनेंदुःखकरे
हायहाये॥ हायहथेलीमांखिजा
खोडे॥ पगघुंरिघणोंफ्रंत्रोडे॥२६॥
ग्रांरव्यमांगजघालेलोहाना॥ मुंउ
हाजकरेछेमोटाना॥ कोईजिनमां

दशियेंनांणि॥ जेकोयेबोल्योतोअ
सत्यवांणी॥ ३७॥ बाल्हेकांनशिशां
उंनां घालि॥ जेनेविषेनिवातलागी
वालि॥ पछेदंडनोविजोउपाय॥क
रेछे विचारिमनमांय॥ ३८॥ करेलो
हनणीनरनारु॥ तेनुंतननतपा
वेअपार॥ पछेकिंकरकेविभिचारो
॥भरोबायरूमनेंविचारो॥ ३९॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प०
२२१

जेणोवधमरीएकवार॥ तेनिभ
रावेवारहजार॥ परपुरुषनेंपरना
रि॥ पांमेत्रिषेकरेंदुःखमारी॥ ७७
एमदुःखदेषेछेअनंत॥ केतांमु
रेंनावेतेनोअंत॥ शिघ्रथियुं-
हजीशिघुंथाशे॥ जीवनर्कनाकुं
उमांजाशे॥ ४१॥ त्यांतोतपाशित
पाशिपाप॥ करशोजमनादुतसं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ताप॥ रतिरतितगुंलेखुंलेओते
प्रमाणे तेवोदंड देशो॥४२॥पलप
लनांपापसंभारी॥ काओकिंकरते
मारीमारी॥ थाकिजाओजमदुत-
जारे॥पछेपुछओपापिनेंनारे॥
४३॥भाइअमेंकायातुंनकायो॥
भलोमारअपारतेंखायो॥एमक
इविचारेछेजम॥हवेकरीयेकोचे

For Private And Personal Use Only

प॰ कउद्यम॥४४॥ योडेमारेदुःख
१२ घणुंपाये ॥ रखोगोत्तिकाहियें
उपाये ॥ तयेंढोल्योएकजुनो
जम॥ सवेंमारनिमुनेहेगम॥
४५ ॥ ताजुलजाहेंताउणक
रे॥ मुखआंख्यमांमरचांभ
रे ॥ जमणामामारालोहना
कू ॥ एमभांगो —

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंगगां ठेगां गे ॥४६॥ गत्नुद्बावो
नेंघडीवार॥ तेतोंपांमन्नो दुःखअ
पार॥ छातिमांयेमारोमोटोघण ॥
भांगी कचरिनाखोव्रघण॥४७॥को
णिकांडांगीठणमांघाव ॥ एहकपा
मरमनादाव॥ दुंदि घुंटिनलिवलि
वाहो॥ नखविन्नावलितांणीकाठो
॥४८ रामदियोटाओगोतिदुःख॥तो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अ हमणांएकावेविमुख ॥ पछेतेमज
१२३ किंकरेकिधु ॥ योइमारेदुःखेवउ
रिधुं ॥४९॥ तारेकठणग्रामीनेप
ड्युं ॥ कस्यांकर्मतणुंफलऊड्युं ॥
जेवोइयांमाल्योमगरुर ॥ तेवोति
यांमारिकस्योचुर ॥५०॥ मारेंसङ्क
विचारजोवातपोतेपोतानिकर
णीमांघात ॥ खउसाकुंपोतानुंकर

For Private And Personal Use Only

जो॥ रूणीजमनादंडनेडरजो॥५१
॥ रवरूंछेएरवोटुंनहियाये॥पछेवि
च्यारशोमननमांये॥ कहेनिकुलानं
दप्रभुकथी॥ प्रभुभज्याविन्यासुरवन
थि॥५२॥ कडवां॥११॥ पूर्वछांयो॥
पछेंप्राणिपोकारीनें॥ कहेप्रभुणो
धर्मनेदांन॥ अधर्मआवोकांकरी
॥कारेकोयेनसांभलोकांन॥१॥जे

प. १२४ दिथितनमेंत्यागियुं ॥ तेदिथिजमा
रेमारू॥ अंगोअंगभांगीतियां॥ तो
यंहजिनआमोपार॥ २॥ धर्मनामं
त्रिदधारियुं॥ जारेंदयानहिदजमां
ये॥ मुजजेवाकंगाजपर॥ नथिक
रुणाकांये॥ ३॥ मेंजाण्युंमनमाहे रे॥
घुनावगसद्बोधमेराये॥ त्यांतोसामुं
कोपकरी॥ मुनेंनाख्योमहादुःखमां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ये ॥ ४ ॥ एवुं श्रुणीरायेबोलिया ॥ तुं
सांभल्यपापिवात ॥ जमदंउनेंतें
ज्ञुगजांणी ॥ घणिघणिकरतोघात
५ ॥ कयुं शास्त्रसंतेंमजी ॥ श्रुतितें
नमान्युं मन ॥ आजमनाबहुश्र
मनें ॥ जेनेंछे हरीनुंवचन ॥
६ ॥ साचासंतथिश्रुणुनहि ॥
सत्यशास्त्रनुंतेसार ॥ निज

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. द्रोबनथिदेखतो॥ करछविजा
१२५ नेपुंनेघार ॥ ७ ॥ हवेजइजा
ओजमदुतरानें ॥ आपुंछुं
आगन्याएह॥ अग्याविणजे
नर्कछे ॥ हवेभोगवेमरतेह॥
८ ॥ रामरायेंआज्ञाकरी ॥ ध
रिजमदुतेंचित॥ करवाछेकं
पनर्कना ॥—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाभयंकारभयभीत॥१९॥तेजु
केकरीकडुंजुजवां॥कउनरकनां
जेनाम॥जेह्पापैंपडेनर्कमांपापि
पुरुषनेवांम॥२०॥पंचमस्कंधेपरि
कृतवृत्यें॥श्रुकेंकयांनर्कसोपे॥वि
धेंविधेंनेवर्णाव्युं॥तमेंसांनलजोम
ककोये॥२१॥तामिस्त्रअंधतामिस्त्र
॥रौरवमहारौरवजे॥कुंभिपाकनं

For Private And Personal Use Only

य
१२६

कालसूत्र॥असिपत्रवनदुखदव
जे॥१२॥शुकरमुखअंधकूपकेये
॥कृमिभोजननेसंदंस॥तप्तसुर्मि
वज्रकंटक॥शाल्मलिजांणोअोद
दश॥१३॥वैतरणिपुयोदप्रांणरोध
॥विशसननर्कदुःखवलि॥लाला
नक्षसारमेयादन॥अविचिअयः
पानमलि॥१४॥एकविंशनर्कएक

यां॥ स्नाय कर्दमरह्यो गरण भोजन॥
व्रण पीलदंड ष्णक॥ वलिश्रवटरो
धन॥ २५॥ पर्यावर्त्तन ष्ठ विमुख॥
ए सर्वे दुःखनां स्थल छे ॥ नर्क अग्न
विन्ना नामकयां॥ एपापिनेंपापनुं
फलछे॥ २६॥ जैणें जे वांकर्म कस्यां
॥ तेहनें तेहवो दंड॥ पापिजिवनेपी
डवा॥ करीयाअग्नि विन्ना कुंड॥ २७॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ जेवेपापेंराजीवपडे॥ नर्कमांनरना
१२७ स॥ अवरादइहवेसांभलो॥ कहुंन
र्कतेनिरधार॥१८॥ परधनपरदा
रापापि॥ हरेपरनांबाल॥ एहपापें
एहजीवनें॥ नारवेतामित्रमांतत
काल॥१९॥ अतिभयांनकनुरौर
डो॥ जेमांजंतुअंधार॥ जमदुतेंग
लेबलेंबांधि॥ नारव्योतेहमांझार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥२०॥ खावुं पिवुं न देवुं केवुं ॥ हवे
जो जे पापि ताराहाल ॥ रामकडुने
ताडे पछाडे ॥ पाडे राडो राउ रकंगा
ल ॥ २१॥ कहे कियां जाउं केम करूं
॥ केम पामिज्ञा दुःखनो पार ॥ पिउ
मां इ प्रालियो ॥ करे कायरसादं
पोकार ॥ २२॥ पछें कइ ककजपें
काढियो ॥ रहनरकथिवार ॥ पा प

For Private And Personal Use Only

य. त्रिनेंपापिनां ॥ नारखेंअंधता- तपा

१२९ मिस्त्रमोक्षार॥ २३॥ कपटविक

टकरतोभरतो ॥ पापिपापमां

पग ॥ भोलापुरुषनेछलि

वलि ॥ लेतोधनस्त्रियते-

नुंठग ॥ २४ ॥ राहपापें-

नारखीयो॥तेहअंधतामि —

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खमांइ ॥ यमदुतनामारथि ॥ जेनि
मतिगइछेमुझाई ॥ २५ ॥ मह्लाअंधा
रुंजेमांमोरां ॥ जंतुअतितेअनिगो
अनंत ॥ रोमेंरोमेंतननेोडिखाये
॥ तेनोनआवेपार ॥ २६ ॥ यउयकि
जेमकापतां ॥ वलिहलिपडेतरुजे
म ॥ तेमपडेरणांणियो ॥ इयविउ
पसाणम ॥ २७ ॥ निराधारनिरासय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इ॥ बोलिनसकेसुख॥ निस्तुविन
वानवुं॥ कैरतुंकरलमायेदुःख॥२८
॥मेस्रानच्छावेमारतां॥ यमनिरद
याजोर॥ लेनेव्राण्यपदुजोपापिचो
पाडेवडुदुःखवकोर॥२९॥ पुरण
दुःखदईदई॥ कादियोकोयककाल
॥कर्मतपाशितेहनां॥नारखोरोरखे
नकाल॥३०॥ अथमैइयांधन्नमे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ति ॥ पोष्युं निजकुलनिजदेह ॥ ग्र
पस्तारथसारीमारी ॥ जात्यजंतु नि
जेह ॥ २१ ॥ पछे निजकुलनिजदेह
ने ॥ तजिजाईजमपुरेजंत ॥ तेह
पडेघोरखमां ॥ जेमांदुःखनोनहि-
अंत ॥ २२ ॥ विकलाजेमत्योभया
नक ॥ नेमांजमदुतेकरीजोर ॥ ना
ख्यांपरारधेरानर्कमां ॥ भुख्येदुःखे

For Private And Personal Use Only

प.
१३०

पाडेवकोर॥३३॥रात्यदिवसदुःखी
रहे॥नहिसुखनोलवलेश॥जाये
घडिजुगजेवडी॥हेरांणगतिहमे
श॥३४॥कईककालेबालकादे॥
जमदुततेरादजन॥पापिपडेमहा
घोरवें॥जेमांजंतुचोडेतन॥३५॥अ
जोकमांअभागीये॥मारयातांजीव
नेंजेम॥तेजीवमरीरुरुथइ॥मारे

छेअधर्मिनेंराम ॥३६॥ जीह्वास्वादे
जीवनां ॥ मारीनेखातोमांस ॥ एमज
खाधुएहनुं ॥ तेमजकरीतपास ॥३७
॥ अन्यपापअणुंजेटलुं ॥ वलिकलं
होयेकोयेथलु ॥ तेतेसंभारीसरवे
॥ दीयेदुःखतेहपलु ॥३८॥ एविरित
रूतणि ॥ राओरंकनोएकन्याये ॥
अधिकनुन्यएनेनहि ॥ एमजांणजो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प.
१३१

मनमांचे॥३९॥ रुरुनां मेकव्याद्कैये
॥तेमां सचो उिचोडी खाचे॥ जे जीवे नि
ज देह सा हे॥ करत्र्प्रसत्य ठ पाये॥४०
॥ तम दुःखने जोग वे जा रे॥ नि सरे न
र कथि वार॥ पा पि पडे कुंभी पाकमां
जीयां दुःखनो नहि पार॥४१॥ पक्कुपंखि
जीवतां॥ रांधिनें खातो मांस॥ तेनें ते कमांरां
धियो कस्रो ते वजतननो नासं॥४२॥ दीधां दु
खव कुजीवनें॥ मेरू मनमांना विरति॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेपापैंपड्योनर्कमां ॥ करीकमा-
णिस्थाविमति ॥ ४३ ॥ उत्सूत्रनावि
स्त्रभागीयो ॥ जैनेनद्दिकल्पणालेश्
॥ कोयेनकरेकरमगावां ॥ तेवांकरे
स्रुतेश्र ॥ ४४ ॥ स्वापस्वारथेंस्प्रन्
थनो ॥ करतांनकरेविचार ॥ ज्ञुत्नम
सदेंजक्तनां ॥ रास्योंरुद्रामोजार ॥
४५ ॥ प्रपंचनुंनस्पृच्छवुं ॥ कैयेक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरनोवुलिकोर ॥ एहथ्याहेत्रयेम
सो ॥ कोयेवातनिनइखोर ॥ ४६ ॥
तेहपायेंपाधिकरे ॥ कुंभिपाकमां
परवेश ॥ जमदुतदुःखदेघणुं ॥ जी
यांसुखनोनहिलेश ॥ ४७ ॥ दुःख
नादरीयाउलटा ॥ वलिमेलिहिधी
मरजाद ॥ आव्यांमलिअघआप
णां ॥ करेकियांफरीयाद ॥ ४८ ॥ ह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हूमे लिने हालियो ॥ त्राधिह पमसा
थें वे र ॥ ए वाम्प्रधर्मि नेजोइनें ॥ कौ
केलें आवे मे स्य ॥ ४८ ॥ ए विरितनके
नि ॥ कहि ॥ पंचमस्कंध मांये जेह ॥
तेमनि तेमम्मे लखी ॥ कहेनि कुलानं
दएह ॥ ४० ॥ कडवां ॥ २२ ॥ पूवंछांयो
॥ हरिजनड्रोहि विष विरोधि ॥ गुरु
देवनोघुनेघार ॥ एवीजेम्र मागीयो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्र॰ ति॥पडीनर्कमोझार॥१॥ जेजेवां
१३३ कर्मकरे॥ भाइतेनेजनेवोदंड॥प
हुंपापलशिनाखियो॥कालस्कन्न
र्कनेकुंड॥२॥पितावीषवेदडो द्वि॥
पन्नवेधि करेजेपाप॥तेहपापेंका
लस्कन्नमां॥पापियांमेहुसंताप॥
ड ३॥तेकुंडंउनेतुंडेघणो॥एनेंउपमा
केनीदेये॥पापिप्राणिनेंपिडवा॥

For Private And Personal Use Only

सर्वे दुःखनो सिंधु केये ॥ ४ ॥ दस हजार जोजन फरतो ॥ चांद्रा वरणो तेह ॥ उपरथी हे ग्रीष्म ग्निअर्के ॥ अग्नि लपाव्यो राह ॥ ५ ॥ चोपाई ॥ नुरव प्यास पिडे त्यां अपार ॥ वले देह अंतर नें वार ॥ मारथां पछ्डाडि रिरनाजे वाल ॥ तेने रुले रवे किंकर ततकाल ॥ ६ ॥ रालां हजार वर्ष रुधी ॥ मारे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छेरानरकमांरुधी॥स्फवेबेसेजोरे
त्रमोथाये॥धोडेपडेगोटिकजांखा
ये॥७॥तउफडेफडफडेघणुं॥ग्रा
व्युंपापकरेजणापणुं॥लिधोयेरी
वेरीवश्राषियो॥मारोमारोकहेदुः
खदियो॥८॥इम्हविचारिरियाछोम
नमां॥करोइहारव्यतिरानातनमां
॥पछुंतेमजदियेछेदुःख॥पामेपी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उाव भुनो विस्तर॥९॥एविरिते
विसेकइदन॥पछेंनारवेधर्मिपच
वन॥प्रसिजेविवेउकोरेथार॥एवा
ताउनांपच्चप्रपार॥१०॥मिनधर्म
वेदेकपोजेद॥आपत्काल्नविन्या
तजेलेद॥परनोजेपार्खंडमारग॥
नरेरसेवसेतेमांपग॥११॥निच
धर्ममांइवांधिनेद्॥तेमांवरत्नावेनि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प० जदेह ॥ करे ऋम्भ महारम्भ मागी
१३५ ॥ कुलधर्म पोतानो जो त्यागी ॥ १२ ॥
राह पावे असि पत्र वनें ॥ पड़े सांलि
सहे दुःखनने ॥ श्रीउें थाये कपाये छे
पंड ॥ हियेदुतरगपसुधिदंउ ॥ १३ ॥
तेलोंकरी करे हाये हाये ॥ मुवो मुवो
आवि मोरखाये ॥ फलपाषंउध
र्मनुं राह ॥ भोगविनरनिसरे-

For Private And Personal Use Only

तेह ॥ १४ ॥ एवां नरकनाकुंडनां दुःख ॥ ते लोकयां जाये केम सुख ॥ केतां के तां न्हावे जे नो अंत ॥ एवां श्रोनि ग्रदुःख न्त्र लंत ॥ १५ ॥ वलि आ लोकमां जे अभागी ॥ करे अन्याय अन्याय नें त्यागी ॥ राजा राजाना चाकर जेह ॥ दुरे वरावां के लोक नेह ॥ १६ ॥ द्वयेसंत विप्र हि रदंड ॥ दुरे घरगा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्नोरखंड ॥ बलावांकेकरेस्रनर
स ॥ पहेलेनृपनेनृपनाम्नस्य ॥१७॥
पडे स्तुकरमुखतेपहि ॥ पिलेजेम
चितुं मांशेलडीरामपिलेल्हेपापितुं
तन ॥ तेलोंकरेकायररोदन ॥१८॥
वलावांकेरहितनैंकथी ॥ जिमोदं
डमारिमुवाकरी ॥ नाविमेसलै
निमनमांथे ॥ वरपिलानेनजा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ा कांये ॥१९॥ अतिदुःखदायाने
देन्ना ॥ एवा वयविपरत नरेन्ना ॥ ए
वा राज्ञा ने राज्ञा ना भृत्य ॥ पंडे अक
र दुर्त्तपा नि भृत्य ॥ २० ॥ सहे दुःख
कारक इन्द्रा ये ॥ तारे ए दुःख मां थि
मुकाये ॥ भुकर मुख मुं दुर घट दुः
ख ॥ ते भोगवे हरीना विमुख ॥ २१ ॥
कलंकरसं निग्रं कथई ॥ एवा ज्ञानि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. निरगतिकइ॥ वलिआलोकमांवि
१३७ सुख॥ दियेअजपजीवनेदुःख॥
२२॥ चांचरमांकउजुंजवाजेह॥वग
मांखिकिडीआदितेह॥पसुपंखीआ
लादिकवलि॥एवांमासांजंतुबहु
मलि॥२३॥राहपापेपडेअंधकूप
॥जेमांअतितमदुःखरूप॥वलिफेरवा
लांजंतुबउ॥आविवलगेअंगमां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खउ ॥ २४ ॥ नावेनिंद्रानहि सुखच
ी ॥ ध्रोउ अकजायजायपड़ि ॥ खा
सविन्याजणायशरीर ॥ चालेआं
खमांचोधारांनिर ॥ २५ ॥ ह्वा थे सुवे
सुवोकहे सुख ॥ भायोनथिखमातु
आदुःख ॥ रमभोगवेदुःखअपार
॥ केकत्यविनेकाहेवार ॥
२६ ॥ पछे कस्मांकर्मतेहवडें ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पापिक्कमिभोजनमांपडे ॥ जेणेंखा
धुंनहिंवें चिअन्न ॥ वलिनकरयां
वंचजगन ॥२७॥ नाच्युंजूलिखि
मेंअन्नकांइ ॥ लाधुंएकजांखुणोसं
ताइ ॥ एहपापेनास्वेजमथाणे ॥
क्रमिभोमननर्कनिखाण्ये ॥ २८॥
सतसदृसजोजनजेमांजंत ॥ भ
खांकर्मिवांजेमांअनंत ॥ तेमां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नारिकिदरवबरावे ॥ दरमारस
रेवंचवरावे ॥ २९ ॥ कहेपापकरतो
तुंप्राणि ॥ जमनादंउनेजुगजांणि
॥ तेतोसाचांथियांपुन्यपाप ॥ हवेसु
रवभोगव्यतुंआप ॥ ३० ॥ स्करवसर
वेगयुंछेमरि ॥ आव्युंएकजुंदुःख
उत्तरि ॥ रात्यदिवसरोतांरोता ॥
दनजाञोवउदुःखजोतां ॥ ३१ ॥

For Private And Personal Use Only

प. २९

रामदइदुतदुःखभाखे॥कैकवर
सविनेकाहेवाखे॥त्यांथिनाखेसं
हसमोझार॥जेमांदुःखतणोनहि
पार॥जेहपापेंपडेरामांजीव॥ ते
हवातकहुततखेव॥ नरेनकन्या-
नांकामकिधां॥जेनेंतेनेंदुःखव
उद्दिधां॥२२॥जेणेंआजोकेंविप्रनां
धन्न॥चोर्यांओवणादिकरतन्न॥

वजिवरणपडेआपकाल ॥ चोरे
हेमबिजानु चंडाल ॥ ३४ ॥ जेनुंते
नुंलेबुडीजोरि ॥ खरोतसकरन
जरखोहि ॥ पापिपोतानासुखके-
काज ॥ करेदगाबडदगाबाज ॥ ३५
॥ तेनेंनाखेछेसंदसनर्के ॥ जेनाटुं
दुःखेंप्राणिथरके ॥ जावेजोडसांट
सिढुंनाति ॥ तेणींचोडेत्वचाकरछाति ॥

प. २६॥कादेतननतणिरगुणाणी॥एवे
१४० चोरताजुवुंराज्जांणि॥ सर्वेऋषिमु
निनोरामन तेतोकेदीनथायेत्रस
त्यध२७॥मोटामोटागयाएमकथि
॥खराखरीछेएतोइणनथि ॥एम
भोगविदुःखनिकर्मि ॥त्यांथिका
ढिनालेतसस्कर्मि॥२८॥जेपापेतन
कैमांपडे॥कस्यांकर्मतेकेमननडेकाम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वऱ्यथइ नेंक्कुकर्मि ॥ करेअनृथन
रअधर्मि ॥३९॥ आलोकेंअगम्यग
विदार ॥ पापितेष्वंन्करेअभिचार ॥
अथवाअगम्यगवोपुरुष ॥ करेना
रिसंगकांमवश ॥४०॥ तेदपुरुषनें
तेदनारु ॥ पांमेनर्कमांदुःखअपा
र ॥ तियांत्रियाकरेछोदातणी ॥ अ
तितपावेछेनेदघणी ॥४१॥ ॥

For Private And Personal Use Only

य॰ तेम्रुबयल्लेवारेबउवार ॥एकवार
२५१ निवारहजार ॥ तेमज्ञोदानोपुरुष
तपाविबयभरावेनारीनेज्ञावि॥५२
नारिनिरखेचितवेनेंपरसे ॥ तेनर
ज्यां मरीजन्मज्यांधरशे॥तीयांपामशे
तेहनुंफल॥खरोघारथाशेनरख
ल॥५३॥ जेणेंजोइनयणेपर
नारि ॥ थइकांमातुरभुरभा–

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रि ॥ तेनरजन्मोजन्मश्रांधलो ॥
थायेजाघेजनमसगलो ॥ ४४ ॥
तलिजेजनचितवेनारी ॥ विषेस
खेंनमेलेविसारि ॥ तेनरहृयरों
गम्यारलवाये ॥ राबुंचितआनुकल
थाये ॥ ४५ ॥ जेनरपरोंपरनारीश्रं
ग ॥ थायेकोढियोतेनेप्रसंग ॥ राम
जन्मोजनमदुःखपामि ॥ खोरेश्राकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नैं द्राम्मि ॥४६॥ एव्र मांगो यो त्रि.ता
नुं जाणो ॥ मत्नेफत्नसमपरमांगो
॥ भागीमजा दमहाव्रनुकेरी ॥ तेनें
क्युं थिमन्ने मूरवफेरी ॥४७॥ भेलां
लिधां छे पुरण मातां ॥ तेनो रवुरसोनैं
रवातां रवातां ॥ करी व्याव्यो छे पुरी क
माणी ॥ जमपुरनुं दुःरवजु वुंजाणि ॥
४८ ॥ रामनरनारी था वे हेरा

For Private And Personal Use Only

ण॥ जेनां विषे साथें बांध्यां प्राण॥
रागद्वेषरूपां मे दोय बे व्याप॥ जे शोक
र्या हैं पुरणा पाप॥ ४९॥ ते निंदा स
कली वृद्ध विध्य॥ हुं जो राग पुरा ग
म सिध्य॥ कद्दि निकुल्यानं देण कथी
॥ मन वांछ जो त्रुट तनथी॥ ५०॥
करवा॥ २३॥ पूर्व ह्यां यो॥ ट्ट नके
थि निसह्यो॥ वउ वर सरद्दिवा ल

तारपछिदुःखपांमश्ये॥ तेकहुंकरी
१४३ विस्तार॥१॥ वज्रकंटकशाल्मलि॥
नामेंनर्कनेस्थांन॥जेहपापेंपापिप
डे॥कउंसोसुंरणोदइकांन॥ २॥पा
पिपर स्त्रियपशुंच्याद्किकरेकामव
शसंग॥२॥हपापेंपरलोकमां॥पा
मेतेदुःखअभंग॥३॥ स्परशनास्त्र
खसारु ॥ कल्लोथ —

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनेोल्लोप ॥ तेनेंउपसद्दुतजमना
करेछेअतिघणोकोप ॥ ४ ॥ समुंकेतां
वसमुं समऊतोनरसोये ॥ वज्र
कंटकेंवधीयो ॥ ज्यांमायेनकरे
कोये ॥ ५ ॥ वज्रसरीखेकांटेकेवे ॥
घणाअतिनांकाउ ॥ तेहउपरनाखि
तांणे ॥ पाडेस्यांराउंराउ ॥ ६ ॥ दे
तांदंडजमदुतहारे ॥ तारेजआवे

For Private And Personal Use Only

अंत ॥ चालतो वैवट विपस्यनो ॥
सत्यमां नजो बुद्धिवंत ॥ ७ ॥ एम प्रा
णी जोगवे ॥ नित्य प्रत्ये दुःख अनंत
॥ त्यांथी पडे चैतरांथे ॥ भाइक
डुं तेनुं वरतंत ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ ओ
ळो के नृप नृपनाजनरे ॥ सतकुळ
मांथया उत्तपन रे ॥ पण धर्ममर्यादा
नें भागी ॥ वर्त्ते अधर्मे नर अभागि रे ॥

९॥एवाराजानेंराजानाम्नत्य॥पडे
वैतर्णियेपामिम्नत्यरे॥ जेमांवि
ष्टमुत्रपरुलोइरे॥केत्रानखत्र
स्तिमेद्सोइरे॥१०॥मांसत्वचा
येभरीवैतर्णिरे॥दुःखदाग्रककैयें
भ्रुंवर्णिरे॥नर्कखाइरुपछेएनदि
रे॥जेमांजत्नजंतुरीयामहीरे॥
११॥जियांतियांथित्रोउीनेंखाघेरे॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य. तेनेदुःखेकरेहायेहायेरे ॥करयांक
१४५ र्मसंभारेछेआपरे ॥केछेक्यांथिक
स्यांआवांपापरे ॥१२॥पामेपिडाप्रा
णनिसरेरे ॥ हायमुवोमुवोराम
करेरे ॥एमराज्ञाराजानापदातिरे॥
पामेपापेंदुःखदीनरातिरे ॥१३ ॥
एविवैतर्णिमहाविकटरे ॥जेमांदु
खअतिदुरघटरे ॥सयुंनजायेत्रारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रेसोयेरे ॥ तमेंसांभळजोसहुकोये
रे ॥ २४ ॥ चलिकहुकुंउनीरीतरे ॥
जेमांदुःखअतिघणीतरे ॥ नर्क
नर्कप्रत्येदुःखनोरवांरे ॥ राकराकथ
किअतिघोरवांरे ॥ २५ ॥ जेणेंजेवां
कस्यांहोयपापरे ॥ तेवोतेप्राणिपा
मेसंतापरे ॥ कस्युंकर्मपोतानुंतेशो
वुंरे ॥ जेणेंजेवुंकरूहोयेतेवुंरे ॥

For Private And Personal Use Only

१६ ॥ वलिश्राजोकेछडिनासंगीरे॥
शोचञ्राचारनिमञ्रोजंघिरे॥नरप
ञुंपवेजज्यात्यागीरे॥मनवश्यवे
तेंहेञ्रभागीरे॥१७॥तेतोमरीप्र-
लोकमांजायेरे॥पडेपुयोदनर्कनेमां
यरे॥परमुत्रविष्टाजिटजालरे॥
तेनोभख्योसमुद्रकरालरे॥१८॥ते
मांपडेपियेखायेतेहूरे॥नरवृष

त्रिपतिथियाजेहरे॥ामविचारिवि
कजनथावुंरे॥ पउम्रोजरुरजमपुर
जावुंरे॥१८॥तियांरंगीजापणुंनेरहे
रे॥सत्यधर्मवाजासउकहेरे॥मरउ
ठरउमटाउझोमारीरे॥करजोकर्मवि
चारिनरनारिरे॥ १९॥वलिपापिनो
पापभ्रमाणेरे॥नारेवघाणरोधनर्क
लांरोरे॥ घाणरोधमांपडेछेपापि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प.
१५७

रे॥ भुणोवातसउकांनआपिरे॥२१
आजोकेंब्राह्मणादिककैयेंरे॥खरा
खरसरीखातेजेयेरे॥मारेमृगनेक
रेछप्रकाजरे॥जेनिसमचाराचेपाठि
नाजरे॥२२॥तेहमरीजमपुरजायेरे
॥पडेशाणरोधनर्कमांयेरे॥तेनुंकिं
करकरीनिशाणरे॥रोमरोमवेधेमा
रिबांणरे॥२३॥छेदिमारखेछेपापिनि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छातिरे ॥ पांमे पिडाकइनथिजाति
रे॥ जोइजोइच्नारिरनाह्मजरे॥ पच्छेरू
वेकपणकंगालरे॥२४॥ वलिच्माळो
केपुरुषदंभेरे॥ दंभमयजगनच्मारं
भेरे॥ मारेपच्छुणजगनमांयरे॥ ते
मरीवैश्रासनजायरे॥२५॥ फालेजम
दुतगलेजोरेंरे॥ मारेपच्छूर्वेतेवको
रेंरे॥ पाडेकालिराउनतेकुकर्मिरे॥

प

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञे कोय रूयां थियातना धर्मीरे ॥
२६ ॥ घोउ फरखसारु दुःखमोटुं रे
॥बांधि लिधि मेजी पापपोटुं रे॥ ते
तो भोगवे आवक्षे पाररे ॥ सउनि
श्वे जाणोनिरधाररे॥२७॥ वलिपो
तानापापप्रतापैंरे॥ पडेजाजाभव
मांये आपेरे॥ जाजाभवनुंदुःख
अपाररे॥कडुं कांयेकनेनिरधाररे

For Private And Personal Use Only

२८ ॥ आलोकेंव्रणपेवर्णनाभुरुषरे
॥ आपेंपापिषइकांमवञ्चारे ॥ पो
तानावर्णनिजेनाखरे ॥ पापिते
मुंकरेअभिचाररे ॥ २९ ॥ तेहपापें
जमदुतत्यांइरे ॥ नाखेछेविर्यनिन
दिमांइरे ॥ मारीमुदगरमस्तकमांये
रे ॥ पापिजीवनेंविर्यत्यांपायेरे ॥ ३०
आवेउवकाअतिओकारीरे ॥ तोये

च· पिवरावेमारीमारिरे॥ दियेदंड ए
१४८ मदनराल्यरे॥ पांमेपिडाप्राणिव
डभात्यरे॥३१॥ वलिच्याथपापेंपा
पिजनरे॥ पडेछेतेसारमेयादनरे
॥ सारमेयादननुंजेदुःखरे॥ तेनो
कयुंजायेनहिमुखरे॥३२॥ जें
हपापेंपडेएहमांइरे॥ तेहसां
भलजोकउंभाइरे॥-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करेचोरीमुकेवलीआव्यरे॥ बालेगा
मपुरवनजाव्यरे॥३३॥ दियेऊरलुं
टेगामसाथरे॥एवोकरेपापिअनर
थरे॥एवाकुकर्मनाकरनाररे॥ह्रो
यराजाकेराज्ञानाचाररे॥३४॥ ते
मरीजमपुरमांजायेरे॥ तेनेजमना
दुतचोडिखायेरे॥ स्वानसातसोने
विछावलिरे॥ चुंथिखायछेपा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिनेंमलिरे ॥ ३५॥ वज्रसरि-
खिछेरानिडाहुरे ॥ त्रोडेतनपा
डेतेणेंराङ्नुरे ॥ कोणमुकावेमहा
दुखमांथिरे ॥ जेणेंसाचिवातमां
निनथिरे ॥ ३६ ॥ होयेसाचिवातना
केनारारे ॥ तेतोरानेंजागानहिं
सारारे ॥ वलिपापिनोकरीत
पासरे ॥ नारवेअविचिनकें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांतासरे ॥ ३७ ॥ अविचीनुं दुःख
छे अनेरवेरे ॥ तेतोभोगवशेरा इ
रेरवेरे ॥ तेमांकरशोनहिकांइमाप
रे ॥ देशोदुःखजोइजेवांपापरे ॥ ३८
जेहपुरेजुठीसाख्यजनरे ॥ बोले
अमत्यलेतांदेतांधनरे ॥ आपिदां
ननेंबोलेअसत्यरे ॥ एविपापम
यजेनिमत्यरे ॥ ३९॥ पछेएनेंअ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सु.
१५१

विनीथीनारवेरे ॥ पापिनेंकोंणपड
तारारवेरे ॥ अविचिनामेपर्वत
जाणोरे ॥ एवुंनर्कऔरपरमाणोरे
॥ ४० ॥ तेमांउचापगनिचुंशिषरे ॥
एमनारवेकिंकरकरीरिझरे ॥ सत
जोजनउंचोछेराहरे ॥ तेनेंमाथेथी
नारवेछेतेहरे ॥ ४१ ॥ दिशतरंग
तेनजेमांरे ॥ भस्माराकरसपांण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेमांरे ॥ थायेतन्नतनकरकातन
रे ॥ तोयेमरंनहिंपापिजनरे ॥ ४२॥
(म-ग्रसत्यनाबोलनाररे ॥ सहेदुः
खग्रपरमपाररे ॥ वलिविवविजुनि
ग्रघरूणीरे ॥ करेप्रमादेपानवाकरणी
रे ॥ ४३ ॥ वलिविग्रविन्गावरांग्रन्य
रे ॥ करेव्रतरंनेंमकरापानरे ॥ वलि
वेश्यादिप्रमादेंवलिरे ॥ जेपियेछे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य. सोमवह्निमल्निरे ॥ ४४ ॥ तेपापैंण
१५२ जीवनेदांनरे ॥ पडेनर्कनामेंच्यय:
पानरे ॥ जारेंविषच्यादिव्रणपेवर्ण
रे ॥ जायेजमपुरीपामिमर्णरे ॥ ४५
॥ तेनिजमदुतछातिद्बाविरे ॥ पा
यत्नोह्रसतेनेत्ताविरे ॥ तेह दु:
खेंकरेहायहायरे ॥ भुखप्यासेंक
रीप्रांणजायरे ॥ ४६ ॥—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वलिइयांअधमनरछोटोरे॥मानें
करीमानेछेडुंमोटोरे॥जेकोयेज
न्मतपविद्यावर्गेरे॥मोटाञ्चाश्र
मवारञ्चावर्गेरे॥४७॥तेनिगण
तिनहिंकडुंकांइरे॥एवोञ्मनीमा
निमनमांइरे॥सउथिजांणेछेपो
तानेंसरसरे॥विजानेंतोजांणेछे
नरसरे॥४८॥तेनुंकरेञ्चपमान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रतिरे॥ तेकरे ञ्चारकर्दमें गतिरे
॥ देहुंमा छुमेंउंचाछे पग रे॥ ना
वेथा हपडयोते मांगरे॥४९॥ रा
वांजमपुरी नांजे दुःख रे॥ पामेप्राणी
पनुयिविमुख रे॥ माचासंत निशी
खनमानिरे॥ थीयोग्रसत संगेंग्र
भिमांनिरे॥ ५०॥ एविग्रभागीन
रनिरितरे॥ खोरामांयेखरीपरति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरे ॥ जेहुंजुहुंअंतरमांपेसेरे ॥ ते
हुंसाचामांमननवेसेरे ॥ ५१॥ क
होकेमथायेराहसरवीरे ॥ साचिरा
तनमांनेमनेमनमुखिरे ॥ जेजिव
नापरमस्नेहिरे ॥ जांण्याश्त्रुस
रिखातेहिरे ॥ ५२॥ तेहपापेंपडेन
र्कमांयेरे ॥ नमजेउपाएनोहवेकां
येरे ॥ होयसमफुतोसमफेसमुंरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प० लागेश्राणसमकुनेंवसमुरे॥५३
१५४ वातदेतनिछेरा खोहेयेरे॥ वारे
वारेकेरखुंककेयेंरे॥कहेनिकुला
नंदकेटलुंरे॥ आवुंरूंणिचेतोतो
छेमलुंरे॥५४॥ कडवां॥२४॥ पू
र्वछांयो॥ वलिश्रभागीजीवनें॥
सुजेश्रवलांकाम॥ अघमगमां
चालतां॥ क्यांथिसुखविश्राम॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१॥डोडानुंडाखाधारखरा॥धांखेंक
रिधतुरासणा॥वडोकेफतेनोवि
नें॥कह्योकांइरहेमणा॥२॥सुणो
सउ आलोकमां॥करेनरनारिमली
पाप॥कालिभैरवदेवतांमसी॥
जेजेनरपसुमारीआप॥३॥मां
सखाइपसुमनुष्यनुं॥थायेनर
नारिपरसंन॥तेहजायेजमपुरि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यें ॥ पडे रखो गणा भोजन ॥ ४ ॥ मा
स्यां नर पशु अवतरी ॥ त्यां राक्षस
ना गण थाये ॥ जेम खाधुं तुं मांस ए
हनुं ॥ तेम तेनुं राक्ष खाये ॥ ५ ॥ जे
मण नर नारियें ॥ कस्युं तुं नृत्य नेगा
न ॥ तेमनुं तेम राक्षस करे ॥ खाइ
मांस करी जोइ पान ॥ ६ ॥ चोपाई ॥
वलिआलोक मां अपराधिरे करण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पनकरेपाराधिरे॥ आवेत्राण्यजी
ववानेंजनरे॥ आंणिअतिदिस
वासमनरे॥७॥एवावनगामना
जीवजेहरे॥ अवेजीववाआणारे
तेहरे॥तेनेंसूत्रकेसूत्रनीफांत्रिरे
॥तेणेकरीभास्यांविसवासिरे॥ ८
॥पछेमरीतेजमपुरजायेरे॥तेमें
जमदुतक्रोधिनेंखायेरे॥आपेदुः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खना पेअनपाणिरे ॥ आवे मोरछा
बंधायेवांणिरे ॥ ७ ॥ पडे प्रयविज
पखआपरे ॥ तारें संभारे पोतानां
पापरे ॥ भायोक्यांथि करमआवां
किधांरे ॥ क्यांथिजे नैं तेनें दुखद्धिधां
रे ॥ १० ॥ एम कइ पोकारेछे प्रेतरे ॥
पछे पडे भोमियेअचेतरे ॥ पछीजा
णिआवे पंखिकटरे ॥ लोहचांचवा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्यांकंकवररे॥ ११॥ तेतोचोउीचोउी
तनखायेरे॥पापिपिंडाय प्राणन
जायरे॥एमबहुभास्येंदुःखभोगवे
रे॥ नीरबांकष्टकुंडनवानवेरे॥१२॥
नावेअंतअतंतदुखनोरे॥ नहिंल
वलेशत्यांसुखनोरे॥वलिआलोके
नरतिरखारे॥स्वभावसरपनासरी
खारे॥ १३॥ जेनेंतेनेंदियेबहुदुःख

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ रे॥ जेथिनव्हीयंकोयीनेस्करवरे॥ प
१५७ छेमरीजमधुरजायेरे॥ घउदंडमूक
नर्कमांयेरे॥२४॥ श्रंणोभाइरानर्क
निवातरे॥ सुखजंतुनांपांचवासा
तरे॥ अतिकरउकरणांकराजरे॥जा
णुपापिजाणिनणोकाजरे॥२५॥ ॥
खाउंखाउंखाउरमकरेरे॥ वणवधु
वेवउचकांभरेरे॥ तिखीउादेंदिवां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुखदाईरे॥एवांजंतुरानकनेंमांईरे॥
२६॥उग्रस्वभाववाजानेंरुद्ररे॥तर्त्त
गलिजायेजंतुतेद्ररे॥ पांमिपिउग्रप्र
तितियांभारिरे॥मारेंकरवांकर्मवि-
चारिरे॥२७॥वलिआलोकमांजेअभा
गीरे॥ हियेपरनेंदुखदयासागीरें॥
खाउाकोढजागुफाअंधारिरे॥विल
भोंएजेमांतमभारीरे॥२८॥ घर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ दरमांईजीवरूंधिरे॥ मुकेआग्य
१५८ धूमत्यांकवुद्धिरे ॥ पछेतेपापि
परलोकपामिरे ॥ पडेअवटरी
धनेहरामिरे ॥ १८ ॥ ऊरसहि
तअगनिधुंवाडेरे॥ सेकिएवेस्य
नैरोलपाडेरे ॥ इयांजीवेंकस्यांपा
पजेमरे॥ दियेदंडत्यां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेमनोतैंमरे॥२०॥नथिअधिक
थोछुंकरतारे॥रेछेवमुनाउरथि
उरतारे॥नथिउरतोगनरअभागी
रे॥दुखलियेछेसुखथिजोभागिरे
॥२१ रलिआलीकेंअभागीनररे
॥वांधिबेगछेआम्रमघररे॥आ
वेआंगणेअतिथिराजरे॥अन्या
गत अन्नजजकाजरे॥२२॥तेरुं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रोधकरीततकालरे॥ करेकरडिद्
ष्टिविकरालरे॥ अन्नजलजराये
नआपेरे॥ सामुंक्रोधकरीनेंसंता
पेरे॥ २३॥ पछेंजारेंपामेपापिनूस
रे॥ पडेनर्केनाभवयोवृतरे॥ ति
यांवज्नजेंवांचांचवालांरे॥ गिध
कंकवरजनीग्राजारे॥२४॥ का
लिवलेमारि॥ चांचुपांखुरे॥ कादि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिये छे पापि निश्चां रखुं रे ॥ ऊंला
का द्रि लिये दिये मा रुं रे ॥ तेणें चाले
छे रुधिर धा रु रे ॥ २५ ॥ ते लों मिंजा
ये मुख सरी र रे ॥ एवे दुखें रहे केम
धिर रे ॥ राम दिये छे दंड अपार रे ॥
सहे एवा पाप करनार रे ॥ २६ ॥ सा
रुं स्कंद रन रतन पामि रे ॥ करयां पा
प राखि नहिं खामि रे ॥ आगमा समो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हु तेनासामटारे॥जेमच्यावेघनव
रुघटारे॥२७॥वलिच्याजोकेंक
रीच्यनर्थरे॥बहुपापेकरीमेल्युं
गर्थरे॥पामेधंन्यवाधेच्यभिमांन
रे॥जाणेकोयंमुजसमानरे॥२८
धन्यमहें बीजेबांकांवेणरे॥थिवो
दुखलनेंदुखदेंणरे॥धन्यखरच
तांखरखरोघणोरे॥राखेभयेरा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाचोरतणोरे॥२८॥मरुसुधन्यज
नामसमानरे॥नाप्युंतेमांयच्छिको
उदांनरे॥अभ्यागतविप्रनेंकलो
ईरे॥तेनेंअर्थेनाव्योदांमकोईरे॥च
मरूंधन्यकेवलकरीपापरे॥तेन
खरच्युंनखाधुंआपरे॥पछेधनत
नतजितेहरे॥जायेजमपुरमांइए
हरे॥३१॥तेनेंनारवेच्छविमुखनेंकी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. रे॥ पामेदुखघापिवङ्कवकैंरे॥ज
१६१ मदुतदरजीनिपगूंरे॥ एनुंतनवी
विवङ्कगंढूरे॥३२॥ विरिबांब-
डीस्कपेसिवेह्लीरे॥ मुवासरिखो
षड्जीवेह्लेरे॥ सर्वैत्नोभनोत्नाभ
देखाडिरे॥ एकथीवेबिजीनारवे
काढिरे॥ ३३॥ एमवौविधिप्रा
वेह्लेदुखरे॥ तेहनकेवाये—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाइमुरवरे ॥ सुणी सर्वे पुराणों अशो
परे ॥ कथानकेंणमच्छगणविचारे ॥
३५ ॥ एहविन्याविजांछेअपाररे ॥
सोयेसांनेंहजारेंहजाररे ॥ पापी
जीवनेंपिडवाकाजेरे ॥ धर्मरायनें
रारव्यामहाराजेंरे ॥ ३५ ॥ जेणेंजेवि
करीछेकमाणीरे ॥ तेनेंभोगवावेते
विजाणिरे ॥ संजमनिनेदहणहा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ररे॥ नर्कअगणितछेअपाररे ॥ इह
जेणेंजेवांकस्यांहोयेपापरे॥ तेवे
नर्कपडेप्राणिआपरे॥ पडेसर्वेन
र्कैअधर्मिरे॥ होयेनरवानारिवि
कर्मिरे॥ ३७॥ नथिवातजुठीएह
जाणोरे॥ सर्वेसाचिपुराणेवमा
णोरे॥ तेनेअर्थेकरेछेउपायेरे॥
दानंपुंन्यव्रतकेवायेरे॥ ३८॥ग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हदुखनेंराजवाकाजरे ॥ करेउपा
यरंकनेंराजरे ॥ पणपापिनोसंग
नइछेरे ॥ तेणेंकरीनर्कमांपडेछेरे
॥ ३९ ॥ खोटिदशनादेखाउनाररे ॥
छेआजगमांइअपाररे ॥ तेनासं
गनेंनछिनजतारे ॥ अठयइनथि
हरीनजतारे ॥ ४० ॥ आपपापेंकरी
नर्कगहरे ॥ भोगवेछेअनुंकर्मेंते

For Private And Personal Use Only

प. हरे॥ तेमधर्मअनुंकर्मेजीवरे ॥
१६३ जावेस्वर्गादिलोकेस्वदैवरे॥४१॥
केटलाकनर्केथिनिसरेरे॥केटला
कनरकमांयेगरेरे॥एमकेकस्वर्ग
थिपडेछेरे॥केकस्वर्गादिलोकेचडे
छेरे॥४२॥एमकरतांबंधपुन्यपा
परे॥तेणोंफरेचोराशिमांआपरे॥
एमरविरियोछेअरवाडोरे॥प्रभु

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नज्या विम्याछेपवाडोरे ॥ ४३ ॥ न
जोहरीतजीविजिवातरे॥ तोरसे
माथेथिजमघातरे॥ प्रनुनज्यावि
न्याणनीपा ररे॥ नघिस्त्रावतोजा
णोनिरधाररे॥४४॥ साचासंतनो
संगकरीनेंरे॥ भजोनावेंकरीनेंहरीनें
रे॥ जोकोयेरखोणराखवादुखरे॥रद्दो
श्रीहरीनेंसनमुखरे॥४५॥जेरादुःख

For Private And Personal Use Only

प० कयांकथिकयीरे॥तेतोहरीजनपरन
१६४ थिरे॥मारेहरीजनसउयाज्योरे॥सी
हजमथुरीमांईजाज्योरे॥४६॥मोरे
मोरामोराजोविचारिरे॥थियामऋ
सभुजीनामारीरे॥राजसाजरुखनें
संघतिरे॥तजिमज्याप्रभुआगपतिरे
॥४७॥तेतोएदुःखराखवाकाजरे॥मे
ल्योसर्वेसुखनोसमाजरे॥रुखकुकि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नें दुखनें लेवुं रे ॥ ते तो न गमे कोये
ने एवुं रे ॥ ४८ ॥ पण जम पुरी नां दु
खजाणी रे ॥ खरी प्रतित मन मां आ
णी रे ॥ नैयें मे लि दिधी एमारग रे ॥
॥ पछे स्फ़ख मारगे भस्या पगरे ॥ ४९
माटे सउ नें जो वुं तपासी रे ॥ नथि
आगल्य खेलनें हांसी रे ॥ कहे निष्कु
लानंद निरधार रे ॥ करवो सकु नें ए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नोचिवाररे॥५०॥ ढाल॥१५॥
पूर्वछांयो॥दृवेंश्रुणोसङ्कुन म
ति॥कडुंकथास्कंदरसार॥प्रगट
प्रभुभज्याविन्या॥पामेप्राणिदुख
अपार॥१॥सहेदुखसोलेश्रोरनां
॥भोगवेनर्कअगणीत॥पछेचा
लेचोराशियें॥श्रुणोसउकउंतेनि
रित॥२॥चोराशिराशिदुःखनि॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे अतिअतोलअमाप ॥ जेमांजी
वजुजवा ॥ पामेछेपरीताप ॥ ३ ॥
जेनमाथेएहदुःखछे ॥ तेनथिस्क
रिवलगारय ॥ कोणडायाभोलाकै
यें ॥ कोणगुणवंतनेंगमार ॥ ४ ॥
कोणरंकराजाकैयें ॥ कोणश्रीवंत
नेंसाहुकार ॥ जेनेंमायेजन्ममरण
छे ॥ तेतोसर्वेएकजहार ॥ ५ ॥ कोण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प.
१६६

जोगीजतिकैयें॥ कोणत्यागीतप
सितेह॥ चोराशीनुंनमचुकियुं॥
तोभ्रमथोकलेशएह॥६॥ हास्यो
जिस्योकोणजाणियें॥ कोणसतिनें
स्फरविर॥ दातादिनकेनेंकैयें॥ जे
नेएहदुखछेशरीर॥७॥ जेहकष्टके
वायेनहिं॥ जिह्वायेंथिजरुर॥ ववुं
वारेखांणप नां॥ मारेंदुखभरपूर॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र्द॥ इं डुजउद्भिज स्वेदजजरापुज॥ख
रिएंच्यारेखांण्य॥एकविन्द्रजारवएक
एकमां॥तेह पंच्य धरे परमाण॥९॥
कियांकसुखिकियांकदुखी॥तनसहे
त्रिविधताप॥शरीरधारीसुखीनही
सदारहेशिरसंताप॥१०॥चोपाई॥
शुभाशुभकर्मअनुंसार॥पामेजीव
बउअवतार॥नरखचोराशिलाख्युंबा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प० र॥धरेतेमांजुजवाख्यवतार॥११॥ढूंढ
६७ जखांणपनाच्यवतार॥तेनीकेलांतेन
व्यांवेपार॥करवयोउंनेदुःखच्छतंत॥
णवांधरवांतनव्यूंनंत॥१२॥जव्यंजुउंढ
जकेवाये॥तेनादुरवनोथाइनथाये॥म
छकछकचलाकातर्णी॥विजिवोजाति
नजायंवर्णी॥१३॥किडीमकोडीकोलांग
रोलां॥मांखिमणिधरर्‍ि —

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उआंबोलां ॥ नमरतनरआदिगणी
यें ॥ रापणाइंउनमांपगाणियें ॥ १४
राढ्आदिजेजंतुअपार ॥ मरेधरे
त्यांजेअवतार ॥ करवनहिंनहिंदु
खसरुं ॥ निस्येकह्पांमेतीयांनहें
१५ ॥ सितउछमवलितनत्रास ॥ ह्
र्वेशांकसहेनुखप्यास ॥ आपथि
सवलोदुःखआपे ॥ पोत्येंषणानिर

For Private And Personal Use Only

ग्र. बलनैंसंतापे ॥ १६ ॥ एमकरदुख
१६९ सेहतांअपार ॥ आयेजन्मजारुण
गीयार ॥ तारेजलजंतुजनमरले ॥
सत्यकयुंछेसंतसगले ॥ १७ ॥ व
लिकर्मअनुंसारेएह ॥ जाणिपामे
छेपंखिनांदेह ॥ सहेवरणपकालमां
तेदुख ॥ पजराकपांमेनहिसुख ॥
१८ ॥ सहेअमोघमेघनीधार ॥ सि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तउ भनुं दुखन्नपार ॥ नुखध्यासमो
पिडायेवउ ॥ हर्षशोकमांश्रातुरस
उ ॥ १९ ॥ एमदशल्लाखधरेदेह ॥ त
रैंइंउजघि मुकायेएह ॥ अगीयारद
नाणहकया ॥ मनिएकविशलाख
थया ॥ २० ॥ एकइंउजखांएपनांजा
णो ॥ सत्यवातसङ्कपरमांणो ॥ उ
ङ्किजमांधरेअवतार ॥ कहुंसां

For Private And Personal Use Only

च. १८८

भवो ते निरधार ॥ २१ ॥ खरां खां रण
न्वारे नां जे दुख ॥ पो मे प्रभु थिहुँ जे
वि मुख ॥ प्राणि आपपापपरता पे
॥ पो मे स्थावर जो देह पायें ॥ २२ ॥
ऊडुपाडमां धरे शरीर ॥ कैकरुजप
लगी रहे स्थिर ॥ बले सले कोगां गे
कपाये ॥ सिन्धाविन्यास मुजां स
कायें ॥ २३ ॥ सितउल्लसकरव दुःख स

हे ॥ आवे जायें न हि थिर रहे ॥ वन
वेलि गुह्न गीरी वंस ॥ थाये स्मि थि
रविर मर्ण ॥ २४ ॥ राम राज विशाल
रव वार ॥ पां मे उड्डि ज्ञमां स्मु वसार ॥
राम ले तां जनम सुराया वे ॥ तारे स्था
वर देह थिमु काये ॥ २५ ॥ पल्लो ने र
जनतां ण्ये ज्ञारिर ॥ धरे स्म मागी जिव
ऋविर ॥ कसां कर्म थद्र तें ने वस्य ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धरे तनकर्मकिरख्खवव्य ॥ २६ ॥ सं
त्रउमांकउजुंजवासवा॥ गिंगोडीइंताडे
हाल्युंकंपवा॥ सोलीमलुरधनामार
लियां॥ इल्युंत्र्याल्युं पुरादिमामलि-
या ॥ २७॥ रात्हदेह्मांवेनहिंसकव ॥
पांमेविडाप्रभुनाविमुख ॥ नुवापक्षी
अंनरकेंजाये ॥ रातोजीवतां हे
नर्कमांचे ॥ २८ ॥ रामसेहतांस्कखनु
रवजाय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीतेंजन्मजारवराकविड्॥ त्यांरुधिरहे
दुरवअपार॥ पछेस्वेदजथिकादेवा
रय॥ २९॥ वलिजरायुजरवांणपमां
जेह॥जीवधरेछेजुजवांदेह॥ नि
जकर्मबंधेंवंधाणो॥धरेपञ्जना
जन्मनेंजांणो॥३०॥ फरवनहिनेंसं
करयणो॥कयोनजायेमुखथिते
तणो॥पडेपरवशपरहाथ॥वलें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प०
१७१ गले बांधियाले नाथ ॥ ३१ ॥ जीउंछो
हे वाले ते मवले ॥ मगावे लगाले पा
यसगले ॥ आपे रखावा पिवा नें तो रख
ये ॥ नै तो बांध्यो बांध्यो ते मुकाये ॥
३२ ॥ परभव थि भागतो करे ॥ पाणी
न पिये चारो न करे ॥ कैक रवि ने
रिघां छे बंधाइ ॥ आठ निम किन वि
व मांइ ॥ ३३ ॥ कां ना नांमो टां पसु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आंखी॥ सहेदुखसुखजियोजा॥णे
॥सातरजारववारतनक्षारे॥ छुटे
पशुनाजन्मथितारे॥२४॥ एहदुल
जणपुजनांकयां॥कडुंविजांजेके
वानांरयां॥ चारखांणनांदुखक
डुंचवि॥जेजेजीवआव्योछेभोग
वि॥२५॥ पछेकर्मअनुंसारएह॥
पामेचोदजाखमनुष्यनादेह॥ ते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांपणअष्ट प्रकार॥ सुंणोसउक
उंनिरधार॥ ३६॥ कपिनोलखिस
कोलांकैये॥ रिंछनेजलमाणस
लैयें॥ एकलटंगांघुडमुखांगणुं॥
अष्टमुंतनतेमनुंष्यतणुं॥ ३७॥
तेमांपणबहुपरकार॥ सर्वेसर
खानेअवतार॥ भाडुंभीजकसाइ
कलार॥ पाराधिफांसीयामछिम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र ॥ ३८ ॥ मद्यमत्स्येच्छ निचर्मांशेदेह
॥ आंतिपापमयतनतेह ॥ एह मा
यनुंआवेएकतंन ॥ तेर्गेंनथाय
मोहनुंजतन ॥ ३९ ॥ कपिआदि
क्यांतनमात ॥ तेमांतोनहिमोह
निवात ॥ अष्टमुंदेह मनुष्यनुंका
वे ॥ तेहपरणजोपापिनुंआवे ॥ ४०
नसरेअर्थनथायेकल्यांण ॥ पाछि

For Private And Personal Use Only

व. चोराशिनेंचाररवोंएप॥अथवाआवेजो
१७२ उत्तमतंन॥मलेछसंगतोमुलगादं
न॥४१॥देशकालक्रियाध्यांनजेह॥
शास्त्रहिंसामंत्रसंगतेह॥एहअवलो
होयेजोअष्ट॥आपेआलोकेपरलो
केकष्ट॥४२॥होयसवलातोसरेका
म॥वांणीपामेश्रीहरीतुंधाम॥
एहसवलांलेमनसंग॥एहअवलांनेके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

येंकुसंग॥ ४३॥ सतसंगेंकरीसरे
काज॥ कुसंगेंकरीनर्कसमाज॥जे
जेजेदुखथियांथाशेअंगे॥ हमणांदु
खितेपराकुसंगें॥ ४४॥ जेजेदुख
कयांसर्वेकथि॥ तेतोसोपांमेछेकु
संगथि॥ कुसंगछेकारणदुखनुं॥
सतसंगछेकारणसुखनुं॥४५॥कुसं
गनोसंगसहुत्यागी॥ सवेंहरिनेंभ

For Private And Personal Use Only

क १७५ ज्तोसकभागी॥ कुसंगनोकरजोमां-
कोइ॥ जमपुरीनांदुखनेंजोइ॥ ॥
४६॥ कुसंगनाउरथितोडरवुं ॥ तो
मरेजनमवुंनेमरवुं॥ जन्ममरण
नांदुखछेजेह॥ तेतोकइ श्रुणामां
येंतेह॥ ४७॥ तेहसांभलुंसौवेंश
कट॥ वेगुंजायेनहिंछेविकट॥
तेसमामांवितेतेहछेप्राणीनें॥ तेतो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनमांरहेछेजांणिनें ॥४८॥ केवा
जेवोनथिएहसमो ॥ गमेतेवांदुख
आविरमो ॥ तेतोजांणेछेपोतानो
जीव ॥ कांजाणेछेपमेंहेतुपीव
॥ ४९ ॥ एहसमोछेअतिआकरो
॥ खम्योनजायछेखराखरो ॥ ए
हदुखटाजवाउपाये ॥ करवोसम-
किसउनेंसहाये ॥ ५० ॥ तजीऊसं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गसत्संगकरीयें ॥ तोफरी भवफेरा
नकरीये॥ कैयेंवारेवारें छुंकेरवुं॥
करवुंसउनेंपोतानुंभलुं॥५१॥ म
उमनच्याकथामांभलि ॥ कवोंम
त्संगसर्वनेंमलि ॥ कहेनिकुला
नंदनिरधार ॥ कयुंसर्वेवातनुंअ
स्सार ॥ ५२ ॥ कडवां ॥ १६ ॥ पू
र्वछांयो ॥ विविध्यभास्पेवर्लवि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यांकष्टजीवनांजेह ॥ तेहसांभल
तांश्रवणेसउनांतेकंपेदेह ॥ १ ॥
अल्पआयुषमांरा वडी ॥ पिणपा
मेछेप्राणिअपार ॥ एहदुखनेंआ
गल्येंं ॥ स्वखस्वपनाजेवोसंसार ॥
२ ॥ मनुष्यदेहनेमुकतां ॥ दुखत
रतछेएतयार ॥ तेनोउपायअभा
गीयो ॥ कांरकरोनहिनरनास्य

For Private And Personal Use Only

च.
१७६

॥ ३ ॥ मायेनगारांमोतनां॥ वा
जेछेवउखिध्य॥ पलेंपलेंरित्य
पलरे ॥ वेरविजुवोयरसिद्ध ॥
४ ॥ वालजुवापणवेगीयां ॥ ह्
ठूपणवगसतुंजाये ॥ आजका
ल्यमांउठिचालवुं॥ सङ्कविचारो
मनमाये ॥ ५ ॥ यांथिआचा
नकचालतां ॥ सद्वस्त

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवञेसाथ॥ वर्गासमऊ्विपतनी
॥त्रिदृनरिरियाह्वोवाथ॥६॥साची
समागमसोधिनें॥राजोमाथेथिए
त्रास॥नरसेसंगेंनेमरे॥मरणनें
गर्भवास॥७॥मेंकयुंआजीवनेंक्र
संगछेदुःखरूप॥कुसंगकेयेजेद्द
नें॥कडुंतेद्दनुंद्दवेस्वरूप॥८॥चो
पाई॥ मोटांकुसंगसेनिजदेद्द॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ जेमांजीवेंबांध्योछेसनेह॥ ए
७७ हवअर्थेकरतांअनर्थ॥ जीववस्तु
वेछेजनमअर्थ॥ ९॥ कउकप
टदगानेघात॥ थायेदेहसारुंसर्वे
घात॥ हुलनचोरिहिंसाकरिहरो
॥ आपस्वारथेंपापनगरो॥ १०॥
एवुंपापनथिजगमांये॥जेकोयस
रिसारुंनथाये॥जारेंपंउस्कव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामुं पेखे ॥ तारे दोष मात्र नेंन दे
खे ॥ ११ ॥ परत्रियेपरधनलेवुं
॥ तनस्करवु साहंकरेएवुं ॥ देहसा
थ्येंसनेदुछेजेनें ॥ नहिधर्मनिम
जाजतेनें ॥ १२ ॥ देहअभिमानिन
रनारि ॥ आचेराचिजनरथनारि
॥ जेणे देह मांहि स्करवमांन्यां ॥
करे पापकेपरगरछानां ॥ १३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोतानापंडनासुखमाट॥ करे
पापहजारेहजारु ॥ जेणेंकरी
जमपुरजवाये ॥ तेनोनकरेवि
च्चारकांये ॥ १४ ॥ नखाधासरि
खुंतेहखाये ॥ नपिधासरिखुंपी
येपाये ॥ तेतोदेहनासुखनेअ
र्थ॥ थायेअतिघणाअनर्थ ॥
१५॥ जेअनर्थेजमपुरीजवाये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मारेंमो रोकुसंगए केवाये॥ तेह
सांतजवीसनेह॥ जांणिकुसंग
रुपच्छादेह॥ १६॥ देहमांनेमांनेमा
ई बाप॥ देहमांन्येमानेपरच्छाप
॥ देहमांन्येमांनेभम्रिभ्रात॥ दे
हमांन्येमांनेनात्यजात्य॥ १७॥ दे
हमांन्येमानेग्रहमेरी॥ देहमांन्ये
मानेवाल्जांवेरी॥ देहमान्येमाने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मारुतारु ॥ देहमांन्येममतहज्ञा
रूं ॥ ९६ ॥ देहताहूं त्तुमाभ्रमथा
ये ॥ तेनोदोषदेखेन्हिकांये ॥
चांधधंयथ्रूकरैणाय ॥ तेतोदेह
माहसतज्ञाय ॥ १०॥सर्वेनकै
जावानोसमान ॥ करैजेनैंदेहञ्ञ
भिमान ॥ मादेंमीरोक्रुसंगञ्ज्ञादे
ह॥तेसृंतजवोजोथेंसनेह१०॥तेहविसा

क्रमे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गछेअंन्य॥कऋंनेपणसांभलोजन
॥कुसंगतेकव्यादनीपेस्य॥सदाव
वरेप्रभुशुंवेर॥२१॥हरीनेंहरीना
अवतार॥पापितेनेघसारेदेनार
॥श्रीकृष्णजेगोलोकपति॥जनसु
खदायकमूरति॥२२॥धरेजुगोजु
गमांअवतार॥कैकजीवनोकरवा
उधार॥वाराहादिकवपुनेंधारि॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ रहे तु भार ह्रदवा मोराशि ॥ २३ ॥ द
इ दरना परस्त्रा तुं दांन ॥ ह्रदे केक जी
वनुं अज्ञान ॥ तेनें तजी नें च्य मागीज
न ॥ करे च्य न्य देवनुं भजन ॥ २४ ॥ का
लि भैरव भुतने विर ॥ पापि मां ने या
वलि यापिर ॥ तेने बलि दांन देवा बे
पेस्य ॥ मारी जिवनें करे कमेर ॥ २५
॥ एवा पापि नि परतितव्या वे ॥ तोय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पणजमपुरीमांजावे॥जेणेमनुंष्य
देहच्चाविच्चापि॥तेनोपाडुमानन
हिपापि॥ २६॥कोपककर्मकरिप
रथान॥मानेमोह्नेजावानुंहेवान
कर्मेकरीसरवेथायछे॥एमकर्मना
गुणगायेछे॥२७॥परमेश्वरनोवेग
पाडिकाल॥नास्तिकएवानरछेचं
डाल॥एनोसंगतेकुसंगकेवाये॥ते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चु. नेसगेतमपुरजवाये ॥२८॥ कोय
१८१ कआेंदेनन्निऔोरनलई ॥ करेक्क
र्मवेसर्मथई ॥ मेलिसर्णमीदम
नणुं ॥ करेमनजेममांनेआपणुं ॥
२९ ॥ एकवखतकइमनमावेलोक ॥
करेकर्मधर्मसर्वेफोक ॥ करेपाप
पुन्यथकिपाडे ॥ तेमांनिर्दोषपणुंदे
खाडे ॥ ३० ॥ एवानरजेहोयजभागी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाणिकुसंगमुकवात्यागी।। रानेसं
मनदेवोलागवा॥ एछेजमपुरीना
भ्रागवा॥ ३१॥ कलीमायेछेकुसंग
घणुं॥ भ्रणोजनभ्राचर्णतेहतणुं
॥ सत्यशास्त्रमृजादनेमेलि ॥ मन
मतेवरतेछेफेली॥३२॥पापिलजी
निजकुलधर्म॥ विषेसारुंकरेछे
विकर्म॥ वलिपेटभरवापाषंडी॥क

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रेअधर्मधर्मनेंछंडी॥ ३३॥ थइअ
नागीनरचंडाल॥ करेकरावेजाति
विटाल॥ कोयकनिजमातासुतासं
ग॥ करेभगनिसाथेंव्रतभंग॥ ३४
एवापंचकलिमांछेवउ॥ तेमांमा
निवेगमोक्षसउ॥ तेतोसत्यशास्त्र
नुगंथाशे॥ तारेए मांकस्यांशकेवा
शे॥ ३५॥ माटेएवोसंगतेकुसंग॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेनोनदेवोलागवारंग ॥ होयपूर्वजन्न
मनांपाप ॥ मनेरावोसंगतेपरताप ॥
२६ ॥ मनेवाघनागविषखारु ॥ पण
कुसंगथिसोमारुं ॥ राधिराकजनम
जायेजांएथ ॥ कुसंगथिकोटिकोटि
हाणप ॥ २७ ॥ माटेकुसंगकेनेनकरवो
॥ पापरुपजाणिपरहर्वो ॥ रावाकुसं
गनेसंगेरिया ॥ तेतोजरवचोरा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थिमांगिया ॥ ७९ ॥ विध्येविध्येसथा
जमरूंडु ॥ वलिधरशेखीरवाण्य
मांपंडु ॥ हृषासिलसेसेतंनेलाप
॥ तेतांकुसंगनेंपरताप ॥ ८० ॥ फरशे
रस्वोवारेरास्वाण्प ॥ धरशेस्थावर
जंमचतनजाण्य ॥ महाकुसंगनि
सेदयमोरि ॥ जेलेंजन्मलेवाकोटि
कोरि ॥ ८१ ॥ तेहसारुंतेजोतुंल

For Private And Personal Use Only

पात्रि॥नथिआगल्यखेलनेंहांत्रि॥
त्यांतोसरसेसाचापिजोकाज॥नहि
रहेकपटिनिलाज॥४१॥देहपालक
इंद्रिनादास॥तेनोराखवोनहिविस
वास॥एनेसंगेंखोटानरूखायें॥सा
चासंतहोयेतियांजायें॥४२॥पस्त्रप
ग्रेंनरेबुंबंधाइ॥सत्यअसत्यओल
खवुंभाई॥एहकडुकुसंगनिरित॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेभ्रके दिनकर विछित॥४६॥मातता
तमगनिके नाइ॥स्फतदाराक्रुजसगां
साइ॥हरिभजतां पाडेजे भंग॥ते तो
कैयेंसर्वैंकसंग॥४४॥देवगुरुआध्या
रुउवेरा॥अन्नदाता मित्रस्फरवदेरा॥
एह हरि नजां तांजोवारे॥ समकित
नुतजिदेवातारे॥४५॥ मतियां प
धियांपरपंचि॥ वैठाभ्रमक्रभागत्रि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रचि ॥ चिरकलिरावनुनाद्रोहि ॥ ए
स्थाहुराणवाविजानोहि ॥ ४६ ॥ तेनो
रावणोनहिविसवास ॥ जेधिरनिज
येंहरिदास ॥ बुधिवलिप्रधानपदे
ल ॥ तेपरामहोयेकुसंगेंमरेल ॥
४७ ॥ दडुडारोनेंदवादिराखे ॥ हरिभ
जतांविघननाखे ॥ तेनोदेशगांम
तजिदेवुं ॥ जांणिव्याकरमनमांएवुं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च०
१९५

४६॥ जेमजेमकरवोनिभाव॥परा
णनोकरवोअभाव ॥ णवोकुसंग
कयांलगीकउ॥केतांकेतांतेपारन
लउ॥४८॥णवांकयांकुसंगनेकां
णां ॥ रयांयणांनेथोडांलेखाणां॥
जमवुरेजेजावाजमान ॥
णहसउरेछेसावधान ॥
५०॥ माटेसवे–

For Private And Personal Use Only

तरेतुंसदाय ॥ नैतोपोचाईजमपुरी
मांय ॥ हरीभक्तिमांपड़ावेभंग ॥ के
निकुलानंदएकुसंग ॥ ५ ॥ कडवां ॥
१७ ॥ पूर्वछांयो ॥ सदमतिसउस्तां
नसो ॥ मेंकयुंकुसंगनुंरुप ॥ पस
तानछिएमअगुं ॥ छेतेमजतेतदरु
प ॥ १ ॥ विषवाजवेरीथकि ॥ कहो
कसपामेंकुए ॥ अनेकजुगविता

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वितड़ो॥ तोयेतेमांतेनातेगुंग॥ २
तेमक्कप्रीन्हरथि ॥ प्राणिपामेदुख
अपार ॥ तेनुंआश्चर्यनेकसं ॥ नि
श्वेजाणोनिरधार॥ ३॥ वलिकपुंमें
सतसंगथि ॥ मरिजायेछेमहादुख
॥ कहुंरूपहवेतेहनुं॥ जेथिजिवनें
थायेछेसुख॥ ४॥ चोपाइ॥ सुंणो
मर्देहवेमरनारु॥ कहुंसतसंगनुं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुपसार ॥ अतिमहिमाजेनोछे अ
पार ॥ केतांकोये पामेनहिपार ॥५॥
शेषमहेशासरस्वति ॥ गुणगायेजे
नागणपति ॥ वलिश्रीहरीमुखेकरी
॥ गायसंतनाजसश्रीहरी ॥६॥ सो
धिजोतांसंतनेंसमांन ॥ नथिजिने
केवलकनेदांन ॥ अन्यनरुकामधे
नजेह ॥ अहुपाअचिंतामणितेह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७॥ नवनिधि सिधि सर्वे मलि॥ ए
कृत्यादि समर्थि सगलि॥ सोधि जो
तां सर्वे नुं सार॥ सुख अने दुख
अपार॥ ६॥ ते तो संत समतोल्य ना
वे॥ जे ना जस निगम नित्य गावे॥ ए
वा संत सकला सुखकारी॥ जे ना कु
दामां रियामो रारि॥ ८॥ छ भ गुण ना
मद न संत॥ ते नो म हिमा मोटो छे अ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तंत ॥ परमारथिपुन्यपवित्र ॥ न
हिगाउतासकुनामित्र ॥ १० ॥ कर्यें
जनादयातुरागें ॥ क्षमाकरवानोंस
भावजेनें ॥ सर्वेजीवनाहितनका
रि ॥ शीतउस्मसहेदुखभारी ॥ ११ ॥
केनागुणमांभ्रवगुणनगोते ॥ शांत
स्वभाववालाछेपोते ॥ नथिशत्रुजेनें
जगमांये ॥ वलिवरतेछेवणइरषा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यें॥१२॥नथिकेनेंउपसजेनेंवेर॥
यानेंरहितमनस्थितिमेस्व॥ मछुर
नहिसत्रुतुंसेहेतुं॥द्वरेविनानैतेम
मांनदेवुं॥१२॥ मत्सरुपसोनेला
गेप्यारि ॥ रहितलालीबोलेहुं
विच्यारि ॥ काम क्रोध लोभ
मोह जीति ॥ नथिकोयेम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दपरप्रीति ॥१४॥ वलिदेहमोहिय
हंबुद्धि ॥ परारथजेदेहसवंधि ॥ ते
मांथियुअहंममत्वनोत्याग ॥ स्वधर्म
मांहरख्यनुंराग ॥ १५॥ दंभेरहितव्र
थानाभंडार ॥ सदापवित्रमित्रनेंवा
ल्य ॥ वलिदेहइंद्रियदमनार ॥ सर
लस्वभाव ॥ सरलस्वभावथ्यतिउदा
र ॥१६॥ जीतिहेइंद्रियसर्वेजाणो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ वलीभ्रमादूरहित पूमारणो ॥ सुख
१९७ दुखमांनअपमांन॥ हर्षशोकला
न वली ज्यांन ॥१७॥ तेणेकरीप
रानवपामि ॥ धिरजतामांनआवे
रतांमि॥ कर्मइंडिस्तुं नुंचपलपणुं॥
टाल्युंछेज्ञानइंडिस्तुंतणुं॥१८॥नि
जधर्मअनुंसारेंआवे॥ तेणेकरी
नेदेहनिभावे॥ तेविन्याअधिकप

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दारथ ॥ न संग्रहे जां गिअनरथ ॥
१९ ॥ वलिविजानेंबोधकरवा ॥ अ
तिचतुरअज्ञानहरवा ॥ माने पोता
ने आत्मा रूप ॥ तेमांनि शअतिशे
अनुंप ॥ २० ॥ जथाजोग्यजीवनें
उपरु ॥ करे उपगार बउपरु ॥ को
थप्रकारनो भयेनथि ॥ नथिउरता
कोथेनाडरथि ॥ २१ ॥ अपेक्षापदा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र्थकोयनि ॥ नथिइछासरवद्सोयनि
॥ द्युतादिकव्यसनेरहित ॥ सदाव
र्त्तेछेश्रद्धासहित ॥ २२ ॥ अतिउदार
स्वभावेजुक्त ॥ नथकरवानिछाएवा
मुक्त ॥ नकरेकोयेएकारनुंपाप ॥
त्यागेवातग्राम्यकथाआप ॥ ३२ ॥ पं
चविषेनिआसक्तिरहति ॥ आस्तिक
मतिवाळाछेवळि ॥ सत्यअसत्यना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीवेकजुके ॥ मद्यमांसादिकेदिनभुक्ते
॥२४॥ सतजुगरूलक्षणवाव्यसंन ॥
ह्टव्रतथास्यांजेणेमंन ॥ चाडिचोरी
केदीयेनकरे ॥ हेरुपगुंपरूंपरहरे॥
२५॥ ह्यांनिवातकोयेनीजोहोये ॥ वि
जाआगस्यनकहेसोये ॥ जितिनिंद्रा
नेंजीत्योछेआहार॥ एवासंतसदायेउ
दार॥२६॥ जेवुंमनेपदारथआरे ॥ स

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दासंतोपीरहैछेतारे॥निजधर्मविषे
बुद्धिवेरी॥हिंसारहितत्रत्तिजेहकेरी॥
२७॥ परार्थनित्रमनाटालि॥थायेपोता
नेसुखदुखवलि॥तेमपारकुंसुखदुख
जाणी॥पोतानेथायेतेपरमाणो॥२८
सतशास्त्रपाडीजेनिवाज॥तेनथाये
आवेअतिलाज॥नकरेपोतेंपोतानां
वखाण॥ नकरेबिजानिनिं—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जे निनाज ॥ तेन थाये आवे अतिला
ज ॥ न करे पोते पोलानां वरवाण ॥ न
करे बिजा नि निंदा करजांण ॥ २९ ॥ स
त्य शास्त्रे कथा नि कांम ब्रह्म चर्य व्रत
धारिनां म ॥ अष्ट प्रकारे पाले छे राह ॥
ज थाय थजां णी लियो ते ह ॥ ३० ॥ य म
नि में जुक्त छे रजंन ॥ जेणें जीत्यां छे
सर्वे आसंन ॥ प्रांणवायु नें जीत्यो छे

For Private And Personal Use Only

ध. १९२ जेरो ॥ धितश्रीहरीमांयहे तेरो॥
२१॥ श्रीहरीनांजेचर्णकमल ॥
तेनोरस्याश्रयश्रचल ॥ श्रीकृस्न
निभक्तिपरायेण ॥सदारहेछेदिव
सरेण ॥ २२॥ करैकृस्नअर्थेक्रियास
र्व॥ तजिमांनमोटाइनेंगर्व ॥ श्री
कृस्नअवतारचरित्र ॥ हरखें-
सुणेश्रवणे पवित्र ॥ २३ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवतारचरित्रनुंग्यांन ॥ करेकि
रतनतेनेदांन ॥ कलमूर्त्तिनुंक
रेहुंध्यांन ॥ तेपरायणाछेजेनुंतांन
॥२४॥ हरीभक्तिविन्याकोयकाज
॥ नथिरवोतारवाछेदयाज ॥ नि
त्यनारायणनैभजेछे ॥ अन्यवास
नासर्वेतजेछे ॥२५॥ एवांजहरी
जनजेसंत ॥ सत्पुरुषकेवायें-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. मडुंत ॥ राहख्यादिष्ठुनगुराजेह॥
१९३ ह्रोयसाचासंतमांइतेह ॥ ३६ ॥
एवासद्गुरोजेसंपन्न ॥ तेनेंकेयेंस
चासंतजंन ॥ एवासाचासंतह्रोये
तीयां ॥ ह्रोयपरगटश्रीहरीजीयां
॥ ३७ ॥ हरिह्रोयेतियांहरीजंन॥
सतसंगनिरितपावंन ॥ कांतोम
लेहरीधरितंन ॥ कांतोमलेतेनें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मल्याजंन ॥ ३८ ॥ सतसंगराउभय
कैथे ॥ तेद्विन्याकल्याणनलैये ॥
कइरितरासतसंगतणी ॥ अथा
रथजातिनथिभणि ॥ ३९ ॥ संतस
हानिरभेनविंत ॥ जेनैंप्रगटप्र
भुश्वंभित ॥ साक्षातहरीनास्थ
मांथे ॥ श्याम्बचलपरवतप्राये
॥ ४० ॥ हरिव्यमजमांहरेफरे ॥

For Private And Personal Use Only

प्र॰ १८४ कोटिजीवनां कल्याण करे ॥ कृश्म
चरणमां मांन्युं चित ॥ विजेरहि
नहिंजे निश्चित ॥ ४१ ॥ ग्रामरूरव
मांरियासमाई ॥ नेणेंमगनघणुं
मनमांइ ॥ अनुभवे आमलमां बो
ले ॥ जांणे पंड ब्रह्माउ चणनो ले
॥ ४२ ॥ रूरवसंसारि जेजे केवा
दे ॥ तेनेंरूपनेपणनचाये ॥ नरनिरजर

नां स्करवजेछे ॥ इत्याञ्जननां स्करवनें
नइछे ॥ ५२॥ एकराधिकापतिश्रीकृ
ष्ण ॥ तेनेंपांघिनेंरीयाछेवष्ण ॥ एवा
सांतस्करवीछेसरे मलेजेनेंतेनांकाळ
सरे॥ ५४॥ एहसतसंगश्रुणोभाई ते
होयेजुगोजुगमांई॥ एहमलेरहेअ
मवास॥ पाछोआवेनहिगर्भवास ५५
॥ मलेएहवीसमागमजारे॥ जीवनि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रनेधायहछेतारे॥ स्करिवियावासंतस
मागम॥ निश्चेकहेछेएमनिगम॥४
६॥एवाहोयेसाचाजियांसंत॥ तियां
होयेपोतेंभगवंत॥ तेहविन्यानोये
एविरित॥सर्वेलोकथकिजेपुंनित
॥४७॥रामसमकिसमागमकरीयें॥
तोजनममरणथिंतरीयें॥ मरेमाथे
थिजमनोमार॥ आवेसरवेदुरव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नोपार ॥ ४८ ॥ एहविन्यानथिजोउपा
ये ॥ जेणेजन्ममरणदुखजाये ॥ सा
रमांहिवातएहेसार ॥ तेतोकेदेख
ाडिकइवार ॥ ४९ ॥ कहेनिकुजानं
दणमसत्य ॥ कइसतसंगनिविगत्य
॥ सखिथावाजीवनेंएगांम ॥ तेहवि
न्यानथिविसरांम ॥ ५० ॥ कडवां ॥ २८
॥ पूर्वछांयो ॥ कुसंगनेंसतसंग

For Private And Personal Use Only

य. नुं॥कयुंरुडीरीत्यंकरीरुप॥सरवे
२०१ जनहवेसांभलो॥कडुंरावालभ्रनुं
प॥१॥जेछुंराीआजीवनें॥उघडेसं
तरनिद्धांरव्य॥सतसंगसमझिक
रे॥तजेकुसंगकरवाधांरव्य॥२॥जे
मसर्वेसंततणि॥राकरेणीनेएक
रिल॥तेंमहरीनिहांयेनहि॥कडुं
तेहछंराोदउचित॥३॥जिवनाक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ल्या णकारणे ॥ धरेजुजविजाल्यमां
तंन ॥ जियांजेवुंकांनपडे ॥ तियां
तेवाथायेभगवंन ॥ चोपाई ॥ हवे
सांभलोसहुस्कजांणरे ॥ कहुंबातशा
स्त्रपरमांणरे ॥ जेथिवभुपणुंथिछ
येरे ॥ प्रभुप्रगटमांसंसेनथायरे ॥
५॥ दशचोविशत्र्प्रादिअनंतरे ॥
धरेतंनउधारवासंतरे ॥ मछकछ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नेंवाराहनांमरे ॥ नृसिंहवामनफ
र्शुरांमरे ॥६॥ रामकृष्णबुद्धनेंकल
किरे ॥ राहच्यादिजेतनअलोकिरे
॥ मछकछवारिमांविचस्यारे वारा
हनृसिंहवनमांफस्यारे ॥७॥ वाम
नफर्शुरांमकडुंवर्णिरे ॥ रांमकृष्ण
निअलोकिककर्णिरे ॥ बुद्धछूटवो
धनादातारदे ॥ कलकिमो —

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उथापिरे ॥ द्विजराजवलिवेशधा
रिरे ॥ जेनेकयेवर्तैवर्गाचारिरे ॥
२०॥ एमांआविरह्छेअधर्मरे ॥ ते
ह्रुरावेसोनेंकुकर्मरे ॥ संतभक्त
तपस्विनेंत्यागीरे ॥ पिंडेरांकऋषि
नेंअभागिरे ॥ २१॥ सत्यशास्त्रव
णोनकुंणोरे ॥ खोटांशास्त्रवांचेवेश्री
खुंणोरे ॥ जेमांमद्यमांसविनिचाररे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तु- १९७

जातिविराजनेंअनाचाररे॥१२॥
एवांश्राश्रसउनेंअुंणावेरे॥थापि
नेंतेनिवृतिनआवेरे॥पछेंमनने
गमतेवर्त्तेरे॥ व्हियेनहिंअष्ठ ज-
आचर्त्रेरे॥१३॥ बांधिमहापुनुयें
म्रजादरे॥ तेनें भांगेक्रकर्मिकआ
दरे॥ तेनेंदेखिनसकेदयाजरे॥अ
वेएनेअर्थेतनकाजरे॥१४॥धर्मर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्हा करवानें काजरे ॥ जुगो जुगवग
रे महाराजरे ॥ तेमां हरीजननां दुःख
हरे रे ॥ जे तुं धरे ने वं तनधरे रे ॥ १५ ॥
तान पर्यण सर्वेनुं णकरे ॥ कपुं वि
चारि करी निवेकरे ॥ जेम साधु साधु
तायें अति रे ॥ ते मक्ष्णकत्यांण मू
रति रे ॥ १६ ॥ पणाराधि नहीये अव
नरे ॥ हेरा कल्यांण मूर्त्तिमहाराज रे

For Private And Personal Use Only

य॰ १८४

जोनें कांमभावें भजीगोपीरे॥कुल
वेदमर्यादानेंलोपिरे॥१७॥भयेंभ
जीयाकंसराजुपाजरे॥क्रोधभावेंभ
ज्याशिशुपालरे॥स्नेहेवसुदेवनें
देवकिरे॥दुष्टभावेंकरीभजिवकि
रे॥१८॥सखाभावेपांडवपरमांणरे
॥दासभावेउद्धवसुजांणरे॥एह
आदिसुरवीथियांवडरे॥व्रगरप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नुनें परशिसतुरे ॥१९॥ मांनोन फ
रेणहणधांणरे ॥ प्रनुमस्येकोटिक
स्यांणरे ॥ वलिअजितणवुंश्चामंन
रे ॥ तेनेंजीतवेणभगवंनरे ॥ २०॥
णहणधांणोजेवाओलखिरे ॥ पण
क्रियातोनोयेसरखिरे ॥ णहमर्म
मेंकयोअनुंपरे ॥ सत्यणमछेणह
नुंस्वरुपरे ॥ २१॥ कृपासिंधुजेकृल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णीरे नेतोअवतारनाअवतारीरे जेजेअव
पामेंकथीरे नेतोसर्वेश्रीकृष्णमांथेथिरे
तेनुंछे श्रीकृष्णकारणरे॥भवभयहारिन
रणरेआपरक्षायेशरणरेमहाराजरे निज
ननिरखानेंकाजरे २३ जेयेंकरवुंहोयेजेनुं
वंर तेनतेवुंधरेघनशामरे पणसउनुंक
कृष्णरेतेनुंदुर्लभसर्वनेदुःखरे २४ तेते
भुश्रीहरीदेवरे तेनोजाणपोछेविरले

For Private And Personal Use Only

भे वरे जे कोये मनवां गीने अगमरे तेनी
थियाछे सहुने स्फगमरे २५ करवाको रिजिवनां
कल्यांगरे॥ आनआपे पगरअमांणरे देवाद
र्शपरसअभेदांनरे दस्याअरलकभगवानरे
२६ तेनेआविमलेजंनजेहरे जमदंउथिमुक
यनेहरे रलेमरवेशंकरतारेंरे मलेसंतके
श्रीहरीजारेरे॥२७॥ स्फरवकारि दुःखहा
रिहोयेरे॥ स्राचासंत केश्रीकृष्णसोयेरे

प.
२०१

जे नें करउं छुं श्री कृष्ण मे रे ॥ तेजश्री
हरी समकीत मैं रे ॥ २८ ॥ एह सर्व सु
ख नुं छे धांमरे ॥ फरवदाइ श्री घनश्या
मरे ॥ जंनइ छे फरवी थावा जेह रे ॥
२९ ॥ तेह विन्य नथि फरव थावा रे
॥ जन्म मरण महादुःरव जावा रे ॥
कां ता ने व लु कां ते ना जं न रे ॥ सुखि
या वा गंम मा नो मं न रे ॥ ३० ॥ नथि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राह्विन्याविजोउपायेरे ॥ सत्यमां
निलेजोमननमांयेरे ॥ जेह समेजे
तुंह्येयेराज सेवेत्तेह्समेसरेतेथि
काजरे ॥३१॥ मारेत्र्यासमेएह्भ
गवानरे ॥ निश्चेमांनिलेजोसउज
नरे॥ते मल्याछेजेनेमहाराजरे
॥ तेनांसस्यांछेसर्वेकाजरे॥ ३२
॥ नथिरियुंतेनेंकांयेकरवुंरे ॥ज

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प॰ न्ममरणभवफेराफरवुंरे ॥छेलो
२०२ जन्महेआजांणिजेजोरे॥रामजां
णिआनंदमांरेजोरे॥२३॥जां रें
आवशेआतन अंतरे॥तेनुंसङ्क
जांणोछोवरतंतरे॥ निश्चेआवे
छेतेडवानाथरे॥ निजसंतसखा
जइसाथरे॥२४॥अश्वरथवेहेल्य
वेमांनरे॥गजगरुडगाडीयुंनेदां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरे॥ आवेएकवैत्तरण्यदंनआगये
रे॥ देहदरशननेदुखमांगेरे॥२५
॥ तेनेंआविकहेएमनाथरे॥ तुंनें
तेडीजाऊंअमसाथरे॥ याजेसा
ब कइसउनेंरे॥ केजेआव्याछै
तेडवामुनेंरे॥२६॥ करजेबायसो
विसवासजाविरे॥ तेडीजाऊंतेस
मेआमेंआविरे॥ नइंपडेतेमांफेर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. कांइरे ॥ निरभेरेजेहुंमनमांइरे ॥
२०३ ३७॥ एमञ्जागेंथिकहेअविनाशरे
॥ तेरोमनमगनरहेदासरे॥ तेह
समेतेडवानेआवेरे॥ संगेंसाज
अलौकिकलावेरे॥ ३८॥ सर्वेस्त
खमयतेसमाजरे॥ एमआवेतेडवा
महाराजरे ॥वलीतेवीन्याविजिह्वेरित
रे॥सकुसांभलिलेजोदइचितरे॥३९जारे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्यागवुंहोयेतननेंरे ॥ तारमोत्येंज
णायेजननेंरे ॥ पछेबिजाजननेंर
मकहेरे ॥ मारोदेहहवेनहिरहेरे॥
४० ॥ आजथकिपांचदशदंनरे ॥
विशतिशमांत्यागीतातंनरे ॥ जेनें
आववुंहोयेमारेसंगेरे ॥ तेनेंतेडी
जाउंछुंउमंगेरे ॥ ४१॥ करवुंहोये
जोसाबत्यकेनेंरे ॥ हरीधांममांपो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाडुं तेनैंरे ॥ जेथा ममां सदायेछेसु
खरे ॥ नथिकोयेवातनुंजीयांदुःख
रे ॥ ४२ ॥ तेथां मगीजोककेवाय
रे ॥ जेनें मोटामोटा मवेंचायेरे ॥
तेह मध्येकरीरहोवासरे ॥ जीयांका
लमायानोनहिंत्रासरे ॥ ४३ ॥ एविहे
मत्तसहितहरिजनरे ॥ एमकइनें
तानेछेतंनरे ॥ एविरितसततसंगमां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इंरे ॥ तेहविन्याविजेनथिकांयरे ॥
४४ ॥ एहमोटाप्रतापनेंमांनोरे ॥ न
थिएप्रतापकांइछांनोरे ॥ सर्वेथांम
तणाजेहधांमिरे ॥ तेआव्याछे सह
जानंदस्वामिरे ॥ ४५ ॥ आविसकोवे
सारोनवलरे ॥ अतिअनोपमजेअ
वलरे ॥ सर्वेजीवतणासुखकाजेंरे
रुडीरितवलाविमहाराजेरे ॥ ४६ छ्गणिदूरी
जनरेजोमगनरे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ मनेंमांनिश्चेजो धंन्यधंन्यरे॥कयां
जमपुरीनांजेदुखरे॥तेनाभोगवना
राविमुखरे॥४७॥जेरोगंब्रगटथनुनें
त्यागिरे॥ त्रिजिवातेंवलगाभ्र
भागिरे॥तेतोजमपुरीमांइजाशेरे
॥ तियांमनगमतिमारखाशेरे॥
४८॥ कहिविस्तारिसरवेवातरे
॥स्करवदुखकयांसाख्यातरे॥नथि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवाकेइनेंकांइराख्युंरे ॥ भलिरित्येए
सर्वेभांख्युरे॥ ४९॥ जेवुंकयुंतुं
महाराजें मुंनेंरे ॥ तेवुंकेंसमका
व्युंसडनेंरे॥ एहमोरोथयोउपगा
ररे॥ जाणितरह्योसौनरनारुरे ॥
५०॥ पापिविशेकरतातेपापरे ॥
शुंतिग्राग्रंथश्रवणेंग्रापरे॥ ५१॥
मारेरुडुंथयुं ॥ जांणोजनरे॥

For Private And Personal Use Only

यम
२०९

ङ्गुं णिसउथाशेपावंनरे ॥ ५१ ॥
कथुंसर्वेसोचविसौनेंरे ॥ जेतुंह
रियेउपजाव्युंमुनेंरे ॥ आजेजम
दंडग्रंथगाशेरे ॥ आणिजमदंड
थिमुकाशेरे ॥ ५२ ॥ देशेसांभलि
विप्रनेंदांनरे ॥ अन्नधन्नवस्त्रा
दिसमानरे ॥ तेतोस्करविया-
शेनरनास्यरे ॥ वलिशेजेतरशेसंसारेपुर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहिस्करवद्रुव निमें विधिरे ॥ जेवि
मंत्राराजेआगम्या जेधिरे ॥ कयुंमेंतो
तिगरमांतेरे ॥ जथार्थतोमहावत्रु
जांणीरे ॥ ५४ ॥ ओछुअधिकुंकहोय
कांइरे ॥ तेतीनाक्रुंदोयेजांएपा मां
इरे ॥ कहेनिकुजानंदविचारिरे ॥
सउजंनजेजोहियेधारि ॥ ५५ ॥ क
इसां ॥ १५ ॥ पूर्वछांयो ॥ ज्ञुजविशितें

For Private And Personal Use Only

च० जीवनें ॥ कयांजमपुरीनांदुख ॥
२९० हरिजनमगनरेजो ॥ एतोमोगव
शोविमुख ॥ २॥ प्रभुविमुखप्रां
णियो ॥ जोकरेकोरनउपाय ॥
दुखमाथेथिमटेनहि ॥ जेरूरजं
मपुरमांये ॥ २॥ मुजीदत्ताभग-
वांनमी ॥ प्रनेन्निधिविजिवार
॥ तेमांजेरजुंचोपेचालशे ॥ तेरजी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खोटनहिखाद ॥३॥ समर्थना
शरणविना ॥ कुशलक्यांथकि
ये ॥ आपबलेंनब्यउगरे॥जेमकिं
धुतरवोसोयें॥४॥जनममरण
जीवनें॥दुखनोनसोदरीयाव ॥वै
रिपणेजयवउतपति॥उपजेसेदेज
स्वभाव॥५॥ जन्ममरणज्यांलगी
॥ त्यांलगीजमनुंजोर ॥ जमञ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेतियांजांणजो ॥ कयादुखजेके
ऊमोरहा ॥ ६ ॥ जेनेमाथेछेमरवुं ॥
तोयेनडरवुंनिरधार ॥ तेहजमुर-
ख्यमंदमति ॥ अतिगाफलकैयें
गमार ॥ ७ ॥ अंधपणुश्रीयाणोधयो
॥ अंधपणुधयोचतुर ॥ ज्ञायासम
जुवैअधयुं ॥ जोहरीनराख्याउर ॥
८ ॥ प्रभुविमुखनरप्राक्रमें ॥ जो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होयेंजगजांणीत ॥ अनेकगुणने
आगरे ॥ पणजमपुरजावारित ॥
८ ॥ जमआवेजेनेतेडवा ॥ कडुंते
नातननिरित ॥ अवेतमरेअसाध्य
मां ॥ जेनेप्रभुसाथेंनहिप्रीत ॥ १०
चोपाई ॥ जेनेंआवेतेवाजमराण
रे ॥ तेनांओजरवावुंढूरएंधांणरे ॥
जमजोरेकादेएनोप्रांणीरे ॥ सवें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाडिम्ब्र नाडिनितांणिरे ॥११॥ तारेंस
जउंघायेशरीररे ॥लोदलागसरखुं
ग्रविररे ॥जेमनवलेमुकुंलकउ
रे ॥रामत्र्यंगथायछेम्बकडरे॥१२॥
तेतोजमदूतजोरेकरीरे ॥लियेपा
पितणांझांणहरी रे ॥पछेहाथपग
जेमहोयेरे ॥वाल्यावलेनहिवलि
सोयरे॥१३॥ग्रांरलमुखफाटुंरहिजायेरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाछुबीउतांतेनविउायेरे॥नारितण
इमरवेचुटेरे॥गुदाशिष्कुंतणावंधछु
टेरे॥२४॥थायेमळमूत्रनेमगनरे
॥तेणेंखरउअेवगडेतंनरे॥हायवोये
करतोतेमरेरे॥थइव्याकुळवळरता
करेरे॥२५॥स्कतदारामारांश्बंकरशो
रे॥मुजविन्यादुखियइमरचोरे॥ए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. मध्याजपंपाजमांमरे रे॥जेनांज
२०७ मजोरेप्राणहरेरे॥१६॥आवेजमते
उवानेंजेनेंरे॥थायजेमकयुंतेमते
नेंरे॥वलिहोयेकोयेवासनावांनरे
॥नावेजमनेह्राथ्यनेद्रांनरे॥१७॥त
त्नेनुतवेततनधरेरे॥तेपणनर्कथी
नरस्कसरेरे॥नदिकुवावाव्यतलावें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे॥ तियांजलपिवानेंजोजावेरे॥१८
न दिये पिवावरूंण निचोकिरे॥ मरे-
प्यासेंराख्याघाटरोकिरे॥ पछेंअग्र
ह जलनेंगोतेरे॥ तेह् विन्यानपिवाये
भुतेंरे॥१९॥ पियेगुरानाधोयानुंपा
णिरे॥ अतिसयेंअग्रहणजांणिरे॥
कांतोजीणनेंगधोयुंतोयेंरे॥ भुतवे
तनेंपिवानुंसोयेरे॥२०॥ नर्कथकि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरसंछेजेमांरे॥जांणीजमसुकिदि
येतेमांरे॥रामहरीविमुंखनेंदुखरे॥
जियांजायेतियांनहिसुखरे॥२१॥ए
मसुतप्रेतनरनागरे॥बहुविमुख-
नांसुडांभाग्यरे॥कांतोअतिपापित
नपांमिरे॥करेपापराखेनहिखांमि
रे॥२२॥भाग्युंनीचकसाइकजाउरे॥
पाराधिफांसियामहिमाररे॥महाम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छेतु पापनुं मूलरे ॥ मारे जिवको नि
त्राश्च तुलरे ॥२३॥ तेतो मरीजम पुरजा
ये रे ॥ पछें सदा रहे नर्कमां ये रे ॥ कोये
काळें न निसरे बाररे ॥ जेणे कस्यां छे
पापञ्च पार रे ॥२४॥ श्रावेञ्च माणेम
नुंष्य नो वारो रे ॥ नावे जीवतो गर्भ थि-
बारो रे ॥ कांतो गळिजाये गर्भमां ये रे
॥ कांतो संकरमां श्रविजाये रे ॥२५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कांतोकाटेओरथिकापिरे॥नावेगभी दा
थिजिवतोपापिरे॥एमजन्मोजनम
वेस्येवेस्येरे॥खुवेमनुंष्यआपुषएह
पेस्येंरे॥२६॥पणमनुष्यदेहनुंजेरुक
खरे॥पांमेनहिंषभुनाविमुखरे॥ए
विअतिअधर्मिनिरित्यरे॥कडूंवि
जिष्णुणोदउचितरे॥२७॥नांनाभोराहो
येनांमधारिरे॥जेनिनवखंडेनांमनाभारि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरख्याजगेंहोयेजांगितरे ॥पण-
सर्वेतणीएकरीतरे ॥२८॥ विद्यागु
णपेखशाकमरे ॥नोयेविजोकोये
एहसंमरे॥ सर्वेवातनुंकइ देखाडे
रे॥ पणजमख्यागेएकपाडेरे ॥२७
राम्सांभल्युंशास्त्रसगलेंरे॥एवे
गुणेजमव्यासनटलेरे॥ हरीविन्या
स्न्युंनत रेरे ॥साचिवातमोनतो

For Private And Personal Use Only

प० सरे रे ॥३०॥ कोयेपदेसर्वेपुरांणरे॥
२१३ कावेसर्वेलोकमांझजांणरे॥करीवा
तेंडोजावेब्रह्मंडरे॥पणदलेनदिंजा
मदंडरे॥३१॥ कोयेकरेजगननेजाग
रे॥आपेसर्वेअमरनेंभागरे॥होंमंन
रपद्मकरीखंडरे॥पणदलेनदिंजम
दंडरे॥३२॥ कोयेपर्वतपरथिपडेरे
ज्यारेंरावेवेगेंमनचडेरे॥मलेसून

वितराज्यरंडुरे॥पणरलेनहिजमरं
डुरे॥२३॥कोयेफरेतिरथसगलेरे॥
रहेनित्यनवेवलिस्यलेंरे॥जइजल
मांपखालेपंडुरे॥पणरलेनहिजम
रंडुरे॥२४॥कोयेकरेव्रतउपवासरे॥
जायेउतरेंथइउदासरे॥जइगलेहे
मालामांहंउरे॥पणरलेनहिंजमरं
डुरे॥२५॥कोयेचौकोरेअगनिवालि

प० रे॥बेठोवच्चमां आसन वालिरे॥मा
२१४ थे तपावे जो मार्त्तंड रे॥पण दजे न हिं
जमदंड रे॥२६॥कोथे अष्टांगयोग नें
साधेरे॥ण कआत्मारूप आराधेरे॥रो
केप्राण अपान प्रचंड रे॥पणदजे न
हिं जमदंड रे॥२७॥को थे मरोवे दांत
अनुं परे॥जांणे जीवे ब्रमाया नुं रूप
रे॥जेहेसां मोरोपे जइ फंड रे॥पणदजे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहिजमदंडुरे॥३८॥कोयेवदेहेव्याक
र्णवां णरे॥श्रुंणिसङ्करेपरमांणरे॥बो
लेमुखथिस्तुठ्य्मखंडरे॥पणतेनहि
जमदंडरे॥३९॥कोयेकविस्य्रकाम्जो
डेरे॥कोयेकरेज्ञानगपोडेरे॥जाएंभे
दिजारोष्माबस्नं डुरे॥पणतेनहिज
मदंडरे॥४०॥कोयेमउपियरउदासिरे
॥लियेकरवतजईकाशीरे॥मरैजलैं

For Private And Personal Use Only

प. बुद्धि मरी अंडरे॥ प्राणी रखे न हिंसा मदंडरे
२१५. ४२॥ कोये मति पतिके ईपायेरे॥ कोये
जीवतां मांमांस मायेरे॥ तम प्राणपे करे खं
ण छूंडरे॥ प्राणी रखे न हिंसा मदंडरे॥४३॥
कोये सागी थई वसे वंनरे॥ फरे नग्न नखावाये अं
नरे॥ सहे सित उष्ण पिड़ा पंडरे॥ प्राणी रखे न
हिंसा मदंडरे॥४४॥ कोये साय करे सिद्धि अ
ष्टरे॥ पांमे निधि करि बहु कष्टरे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञायेरछेनेलोकमांउंउरे।।पणरलेनही
जमदंउरे।।४४।।कोयेजंत्रमंत्रनेंवखां
णोरे।।वउमारकूचेटकजांणोरे।।जांणो
वउपरपंचपाखंउरे।।पणटलेनहिंजम
दंउरे।।४५।।कोयेच्छापैसरवस्यदेंन
रे।।वांधेकिरतिकर्णसमांनरे।।पडेरव
वरूसरवेपंउरे।। पणरलेनहिंजम
दंउरे।।४६।।कोयेरूरापुरासंग्रामेंरे।।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प०
२१६

वडावेरिथिह्वास्नपांमेंरे ॥ करे
शत्रुसंन्यानेंविस्तंडरे ॥ पणाटलेन
हिजमदंडरे ॥ ४७ ॥ स्वर्गमृत्युपाता
ळमांजसरे ॥ न्यापिरियोसकुशिस
रसरे ॥ होयेनरनारिपाखंडरे ॥ पण
टलेनहिजमहंडरे ॥ ४८ ॥ राविरिस्य
किपांजगीकडंरे ॥ केतांकेतांतेपार
नजडंरे ॥ अंत्येपडेतेनर्कनेकुंडरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पणारखेनहिंजमदंडरे॥४९॥ एम-
केछेसरवेपुराणरे॥ऋंतिसमकि
तेजोऊजाणरे॥नथिमुरवनिवात
मेंजरविरे॥नोयेकल्याणप्रभुजिप
रिवेरे॥५०॥जोज्ञापवलेंसिंधुतराये
रे॥नावसोधवालोहिदजायेरे॥होय
पीतेपारथायेंसुरिवरे॥नोयेकल्या
णप्रभुजीपरिवरे॥५१॥जेमञ्रर्कवि

For Private And Personal Use Only

प॰ न्याअंधारुंरे॥ करेराजवातपापह-
२१७ ज्जाळरे॥ उलेचतांतमथायेदुखिरे॥
नोयेकल्यांणप्रभुजीपरखिरे॥५२॥
सरसरितासागरसोथेरे॥ घनमिथ्या
स्कक्यांसउकोथेरे॥ रहणधांणजेतुं
ओळखिरे॥ नोयेकल्याणप्रभुजिप
रखिरे॥५३॥ एमसोवातनिवातएक
रे॥ समकुहोयेतेसमझोविवेकरे॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नमतेंनथावुं मनमुखिरे ॥ जोयेक
ल्याणप्रभुजिपखिरे ॥ ५४ ॥ पमरू
उनांमेछेआयंथरे ॥ तेमांचमेचर्णछे
अर्थरे ॥ लेवुंश्रगटप्रभुनुं शर्णरे ॥ तारें
टलेजनमनेंमर्णरे ॥ ५५ ॥ जन्ममर्णती
यांजमजांणोरे ॥ जमथ्यावेरदुखपर
मांणोरे ॥ जांणोदुखटलिसुखथावुंरे
तारेश्रगटप्रभुपासेंजावुंरे ॥ ५६ ॥ कथे

For Private And Personal Use Only

प॰
२१८

छेलोमेंराहउपायेरे॥ होयेहरीजुगोजु
गमांयेरे॥तेनेमल्येरहेमहादुखरे॥
थायेज्ञांतिपांमेजीवसुखरे॥५
७॥आछेंअंत्येंमळ्येंराहवातरे॥सत्र
समकित्यीसाक्षातरे॥प्रभुमल्याविन्या
छेपांचलांरे॥तजोतेनेंजांणिनेंराप
जांरे॥५८॥करोप्रगटप्रभुसाथेंप्रीतिरे
तोजाओजगमांइजितिरे नथिकरणवातोकांइरे

सउ समझो ए विस्मरवदाइ रें ॥ ५९॥
साचा खोटा मांस र खोअ मरे ॥ चित्
नथि जांणतां ए ममंरे ॥ जेम रत्न मु-
वाड़े पारगें ॥ चाल्ने सांऊथि सवारनें
॥ ६० ॥ जेम जेम चोंपें स्कवळाये रे
॥ तेम तेम ह्नुरुं थातुं जाग्ये रे ॥ तेम य
नुजीनें पुद्म दइ रे ॥ जिवकरेंछे भग
तिकइरे ॥ ६१ ॥ तेतो नथि आवतिजोअ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थिरे ॥ ताजोजननमखुवेंछे वर्थिरे ॥ वश
समक्ये वेछेदुखरे ॥ जेकोथे ह्रं थ
किछे विमुखरे ॥ ६३ ॥ मरिविमुंखस
नमुखथाओरे ॥ जाणिजो इकांजम
पुरजाओरे ॥ पोतेंपोतानुंकरवुंकाज
रे ॥ समरिश्रीघनशांममहाराजरोई
२ ॥ अवजरकआशरोणहरे ॥
राइवातमांनथिसंदेहरे ॥ तेह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विन्यानोये भवपाररे ॥ कहेनिष्कुला
नंदनिरधाररे ॥६४॥ कडवां॥२०॥
पदरागधोल॥ पाम्यांपाम्यांरे भवज
लपार॥श्रीहरीसंतमलिरे॥ वाम्यां
वाम्यांरे दुखअपार॥श्री॥१॥ नाम्यां
नाम्यांरे शिषप्रभुपाये॥श्री॥ जाम्यां
जाम्यांरे सुखउरमाये॥श्री॥२॥ स
र्यांसर्यांरे सरवेकाज॥श्री॥ भर्यांभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध० स्यांरेअमरेआज॥श्री०॥३॥ठस्यांठस्यां
२२० रेपामिकरवठांम॥श्री०॥४॥भाग्यो
भाग्योरेभवनोभय॥श्री०॥जागोजा
गोरेथइजीत जय॥श्री०॥५॥त्यागोत्या
गोरेमनचिंतांग्य॥श्री०॥मागोमागो
रेपदनिरवांग॥श्री०॥६॥लिधोलि
धोरेपुरणलाव॥श्री०॥दिधोदिधोरे
जमशिरपाव॥श्री०॥७॥किधोकिधो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे जनमस्कफल ॥ श्री० ॥ पिधोपिधो रे
रमच्चमल ॥ श्री० ॥ ८ ॥ घइघइ रे जग
मांयेजीत ॥ श्री० ॥ गइगइ रे अन्यनिश्च
लित ॥ श्री० ॥ ९ ॥ रइरइ रे लारेवं शीलाज
॥ श्री० ॥ सइसइ रे वातकडुं आज ॥ श्री ॥
१० ॥ आओआओ रे आजआनंद ॥
श्री० ॥ फाओफाओ रे फेरोफारो फंद ॥
श्री० ११ ॥ नाओनाओ रे साचोसतसंग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री०॥नाव्यो नाव्योरे अभावथ्यंग॥श्री०१२
हस्योहस्योरे सरवे संताप॥श्री०॥तस्यो
तस्योरे भवजलपार॥श्री०१३॥कस्योक
स्योरे सर्वेनेत्याग॥श्री०॥रस्योरस्योरेउ
रेसर्वेराग॥श्री०॥ १४॥ जोयुजोयुरेज
गमां जरूर॥श्री०॥ रवोयुरवोयुं
रे दुरवडुं दुर॥श्री॥ १५॥मोयुंमोयुंरेमस
जोइनाथ॥श्री०पोयुंपोयुंरेचितएहसाथ श्री०१६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिधुं दिधुं रे दरशन दांन॥श्री॥ किधुं
किधुं रे अमरत्यपांन॥श्री॥१७॥ सि
धुं सिधुं रे सफरव अपार॥श्री॥ सिधुं सि
धुं रे कारज अवार॥श्री॥१८॥ लागो ला
गो रे रस संग रंग॥श्री॥ भागो भागो रे अं
न्यथि उमंग॥श्री॥१९॥ वागो वागो रे
जीतनो डंक॥श्री॥ त्यागो त्यागो रे जु
ठि जग संक॥श्री॥२०॥ लिधि लिधि रे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य॰
२२२
त्वांमळेसार ॥श्री॰ ॥ किधिरेवाला
मारीवार ॥श्री॰ ॥ २१ ॥ दिधिदिधि
रैमाजन्म्र नुंप ॥श्री॰ ॥ सिधिसिधि
रेवातस्करवरूप ॥श्री॰ २२ ॥ मळि
मळिरेमहास्करवमोज ॥श्री॰ ॥ दळि
दळिरेजमदुतफोज ॥श्री॰ २३ ॥ ट
ळिटळिरेसरवेत्रास ॥श्री॰ ॥ वळि
वळिरेग्रन्यविजिग्रास ॥श्री॰ २४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वलिवलि रे रंगडा निरेख्य ॥ श्री०॥
फलि फलि रे स्फफल वेख्य॥श्री०
२५॥ टलि टलि रे टलि गयो दाज
॥श्री०॥ पलि पलि रे गीयां पंपाल
॥श्री०॥२६॥ टल्यो टल्यो रे जम
नो त्रास ॥श्री०॥ पल्यो पल्यो रे प
रो गर्भवास ॥ श्री०॥२७॥ म
ल्यां मल्यो रे साचो सत संग ॥श्री०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्त्योवर्त्योरे द नरयोरंग ॥ श्री॰ २९ ॥ छुवोछुवोरेजयजयकार ॥ श्रीहरी॰ ॥ ज्ञुवोज्ञुवोरेस्क स्वभ्रघार ॥ श्रीहरि॰ ॥ २९ ॥ स्कवोस्तुवोरेस्करवनिसजाय ॥ श्री हरिसंत॰ ॥ दुवोदुवोरेकांमदुगाय ॥ श्रीहरीसंत॰ ॥ ३० ॥ आज आजरेवरत्योआनंद ॥ श्रीहरी॰ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काजकाजरेसस्यांफारोफंद ॥ ॥
श्रीहरीसंत० ॥ ३१ ॥ लाजलाज
रेरइमारिव्याज ॥ श्रीहरीसंत० ॥
नाजनाजरेनकरुंव्यकाज ॥ श्री
हरीसंत० ॥ ३२ ॥ रहेरहेरेस्क
रवअपार ॥ श्रीहरीसंतम० ॥ व
हेदहेरेकोणभवभार ॥ श्रीहरीसं
तम० ॥ ३३ ॥ सहेसहरकोणद

For Private And Personal Use Only

पं० रछंद ॥श्रीहरीसंतम० ॥ कहेकरे
२२५ रेनिष्कुलानंद ॥ श्रीहरिसंतम० ॥
३५ ॥ सोरठा ॥ आगीयारसोने
आगीयारें ॥ चरणगणीचोकम
कर्‍यां ॥ यमदंडनोविस्तारकथो ॥
एटलामांयकथि ॥१॥ इतिश्रीनि
ष्कुलानंदस्वामिकृतयमदंडक-
थासामाप्त ॥ संवत १९३० ॥ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only